

ਹਾਡ, ਬੋਡੀ ਤੇ ਪਤਨ

(ਦੋਸਰੀ ਉਪਲਿਖਿਆਸ)

ਬੇਦ ਰਾਹੀਂ

147
E
47

ਦੋਸਰੀ ਸੱਸਥਾ ਜਮ੍ਹਾ

हाड़, बेड़ी ते पत्तन

(मालवीय संग्रह)

डिएसीपी ०५ (डोगरी उपन्यास)

२३७ : १८८ अशावड़ ०

१४८०५ ०००३ अशावड़ १८८ ०

१४४ वेद राही लकड़ ०

१४८८०५ शाव : विकल्प ०

प्रकाशक

डोगरी संस्था जम्मू

[१६६६ ई०]

C.
हाड़ बेड़ी पत्तन
(डोगरी उपन्यास)
क्र० श्री वेदराही

- ० प्रकाशन बरा : १६६८
 - ० द्वासंस्करण : १००० कापियां
 - ० मुल्ल : ४ रुपे
 - ० छापने आले : आर. सी. प्रेस जम्मू

प्रकाशक

डोगरी संस्था जम्मू

卷之三

समर्पन
पिता जी गी

दो शब्द

ਥ੍ਰੀ ਵੇਦ ਰਾਹੀਂ ਹੁਨਦੇ ਉਪਨਿਆਸ 'ਹਾਡ, ਬੇਡੀ, ਪਤਨ' ਦਾ ਫੂਆ
ਸੰਸਕਰਣ ਦਿਕਿਖਿਥ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿਧ ਦੇ ਪ੍ਰੇਮਿਯੋਂ ਗੀ ਬੱਡੀ ਖੁਸ਼ੀ
ਹੋਗ। ਏ ਉਪਨਿਆਸ ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਤੁਨੇ ਤ੍ਰੌਂ ਉਪਨਿਆਸੇਂ ਚਾ ਇਕ ਏ
ਜਡੇ ੧੯੫੮ ਦੇ ਕੋਲ ਕੋਲ ਲਖੋਏ ਹੈ ਤੇ ੧੯੬੦-੬੧ ਤੋਡੀ
ਛਪਿਯੈ ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਪਾਠਕ ਤੋਡੀ ਪੁਜੇ। ਜਿਧਾਂ 'ਸ਼ਾਨੋ' ਤੇ
'ਧਾਰਾਂ ਤੇ ਧੂਡਾ' ਉਪਨਿਆਸੇਂ ਚ ਭੁਗਰ ਦੇ ਪਹਾਡੇ ਦਾ ਦੁਖ-ਸੁਖ,
ਪੀਡ-ਵੇਦਨ, ਗਰੀਬੀ, ਪ੍ਰਾਕ੃ਤਕ ਸ਼ਲੈਪਾ ਤੇ ਪਹਾਡੀ ਜੀਵਨਾ ਦਿਧਾਂ
ਕੇਈ ਸਮਾਜੀ-ਸਥਾਸੀ ਸਮਸਥਾਂ ਬੱਡੇ ਮਨ-ਝੂਂ ਦੇ ਫੁਗਾ ਕਨੇ ਚਤਰੋਈ
ਦਿਧਾਂ ਨ, ਇਧਾਂ ਗੈ ਹਾਡ, ਬੇਡੀ, ਪਤਨ' ਦੀ ਕਹਾਨੀ ਬੀ ਸ਼ਹਾਡੇ
ਪਹਾਡੇਂ ਦੇ ਤੁਨੇ ਗ੍ਰਾਂਏ ਕਨੇ ਸਰਬਨਧ ਰਖਦੀ ਏ ਜਿਨ੍ਹੇ ਬਸਨੀਕ
ਨਿਕਕੀ-ਨਿਕਕੀ ਗਲਲੇ ਗੀ ਈਨ ਬਨਾਇਯੈ ਸੱਦਿਧੇਂ ਕਥਾ ਇਕ ਫੂਏ
ਕਨੇ ਲੜਦੇ-ਮਰਦੇ ਆਵਾ ਕਰਦੇ ਨ ਤੇ ਜਡੇ ਨਮੋਂ ਜੁਗਾ ਦੀ ਰਿਸ਼ਮੇਂ ਗੀ
ਬੱਡੀ ਓਪਰੀ-ਓਪਰੀ ਨਜਰੋਂ ਕਨੇ ਦਿਖਦੇ ਨ। ਅਸਲਾ ਚ
ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਏ ਤੈ ਉਪਨਿਆਸ ਸ਼ਹਾਡੇ ਪਹਾਡੀ ਜੀਵਨਾ ਦਿਧਾਂ ਤੈ
ਜਾਂਕਿਧਾਂ ਨ ਤੇ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿਧ ਚ ਇਨ੍ਦਾ ਇਸ ਲੇਈ ਟਕੋਦਾ ਥਾਰ
ਏ ਜੇ ਇਨ੍ਦੀ ਰਚਨਾ ਤਸ ਬੇਲਲੈ ਹੋਈ ਹੀ ਜਿਸ ਬੇਲਲੈ ਡੋਗਰੀ-ਗਦੀ ਦੀ
ਬੇਲ ਮਸਾਂ ਮਠੋਨ ਗੈ ਲਗੀ ਹੀ। ਅਜਜ ਡੋਗਰੀ-ਗਦੀ ਦੇ ਖੇਤਰਾ
ਚ ਕਾਫੀ ਤਰਕਕੀ ਹੋਆ ਕਰਦੀ ਏ। ਪਰ ਜਿਧਾਂ ਜਿਧਾਂ ਡੋਗਰੀ ਦੇ
ਧੂਨੀਵਸੰਟੀ ਵੇ ਇਸਤੇਹਾਨੋਂ ਕਰੀ ਸ਼ਹਾਡਿਧਾਂ ਜ਼ਰੂਰਤਾਂ ਬਦਾ ਕਰਦਿਧਾਂ ਨ,
ਇਧਾਂ ਇਧਾਂ ਗੈ ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਗਦੀ-ਲੇਖਕਾਂ ਤੁਧਰ ਵੀ ਨਿਤ-ਨਮਿਧਾਂ
ਜਸ਼ਮੇਵਾਰਿਧਾਂ ਪੌਂਦਿਧਾਂ ਜਾ ਕਰ ਦਿਧਾਂ ਨ। ਅਜਜ ਡੋਗਰੀ ਭਾਸ਼ਾ

गी सिरक क्हानियां, नाटक, निवन्ध ते आलोचनात्मक लेख गी नई, नमें उपन्यास वी लोड़चदे न। ए इक चाली दी डोगरी दे गद्यलेखकें गी समें दी चनौती ऐ। ते इस चनौती दा मकावला होरने दे कन्ने कन्ने वेदराही होरे वी करना ऐ। मन्नेआ जे अज्ञकल ओ जम्मू च नई बम्बेर्इ रौह् दे न ते अपना मता लेखन-कार्य हिंदी च करदे न, पर उन्दी मात्री-भाशा मांग करै तां ए कियां होई सकदा ऐ जे वेदराही जनेह जाप्रत लेखक चुप्प-जन साधी लैन।

'हाड़, बेड़ी, पत्तन' दा ए संस्करण छापदे होई 'डोगरी संस्था जम्मू' वेद राही हੁन्दा धन्नवाद करदੀ ए जੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਨਾ ਕੁਸੈ ਰਾਧਲਟੀ ਵੈ ਇਸੀ ਛਾਪੀ ਲੈਨੇ ਦੀ ਇਜਾਜਤ ਦਿੱਤੀ । ਤੇ ਡੋਗਰੀ ਭਾਸ਼ਾ ਤੱਨਦੀ ਏ ਨੇਕੀ ਕਦੇ ਬੀ ਨਹੀਂ ਭੁਲਗ ਜੇ ਔਂਦੇ ਵਰੈ, ਛੇ-ਮਹੀਨੇਂ ਗੀ ਓ ਅਪਨਾ ਇਕ ਨਮਾਂ ਉਪਨਿਆਸ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤ ਗੀ ਦੇਨ ।

—मदन मोहन शर्मा

है। वह भी एक खामोश और मासूमाना अन्दाज से कि क्या पराए क्या अपने सभी आश्चर्य-चकित रह गए। परन्तु सत्य आखिर सत्य है, जो किसी भी साहित्यिक अथवा असाहित्यिक आनंदोलन, गुटबन्दी या ऊपरी प्रशंसा से बहुत ऊपर है, जो देर या सवेर अपने सम्पूर्ण रंग में प्रकट होता ही है, और सामयिक कोलाहल को अपने अधीन कर ही लेता है।

वेद राही डोगरी साहित्यकारों की नई पौध के कथाकारों और नाटककारों की पहली पांत में एक विशिष्ट व अन्यतम स्थान रखता है। आरम्भ में उर्दू तथा हिन्दी को अभियक्ति का साधन बनाया। तत्पश्तात् डोगरी साहित्य के आकाश पर एक आलोचक के रूप में प्रकट हुआ, और “जगदिया जोतां” लिखकर समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा किया। फिर “धारें दे अथर्वं” नाटक और “काले हत्थ” कहानी-संग्रह प्रस्तुत करके डोगरी कहानीकार तथा नाटककार के रूप में सामने आकर अपनी साहित्यिक तथा महानता का लोहा मनवा लिया और डोगरी उपन्यासकारिता के परती-खण्ड में उसका पहला उपन्यास “हाड़, बेड़ी ते पनन” देख कर मुझे विस्मय भी हुआ, और हर्षनुभव भी। मैं पहचानने की कोशिश कर रहा हूँ कि यह वही वेद राही है; डोगरी का एक मासूम मित-भाषी सा लेखक, जो साहित्यिक दौड़ की विभिन्न मंजिलें तय करता अब उपन्यासकार बन गया है। और इतने अल्प समय में ही साहित्य के कई अङ्गों और शैलियों पर हावी हो गया

प्राक कथन

(पहले संस्करण का)

वेद राही डोगरी साहित्यकारों की नई पौध के कथाकारों और नाटककारों की पहली पांत में एक विशिष्ट व अन्यतम स्थान रखता है। आरम्भ में उर्दू तथा हिन्दी को अभियक्ति का साधन बनाया। तत्पश्तात् डोगरी साहित्य के आकाश पर एक आलोचक के रूप में प्रकट हुआ, और “जगदिया जोतां” लिखकर समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा किया। फिर “धारें दे अथर्वं” नाटक और “काले हत्थ” कहानी-संग्रह प्रस्तुत करके डोगरी कहानीकार तथा नाटककार के रूप में सामने आकर अपनी साहित्यिक तथा महानता का लोहा मनवा लिया और डोगरी उपन्यासकारिता के परती-खण्ड में उसका पहला उपन्यास “हाड़, बेड़ी ते पनन” देख कर मुझे विस्मय भी हुआ, और हर्षनुभव भी। मैं पहचानने की कोशिश कर रहा हूँ कि यह वही वेद राही है; डोगरी का एक मासूम मित-भाषी सा लेखक, जो साहित्यिक दौड़ की विभिन्न मंजिलें तय करता अब उपन्यासकार बन गया है। और इतने अल्प समय में ही साहित्य के कई अङ्गों और शैलियों पर हावी हो गया

दिखाई देते हैं, जो हमारे गतिशील कदमों को रोक लेते हैं, और हमें बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर देते हैं। और कई भयानक प्रश्न-चिह्न सामने रख देते हैं जिन के उत्तर होंठों पर होते हैं, सहज में दिए जा सकते हैं, परन्तु वातावरण और परिस्थितियों के भारी ताले मुँह पर लग जाते हैं, और हमें स्तब्ध रह केवल देख कर ही संतोष करना पड़ता है।

कहानी के पात्र जिदगी से लिए गए हैं। जीते-जागते पात्र हैं, जिनकी आवाज हमारी जानी पहचानी हैं। नख-शिख और भाव-भंगिमाएं चिर परिचित। परन्तु जब ये पात्र सामने आते हैं तो एक प्रश्न-चिह्न बनकर। माया और कुन्तो, खैरु, जगतु और अमरु—सब के सब विभिन्न प्रश्न-चिह्न हैं, जिनके ध्यान-पूर्वक अवलोकन से हमारे सामने गांव का एक सशक्त चित्र उजागर होता है। उस नन्हे से गांव का एक विराटाकार समाज उभरता है। दूषित वातावरण से लिथड़ा हुआ, एक कोङ्गी समाज, जिसके लम्बे २ फौलादी हाथ भी हैं, जिसके भीतर बाहर झांकने की इच्छा होती है।

उपन्यास के मुख्य पात्र माया, कुन्तो और खैरु हैं। एक सिद्धान्त, एक सत्य, एक उद्देश्य के तीन उपासक। माया इस तिकोन की आधार-शिला है। इस आधार-शिला पर जो भव्य भवन उठाया गया, उसके निर्माण में कुन्तो के सुकुमार-सुकोमल हाथ काम करते हैं। खैरु इस भवन का प्रहरी है। वह उस पूँजी को बचाए रखना चाहता है, जिस पर अमरु की कुट्टिटि है। माया के चरित्र में जहां डोगरा औरत की विवशता है, कर्तव्य-परायणता है, साध है, तझप है, वहां कुन्तो के

चरित्र में महानता है, अहंता है, कर्तव्य-निष्ठा और त्याग-भावना है। पहाड़ों से टक्कर लेने का साहस है, अपने मान-सम्मान का भाव भी उसके हृदय में है, जिस पर रुद्धियों की अमित छाप है। इस प्रकार कुन्तो में एक डोगरा पहाड़ी औरत का एक अद्वितीय यथार्थवादी प्रतिनिधि चरित्र मिलता है। वह सतत संवर्ष में हंसती-मुस्कराती, अपने लहू की अन्तिम बूँद तक बहाती कर्तव्य-निष्ठ रहती है। वर्तमान समाज उसे जीने नहीं देता और अंतः उसके प्राण लेकर ही छोड़ता है। खैरु उस जाति का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका हमारे गांव में कोई दर्जा ही नहीं, कोई स्थान ही नहीं, जिसके लोग कुछ कर गुजरने की इच्छा करते हुए भी कुछ नहीं कर सकते।

उपन्यास के महत्वपूर्ण पात्र हारे हुए अवश्य लगते हैं, परन्तु जीवित रहने के इच्छुक हैं। विचार और आचरण में भेद सही, परन्तु अभीष्ट एक ही है। उनकी पार्थिव, नैतिक अथवा आध्यात्मिक ऊँचाई में एक प्राकृतिक अनुभूति की छाया स्पष्ट है। और वह है जीने की, जीवित रहने की अनुभूति, जिसके कारण वह विरोधी धरकों की परवाह न करते हुए अपनी लुटी-उजड़ी जिन्दगी से भी प्यार करते हैं। सपनों के सुनहले जाल बुनते हैं, अपनी हारी हुई घायल अनुभूतियों से खेलते हैं, परन्तु समाज के स्वार्थी, घिनौने तत्व उन्हें जीने नहीं देते, और वे हंसते-मुस्कराते मर जाते हैं। स्वयं मृत्यु को अपना कर दूसरे सिसकने वालों को जीवित कर जाते हैं। एक सोया हुआ शाश्वत भाव जगा जाते हैं कि यदि यों न होता तो फिर क्या होता ? यह अनुभूति ही अपने में मनुष्य की एक

एक उच्च अनमोल धरोहर है, जिसे यदि बढ़ने फ़लने का अवसर दिया जाए तो संसार के अप्राकृतिक रोग नष्ट हो जाएं, और यह दुनिया सुख-शांति का घर बन जाए। और मनुष्य उन पवित्र ऊँचाईओं को छू ले जहाँ देवताओं की भी पहुंच नहीं। यही अनुभूति हमें माया, कुन्तो, रण्, खूँखू और छल्लो छल्ली आदि के हृदयों की धड़कनों के समीप ले जाती है, धड़कनों की आवाज का अर्थ हमारे मस्तिष्क में बिठाती है, निष्चेष्ट जिन्दगियों के लिए वेदना सम्वेदना बन जाती है और हम उस समाज से धृणा करने लगते हैं जो हमारे स्वर्ण-सपने और प्रसन्नवदन जीवन हम से छीन लेता है, उन्हें जला डालता है।

उपन्यास पढ़कर वेद राही की निहित प्रतिभा का समुचित परिचय मिलता है। उसने अपने गांवों का जीवन और वहाँ का वातावरण भली-भांति देखा परखा है, और अपनी सूक्ष्म दृष्टि से उन निचली निश्चेष्ट परतों को उधाड़ा है, जिन की तलछट में गंदगी है, स्वार्थ है, विवशता और असफलताएं हैं; जो समाज के परम्परागत बधानों और कुरीतियों की लोह-शृंखलाओं के कारण और भी अधिक धृणित और कुरुप हो चुकी हैं। एक यथार्थवादी साहित्यकार के समान 'राही' ने हमारी समाजी जिन्दगी की बहुत सी परतों का अनावरण किया है, जो हमारी दृष्टि के सामने होते हुए भी ओझल हैं, क्योंकि हम स्वयं इन्हें पनपने का अवसर देते हैं। उपन्यास पढ़ते हुए लेखक के अनुभवों की गहराई, सूक्ष्म निक्षरीण, और सत्यवादिता को मानना ही पड़ता है।

इस उपन्यास में वेद राही ने भाषा और वर्णन की ओर विशेष ध्यान दिया है। भाषा मुहावरेदार और सुगठित है। अभिव्यक्ति में ज़ोर और निखार है। शब्दों में कवित्व और मिठास रची हुई है। वाक्य-विन्यास, नई नई उपमाएं और लाक्षणिक प्रयोग 'राही' की वर्णन-शक्ति के प्रतीक हैं। इस दृष्टि से यह उपन्यास लेखक की गत-कृतियों पर भारी है।

डोगरी भाषा की बनावट, इसके स्वरारोहण-अवरोहण और टाकरी लिपि के स्थान पर मान्य देवनागरी लिपि के प्रकृति-भेद के कारण और साथ ही अन्य कई सीमाओं को सामने रखते हुए उपन्यास लिखने की कोशिश करना प्रशंसनीय ही नहीं, आदरणीय और स्पर्धा-योग्य है। डोगरी साहित्यकार एकत्र होकर एक सजीव साहित्यक आंदोलन के प्रवर्त्तक बने रहे, और इस प्रकार डोगरी के पाठकों का क्षेत्र बढ़ता गया। उसे और विस्तार मिलता रहा तो वेद राही जेसे सदाकांक्षी और सत्यप्रिय साहित्यकार हमेशा जीवित-जाग्रत रहेंगे और साहित्य का कारवां आगे ही आगे अपनी मंजिल की ओर बढ़ता चला जाएगा। अन्यथा एक सजीव साहित्यिक आंदोलन का दुर्भाग्य होगा कि प्रबुद्ध साहित्यकार अपनी मातृ-भाषा को छोड़ कर, अपनी उपजाऊ मिट्टी से नाता तोड़ कर अन्य भाषाओं में लिखने लगे। केवल इस लिए कि अन्य भाषाओं का पाठक-वर्ग विस्तृत है? सच भी है कि साहित्य-कार हमेशा दूसरों के लिए लिखता है। उसकी यही कामना होती है कि उसकी प्रौढ़ अभिव्यजना को अधिकांश जन अपने हृदय में स्थान दें। लोग उसकी चित्रित रूप-रेखाएं पहचानें, समझें, उससे लाभान्वित हों, और उन विचारों की छाया

में अपने समाज, अपनी व्यवस्था की घिनौनी परछाइयां देखें । इस सीमा तक धृणा करें कि विद्रोह पर उतर आएं । जिस भाषा का साहित्य और साहित्यकार कुछ इने-गिने आलोचकों या सीमित मित्र-क्षेत्र तक ही पहुँचता हो, वह किसी प्रकार भी समय के साथ नहीं चल सकता । निःसंदेह डोगरी साहित्यकारों में दिन प्रतिदिन की वृद्धि, जागृति और प्रौढ़ता की प्रतीक है परन्तु वेद का विषय है कि पाठकों की संख्या कुछ लिखने वालों तक ही सीमित है, या कुछेक अन्य मित्रों तक जो समय और विषय के अनुसार प्रशंसा व निंदा के लिए कुछ रटे हुए वाक्य कह देने में अपनी चिरन्तन प्रसिद्धि का रूप देख लेते हैं । किसी जीवित जाति और जीवित भाषा के लिए ऐसी स्थिति का होना बहुत बड़ी ट्रैजिडी है । बहरहाल डोगरी-साहित्यकारों को प्रोत्साहित करना, और उनकी कृतियों को लोगों तक पहुँचाना उन गम्भीर लोगों का निजी या सामूहिक कर्तव्य होना चाहिए जो जाति को सजीव, जागृत और प्रबुद्ध देखने के इच्छुक हैं । साहित्य, एवं संस्कृति के विकास में ही राष्ट्रों के विकास की शक्ति निहित होती है ।

वेद राही को “हाड़ बेड़ी ते पत्तन” जैसे उपन्यास का सूजन करने पर एक साथी के नाते नहीं, एक उपन्यासकार के नाते हार्दिक बधाई देता है । इस आशा के साथ कि वह भविष्य में भी इस लगन और सदाकांक्षा से डोगरी की विभिन्न साहित्य-विद्याओं में अमूल्य प्रयोग और वृद्धि करता रहेगा ।

दिल्सी—१६६१ —ठाकुर पुष्टि

गे है । मता चिर हांआ तां इक बारी माया उसी, कनाड़े चुकिये इत्यों पार लेई गेई ही । पर तदूं तवी च पानी घट हा । अज्ज ते केईं मसातरां ढूँगा पानी ऐ । कन्ने जोर बी हन्ना ऐ जे हाथी बी होऐ तां छल्ल इकैं डोलकै उसी रडाई लेई जान । किन्ना चिर ओ इओं नै खड़ोता रेआ । पानियां च पैर पाने दी आह नईं पेई ।

फी उसी माऊ दियां अक्खीं चेतै आइयां—अत्यरुण् कन्ने डबराई दियां अक्खीं ! फी माऊ दे इसकने दी बुआज उसी सुनचन लगी । ओदी देई दा सेक उसी अपनी देई च बजोन लगा । रण् दियां अक्खीं मटोन लगियां । मारू छल्ले दा रौला थमोई गेआ, ते उसने पैर पानिया च पाई ओडेआ । बल्ले क ग्रंगड़ा होआ होर अगड़ा; ते की सोगे होइयै उसने अक्खियां पुटियां उस बेल्ले जेल्लै औदां पैर तिलकी गेशा हा । छल्ले इकैं डोलके कन्ने उसी जियां तली पर चुक्की लैता । जारै इक अरड़ बज्जी “मां-मां !” पर कुन सुनदा ?

चानचक्क इक कुण्ड अग्गे आई गेआ । छल्ल अग्गे निरुली गे ते रण् कुण्ड आली बक्खी जाई पेआ । दों हृथ मारियं ओ फी उस्से कंडे आई लगा, पर तौले औदे शा ठोआ नेईं । किन्ना गै चिर बसुतं जन पेदा रेआ ।

फी जेल्लै ओ घरै आली बक्खी टुरेआ तां लो खरी होई गेदी ही । टल्ले गिल्ले होई गेदे हे, ते मने च भै आई जाने करी ढक्की चढ़दे २ जङ्गां कम्बे कर दियां हियां । ओ घरै कोल पुज्जा तां पचवाड़ गोड़े चा गवै दे रम्हाने दी बुआज सुनची । कोटुआ दे

ਭਿਤ ਖੋਲਿਧੈ ਓਹੋ ਅਨਦਰ ਆਯਾ ਤਾਂ ਦੀਆ ਸ਼ਹਲੀ ਗੇਦਾ ਹਾ। ਖੂਏਂ
ਦੀ ਇਕ ਲਕੀਰ ਅਤੇ ਬੀ ਲਾਟੀ ਥਾਰ ਉਪਰੈ ਗੀ ਚਕੋਏ ਕਰਦੀ ਹੀ।
ਰਣੁ ਡਰਦਾ-ਸੰਗਦਾ ਅਗੜਾ ਹੋਗਾ। ਮਾਧਾ ਊਆਂ ਲੇਟੀ ਦੀ ਹੀ, ਜਿਆਂ
ਓਹ ਤਸੀ ਛੋਡਿਧੈ ਗੇਗਾ ਹਾ, ਪਰ ਓਦੀ ਮੁਝੀ ਲੁਅਾਰ ਖਾਈ ਗੇਈ ਦੀ ਹੀ।
ਤੇ ਭੇਲੋਂ ਗੀ ਪਰਤ ਲਗਦੀ ਗੇਦਾ ਹਾ।

ਗਾ ਦਾ ਨਾਂ ਮਨੇਹ ਏ।

ਇਸ ਅਲਾਕੇ ਗੀ ਜੇਕਰ ਢੁਗਰੈ ਦਾ ਦਿਲ ਆਖਚੇ ਤਾਂ ਠੀਕ ਹੋਗ।
ਜਸਮ੍ਮ ਸ਼ਹਰਾ ਦੀ ਚੜ੍ਹਦੀ ਪੇਠਾ ਇਕ ਬੜੀ ਵਾਟੀ ਜਨ ਏ। ਗਲਾਂਦੇ ਨ ਢੁਗਰੈ
ਦੀ ਪਰਾਨੀ ਰਾਜਧਾਨੀ ਇਤਥੁੰ ਗੈ ਹੀ, ਜਿਸੀ ਅੜਜਕਲ 'ਬਕੋਰ' ਗਲਾਂਦੇ ਨ।
ਅਤੇ ਬੀ ਇਸ ਥਾਰ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਕਾਲੈ ਦੇ ਮਤੇ ਨਿਸ਼ਾਨ-ਅੰਗ-ਛੇ ਢੱਹ-ਖੜੋਤੇ ਤੇ
ਮਨਦਰ ਨ। ਇਤਥੁੰ ਦੇ ਲੋਕ ਇਨੇ ਮਨਦਰੋਂ ਗੀ 'ਦੇਰੇ' ਗਲਾਂਦੇ ਨ। ਮਾਨਸਰ
ਤੇ ਸਾਂਝੇਸਰ ਦੌਂ ਭੀਲਾਂ, ਜਿਨੋਂਇ ਅਸ ਢੁਗਰੈ ਦਿਯਾਂ ਦੌਂ ਪਰਸਿੰਘਲੀ ਦਿਅਾਂ
ਅਕਥੀਂ ਆਖੀ ਸਕਨੇ ਆਂ, ਇਤਥੁਆਂ ਮਸਾਂ ਚਾਰ ਪੱਜ ਕੋਹ ਫੁਰ ਨ।
ਦੇਰੇ ਦੇ ਚਗਿੰਦ ਕੋਈ ਤ੍ਰੋਂ-ਚੌਂ ਮੀਲੇਂ ਦੀ ਹਵਦੈ ਚ ਚਾਰ ਪੱਜ ਪ੍ਰਾਂ ਬਸੈਂ ਦੇ
ਨ, ਮਨੋਆਲ, ਨਦਾਲ, ਮਨੇਹ ਤੇ ਥਲੋਡਾ। ਇਤਥੁਆਂ ਪਹਾੜੈ ਆਲੀ
ਬਕਥੀ—ਤਥਮਪੁਰੈ ਆਲੇ ਪਾਸੇ ਡਿਡੁ-ਦੌਂ ਮੀਲੈ ਪਰ ਛੈਂਦੀ ਛੈਂਦੀ ਤੀ ਬਗਦੀ ਏ।

ਤਥੀ ਆਲੀ ਬਕਿਖਾ ਔਚੈ, ਤਾਂ ਢਕਕੀ ਚੜ੍ਹਦੇ ਗੈ ਖਥੜੈ ਪਾਸੈ
ਦਨਾ ਫਾਵੈ ਉਪਰ ਮਨੇਹ ਗ੍ਰਾਂ ਲਵਦਾ ਏ। ਸਜ਼ੈ ਪਾਸੈ ਇਤਥੁੰ ਦੇ ਬਸਨੀਕੋਂ
ਦੇ ਖੇਤਰ-ਖੁਮੜੇ ਨ।

ਫੁਰਾ ਗੈ ਮਨੇਹ ਦੇ ਤੈ ਪਦਰ ਟਕੋਵੇ ਲਥੜੀ ਜਾਂਦੇ ਨ। ਨੀਠੇ ਪਦਰ
ਡੂਮ, ਨਵੇਅਲੇ ਤੇ ਮੇਗ-ਰੌਂਹਦੇ ਨ, ਤੇ ਬਾਕੀ ਦੇ ਦੌਂ ਪਦਰ ਠਕਕਰੋਂ ਦੇ ਨ।

ਰਮਾਲੁ ਉਪਰਲੇ ਪਦਰ ਰੌਂਹਦਾ ਹਾ। ਦਸ ਘਮਾਈ ਜਿਮੀਂ ਓਵੇ
ਕਚਥੈ ਏ ਹੀ, ਇਸ ਕਰੀ ਖਰੀ ਸਗੋਸਾਰੀ ਹੀ। ਹੌਲੀ ਗੈ ਬਰੇਸਾ ਚ ਮਾ-
ਬਥ ਮਰੀ ਗੇ ਹੈ। ਸਰੀਕੇ ਕੇਇਏ ਚਾਲੇ ਨੁਆਡੀ ਜਿਮੀਂ ਖੂਸਨੇ ਦਾ
ਜਤਨ ਕਿਤਾ, ਪਰ ਕਿਥ ਪੇਸ਼ ਨਈ ਚਲੀ। ਕਿਥ ਬਨਦਾ ਨਈ ਦਿਕਿਖੈ
ਸਰੀਕੇ ਖੀਰ ਰਮਾਲੁ ਦੇ ਹਮਦਰੰਦ ਵਨਿਗੈ ਓਵੇ ਕਨੇ ਮਿਲਿਧੈ ਓਦੀ ਜਿਮੀਂ ਚ
ਰਾਈ-ਬਾਈ ਸ਼ੁਲੁ ਕਰੀ ਓਡੀ। ਰਮਾਲੁ ਬੀ ਇਕਲਾ ਹਾ, ਲੌਕੀ ਬਰੇਸ
ਹੀ, ਏਸ ਚਾਲੀ ਜਸਮਾਦਾਰੀ ਬਣ੍ਹ ਲਵਲੀ, ਓਵੇ ਆਸਟੈ ਬੀ ਸੁਖ ਹੋਈ ਗੇਆ।
ਜੁਆਨ ਹੋਆ, ਮਠੋਇਧੈ ਸ਼ੈਲ ਗਵਲੁ ਨਿਕਲੇਗਾ। ਛਿੜੇਂ ਦਾ ਸ਼ਾਂਕੀ ਹਾ।
ਘੁਸਮਨੇ ਕਿਰਨੇ ਦੀ ਤਾਂਗ ਜਾਗੀ। ਮਨੈ ਚ ਉਮੰਗੇ ਦੀ ਲਹਰ ਤੁਸਸਰੀ।
ਉਨੇਂ ਦਿਨੇਂ ਸੰਸਾਰੈ ਦੀ ਪਹਲੀ ਬਣ੍ਹ ਲਾਮ ਲਗੀ ਗੈ ਹੀ। ਥਲੋਡੇ ਦੇ
ਇਕ ਹੋਰ ਗਵਲੁ ਦੀ ਸਾਰ ਬੀ ਕਨੇ ਮਿਲੀ ਤੇ ਇਕ ਰੋਜ ਦੀਏ ਮਾਨਸਰੋ-
ਪੁਰਸ਼ਣਲੈ ਰਾਏ ਜਸਮ੍ਮ ਸ਼ਹਰ ਆਈ ਪੁਜੇ। ਭਰਥੀ ਆਲੇ ਦਪਦਰ ਜਾਇਧੈ
ਨਾਮਾ ਲਖਾਵਾ ਤੇ ਹਵਾਈ ਜਹੁੜੈ ਉਪਰ ਫੁਰੂ ਕੀਤੇ ਦੇ ਤਡ੍ਢੀ ਗੇ।
ਅਦਨ, ਮਿਸਰ, ਵਸਰੈ ਤੇ ਹੋਰ ਦੂਰੈ-ਪਾਰੈ ਦੇ ਮੁਲਖੋਂ ਚ ਗੋਲਿਏਂ ਦੇ ਬੇਰੇ ਚ
ਧਿਰਦੇ-ਨਿਕਲਦੇ ਰੇਹ। ਉਨੇਂ ਗੀ ਏ ਨਈ ਹਾ ਸੇਈ ਜੇ ਓਹ ਕੈਸੀ, ਇਸ
ਚਾਲੀ ਅਪਨੀ ਜਿਨ੍ਹੂ ਦੇ ਬੈਰੀ ਬਨੇ ਦੇ ਨ। ਬਸ ਉਨੇਂ ਗੀ ਇਨਨਾ ਗੈ
ਸੇਈ ਹਾ ਜੇ ਹਾਕਮੇਂ ਦਾ ਫੁਕਮ ਏ ਬੈਰਿਏ ਗੀ ਸਾਰੀ ਟਕਾਓ, ਅਗੇ
ਬਦੀ, ਹੋਰ ਅਗੇਂ ਬਦੀ..... ਖੀਰ ਲਾਮੈ ਦਾ ਦੈਨਤ ਹੁਣੀ ਗੇਆ।
ਥਲੋਡੇ ਦੇ ਗਵਲੁ, ਰਮਾਲੁ ਦੇ ਸਾਥੀ ਨੇ ਅਪਨੀ ਜਿਨ੍ਹੂ ਦੀ ਕਲ ਦਿੱਤੀ
ਤੇ ਰਮਾਲੁ ਨੇ ਇਕ ਬਾਂਹ ਵੇਈ ਓਡੀ। ਅਪਨੇ ਦੇਸ ਪਰਤੋਆ ਤਾਂ ਮਨਾ
ਪੈਸਾ ਓਵੇ ਕਚਥੈ ਹਾ। ਕਿਨਾ ਚਿਰ ਹਿੰਦੁਸਤਾਨੈਂ ਚ ਗੈ ਕਿਰਦਾ

रेआ। बम्बई दिक्खी, काशी, प्रयागराज, पुरी, बदरी नारायण
ते अमरनाथे दी यात्रा कीती। खीर पैसे गंडी नई रेह तो अपने
ग्रां आली बक्खी परतोआ।

ग्रां आतै गी नुआडी वां कपोई दी दिल्लिये दुख होआ। पर
सरीके उसी मुंह नई लाया। रमालू समझी गेआ जे दालती च गे
विना जीन नई थोनी। कोठू रेहत रखेआ ते दालती पुज्जा।
फैसले होए फी अपीलां! सत्त बरे इने भगड़े च लगे। दस घमां
जिमीं थोई, पर चार घमां बेचनी पेई गेई। कोठू बी परतियै लैना
हा, ते चुक्के-चाडे दा बी मुकाना हा। छे घमां जिमीं बी थोड़ी
नई ही, पर दौं त्रै बरे फी बी राई बाई बिच चित नई लगा।
शहर दालती दी धूड़ खाई २ हुट्टन होई गेदा हा, उसी तुआरना
बी जरूरी हा। हुन ओ चालिएं दे नेड़े-त्रै हुई पुज्जी गेदा हा।

इक दिन चेतर चौदेआ दे ध्याई रमालू पुरमण्डल मेला दिक्खन
टुरी पेआ। बा भाए इककै ही, बो अजें बी नुआडी जिन्द निगर
ही। मेलै शामें आली डांग मूण्डै ही, ते सिरै पर मनासा बी गुड़े
रंगाए दा हा।

मेलै गै ओदी भत्त उस्से गबर्हे दे बब्बै कन्ने होई जड़ा लामै च
ओदे कन्ने रोआ हा ते उत्थे अपनी बल देई बैठा हा। उस बुड़े
कन्ने तेरें-चौदे बरे दी इक कुड़ी ही, जेदा शलैपा इन्ना ओपरा हा
जे सारे मेले दी अब्ब ओदी गै बक्खी ही। बुड़े नै दस्सेआ जे ओदा
मारा टब्बर कोठा ढाँने करी दबोइयै मरी गेआ ऐ। बुड़े पुतरै

दीआ स्थिलै करदो हा।

दीए दी नीमीं होयै करदी लोई च रण् ने माऊ पासै दिवखेआ।
मां अक्खी मीटियै, खबरै जीवनै दे पारले बेलै के-के तलौकै करदी
ही। ओदे स्वास, धाल हेए दे पैछिया आंगर तड़की तड़की
पैवै करदे हे।

चानचक्क दीए दी लाट कम्बी। रण् धावरियै उड़ेआ
ते उसने, तुआई दिक्खेआ; त्रियां ओदी माऊ दे प्राण दीए दी
लाटै कन्ने बज्जे दे होन। अरकै दीया स्थिलदे गै माऊ दे प्राण
बी स्थिली जांगन, तागे त्रुट्टी जांगन, प्राण-पखेल उडुरी जांगन।

पर दीआ हिस्सलेआ नई।

लाट परतियै समलोई ते सिद्दी होई गेई। उसनै की माऊ
पासै दिक्खेआ। सेई नई हा हुन्दा जे ओ सुती दी ऐ जा
बिज्जी दी। दौं दिने थमां उसी इयां गै इक डोबी जन लगी
दी ही। इक बाची बी पासा नई हा परतेआ उसने।

रणू दी ताड़ी लंगी दी रेई । ओ किश घावरन लंगी
पे दा हा ।

अद्वी क घड़ी होर लंगी गई । रणू ने दिक्खेआ माया दे
कुआंस हिले । ओदा मन बड़े जोरे ध्रक-ध्रक करन
लगा । माया ने बल्ले जनेई अब्बी पुट्ठियां ते रणू पासे
दिक्खेआ । रणू गी सेई होआ जियां ओ उसी कच्छ औने आस्तै
कुआलै करदी ऐ ।

माया पल दो पल रणू गी दिखदी रेई । ओ सौच करदी ही
जे ए निका सारा रणू उदै बाद के करग ? कीयां पकाग
ते खाग ? ए जिमी कुन बाग, ते दांदे दी सम्हाल कुने करनी ऐ ?
छिल्लू-बक्कल ते गवै दी राखी कुन करग ? ए सारी सौच
ओदे गे ओदिएं अकिखएं चा दो अत्थरूं रुक्की पे ।

दौं दिने परेन्त माऊ दियां अकिखयां बिंद खुल्लियां बी तां ओ
रोन लंगी पेई—ए दिक्खेयै ओबी रोन लगा । मायां ने रणू
गी रोंदे दिक्खेआ तां जियां ओदा कालजा गै कुसे बाहर कहु
लैता ।

‘नई जुआड़ी च ए इक्कला नई रेई सकदा ।’ मायां दी
आत्मां करलाई । बल्ले जनेई उसने रणू दे हत्थै उपर अपनियां
ओंगलियां केरियां, ते की ओदा हत्थ अपने हत्थै च लेई लैता ।
रणू दुसकी २ ओदी छाती उपर जाई पेआ ।

“नई रो पुतरा, नई रो,” माया ने-रणू दे सिरे उपर हत्थ
फेरदे होई बड़ी मुश्कलें गलाया । ए दो बोल बौलियै गे ओ

हफी गेई ही ।

माऊ दी छाती उपर सिर टकाए दे रणू गी माऊ दी देह
भखी दी सेई होई । अज्ज त्रौं दिने दी ओ इसै चाली तापै च
तपै करदी ही । रणू त्रौं दिने दा गै कदे ओदी सरेदी ते कदे
परेन्दी बैठा दा हा । उसने मते बारी किशनपुर जाइयै डाक्टरै
गी सददी आनने दा बचार कीता हा, पर पहले दिन माया गी
डर हा जे खबरै कोलं ओदे प्राण पखेरु उहुरी जान, ते कन्ने उसी
पता हा जे रणू तौ नई टप्पी सकदा । ते दो दिन रणू गी डर
हा जे पिछुआं कुतैं माऊ गी किश होई नई जा । ओ माऊ गी
इक्कली कियां छोड़ी जंदा ।

रणू गी दुसकदे दिक्खियै माया कशा रौहन नई होआ ।
ओदे कन्ने च जियां बलेल पेई—“रणू आस्तै तुगी जीना गै पौग ।
रणू आस्तै तुगी जीना गै पौना ऐ ।”

“रणू !” माया ने कम्बदी बुआजै च गलाया, “कुन्तो अजे
नगरा परतोई जां नई ?”

“नई ! ओ अमरु कन्ने शहर गेदी ऐ ।” रणू ने मिर हलादे
होई गलाया ।

“तां की खलके पढ़र जा, खैरु गी अळ्य जे ओ पार जाइयै
डागदारै गी सददी आनै ।”

ए कुन्तो माया दी मितरनी ही जां खैरु हा, जिसी हमदर्दी
ही ।

रण् माऊ दी गल्ल सुनियै भट्ट उट्टी खड़ोता। माया ने ममता भरोची नजरें उसी दिक्खेआ, ते दिखदी गै रेई। रण् बी नोआडै पासै दिक्खियै बल्लें बल्लें पिच्छें हटदा गेआ। माया दियां अक्खीं डकोडक भरोते करी उसी बाहर जन्दे नईं दिक्खी सकियां। अक्खीं मीटियां, तां डबर गल्लें उप्पर आईं परतोई।

रण् भित्त खोलियै कोठुआ दे बाहर आया ते भित्त उसने परतियै भेड़ी ओड़े। बाहर अम्बर घनोते दा हा, ते किश २ गुड़कै बी करदा हा। उसी बाऊ दा फण्डूका बी किश सेजला बजोआ। उसने बामां छाती उप्पर बन्नी लैतियां। अजें ओ अंगनै च गै हा, ताईं बाड़िया कुक्कडै बांग दित्ती।

स्हैवन गै उसी चेता आया जे खैरू ते कल्लै दा तसीला गेदा ए। रण् सौचे पेई गेआ। उस्सै बेल्लै ढलदिया बक्की विजली ने मलकारा मारेआ। रण् सौचे पेदा हा। “डागदारै औना गै चाइदा; डागदारै गी औना गै चाइदा”—ए बोल ओदे दमाकै च धुम्मन-धेरे पान लगे, तां ओ तवी आली बक्की दुरी पेआ।

अम्बर गुड़कन लगी पेदा हा। विजली बी मिलकै करदी ही।

ठक्की दे उप्परा खडोते दे उसी सेई होई गेआ जे अज्ज दरेआ बड़ा गै चढ़ेदा ए। उस भुसमुसे च तौ विम्बले दे फिलडरै आंगर, सूंकदी-धूंकदी बगा करदी ही। खल्ल पुजियै ओ जन्नी-बट्टे उप्पर शडापियां मारदा गेआ। हुन उस भुसमुसे च लो किश बदन लगी पेदी ही।

तविया दै कडै पुजियै रण् दा मन सहमियै संगडोई गेआ। तवी दे मारू छल्ल जियां ओदी सारी हिम्मत बी अपने कन्ने लेई

सींह जुआन, सुश्रा लाल सूंह, घनियां त्रिक्खियां मुच्छां, फुल्ली दी छाती ते सिरै पर केसरी साफा बद्दा दा। इस अलाकै च भला कुन ए जडा उसी नईं हा जानदा। सहईं रौहदा ए, पर शहर लगने आलिएं सन्ते दे शबकै च फगडोंडा रौहन्दा ए।

“जै देआ भाई जी”, अमरू ने जगतू दा घोड़ा खड़ोदे गै गलाया। उसी सेई हा जे ठक्कर हुन्दे होई बी जगतू ‘राम राम’ दी थार “जैदेआ” खोआना गै पसन्द करदा ए।

जगतू ने जैदेआ दा जबाब ते दित्ता, पर कुन्तो पासै दिखदे-दिखदे। कुन्तो बी नुआडै पासै दिखदी-दिखदी अगड़ी बदी गेई। ते अग्गे जाइयै आपने घोड़े गी फिरी रस्ते उप्पर लेई आंदा।

“बै अमरू, तुगी ते पता गईं लगा होग ?” जगतू ने गलाया।

“के भाई जी?” जगतू नै सज्जे मूण्डेआ गंडै गी खब्बै मूण्डै टकाइयै ते जगतू दे कोल आइयै पुच्छेआ।

तुआईं कुन्तो ने बी गल्ल सुनने आस्तै घोड़े दो लगाम अवच्चियै कनठेह लाई लैती।

“बै रमालू उस्तादै दी घरे आली दा काल होई गेआ।”

“माया दा ?” अमरू दे मुझां निकलेआ। तुआडे आने टडोई गे। तुआईं उसने दिक्खेआ, कुन्तो घोड़े उप्परा जियां ढैवै करदी ए। गंड मुट्ठियै ओ द्वोडेआ पर कुन्तो गी उसने कियां साम्बना हा, आपूं गै खल्ल पौंदी कुन्तो दे हेठ आई गेआ। गिल्लू बख्ख जाई पेआ, ते दमें जने हैं ए।

जगतु शाल मारियै धोडे उपरा उतरेआ, ते उसने अमरु गी
जाई थम्मेआ ।

“अमरु, तौला जा ते पानी लेई आ ।” गलांदे गलांदे जगतु ने
कुन्तो गी चुक्केआ ते समानै खब्बलै उपर उसी जाई लयाया ।

अमरु ने गिल्लूर्यै गी चुक्कियै कुन्तो दे कच्छ गै बुआलेआ ते
आपूं ट्रैडेआ पानी लैने आस्तै । कच्छ गै इक बौली ही, पर
उथ्यै बौल बज्जी दी ही ते दौं डिड्डू वी मोए दे इक बक्खी तरै
करदे हे । समां कुथ्यै हा सोचने दा । उसने भट्ठ दौने हथ्यै
बुक्कै च पानी भरेआ ते पिछड़ा नस्सा । परतोआ तां दिक्खेआ जे
जगतु ने कुन्तो दा सिर अपने पट्टै उपर रखें दा ऐ । ते नुआडे
हथ्यै दियां तलसै करदा ऐ ।

पानी दे छिट्ठे पौंदे गै कुन्तो नै अक्खीं पुट्ठियां । अपनी मुण्डी
जगतु दे पट्टै उपर दिक्खियै ओ त्रवक्कियै उट्टी खड़ोती ते गिल्लू गी
छाती कन्ने लइए जोरें जोरें रोन लगी पेई ।

जगतु अपने धोडे कच्छ अइयै अमरु गी पुच्छत लगा, “ए
दोऐ मित्रनियां हियां ?”

‘हां भाई जी, नै-मासै दा गै सरबंध समझो ।’

“बिन्द सामिंगै लेई जायां ।” जगतु ने धोडे उपर सुआर
हुन्दे होई गलाया, ‘अऊं जन्नां ।’

अमरु ने हुन इक मूण्डै गंड ते दूए उपर गिल्लू गी बुआले
दा हा । कुन्तो सिल-पथ्यर जन धोडे उपर बैठी दी ही ।

अक्खीं दा आमले जन अत्थरुं आप मुहारे किरदे जा करदे
हे । अमरु दियां गल्लां वी ओंदे कन्ने च नईं हियां पवै
करदियां ।

“चरजै दी गल्ल ऐ; खरी भली ही माया जदूं अस
नगर गे हे । त्रौं-चौं दिनें दी गै गल्ल ऐ । बसोस ते ऐ गै
पर तूं किश कूऐ गै नि करदी !”

कुन्तो के कूंदी ?

“जेलै नगरा दुरे हे तां तुगी आगमन होई हा । भई, बड़ा
गै हिरख हा युआडे दौनें च । तुगी दौं ध्याडे आस्तै नगर
टोरदे होई वी रोन लगी पेई ओ । खबरै, उसी सेई हा जे होनी
के बरतनी ऐ ।

ग्रां कोल आई जा करदा हा ।

अमरु किश चिरै आस्तै चुप रेआ ते परतियै गलान लगा,
“भई, बड़े गै सा-सत्त हे नुआडे च । बोइयै आई ते परतियै प्यौंकै
जाने दा नां नि लेआ । रमालू बचैरा—ऐ ते खचरा हा, बो
इक हत्था लचार । माया नुआडेशा मता कम्म करदी ही ।
बसां करना ते उन भाष्ये दा गै नेईं हा । सिनकू अंगर लग्गी दी
गै रौहदी । रमालू दा काल होआ तां घरै दा कम्म बक्ख, ते
राई बाई दे कन्ने-कन्ने रण् दी साम्ब सम्हाल बक्ख ।”

रण् दा नां सुनियै कुन्तो गी फी धिक्का लगा । उस गरीबै
दा के होग—ए सोचदे गै उसी अपने गिल्लुऐ दा ख्याल आया ।
काहली पेइयै उने पिछड़े अमरु पासै दिक्खेगा । गिल्लू अमरु दे
मूण्डै उपर बैठे दा सिरै उपर सिर टकाइऐ सेई गेदा हा ।

ਅਮਰੁ ਨੇ ਅਪਨੇ ਇਕ ਹਤਥੈ ਕਨ੍ਹੇ ਤਸੀ ਥਮਸੇ ਦਾ ਹਾ।

ਅਮਰੁ ਨੇ ਬੀ ਦਿਕਖੇਆ ਜੇ ਕੁਨਤੋ ਕਿਥ ਸੋਗੀ ਹੋਈ ਗੇਈ ਏ।

“ਕੁਨਤੋ, ਤੁਸੀ ਸੇਈ ਏ ਰਮਾਲੂ ਕਨ੍ਹੇ ਸ਼ਹਾਡੇ ਵਡੇ ਲਸੇ ਭਗਡੇ ਚਲੇ ਹੈ। ਕਈ ਵਰੇ ਤਰੀਕਾਂ ਭੁਗਤਿਆਂ। ਸਾਧਾ ਆਲੀ ਜਮੀਨ ਪਹਲੋਂ ਸ਼ਹਾਡੇ ਕਚਥ ਗੈ ਹੀ ਨਾਂ। ਅਸ ਗੈ ਵਾਂਦੇ ਰਾਂਦੇ ਹੈ। ਰਮਾਲੂ ਪਲਟਨੀ ਦਾ ਪਰਤੋਆਂ ਤਾਂ ਦਾਲਤੀ ਗੇਆ। ਸ਼ਹਾਡੇ ਵਾਪ੍ਰ ਦਾ ਕਾਲ ਹੋਈ ਗੇਆ, ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਜਮੀਨ ਤੇ ਸ਼ਹਾਡੀ ਗੈ ਹੀ।”

ਕੁਨਤੋ ਕਿਥ ਚਤਨ ਹੋਈ, ਕਿਥ ਸੈਂਸਾ ਗੇਈ। ਉਸਨੇ ਪਰਤਿਥ ਅਮਰੁ ਪਾਸੈ ਦਿਕਖੇਆ। ਇਕ ਭੈ-ਰਲੀ ਦੀ ਸੈਂਸਾ ਓਦੇ ਮਨੈ ਚ ਜਾਗੀ ਖਡੀਤੀ ਖਵਰੈ ਅਜ ਅਮਰੁ ਦੀ ਨੁਆਰ ਦਿਕਖਿਧੈ ਉਸੀ ਕੀ ਉਸ ਦਿਨੈ ਦਾ ਚੇਤਾ ਤਠੀ ਆਧਾ ਹਾ ਜਦੂ। ਅਮਰੁ ਨੇ ਏਕ ਕੁਝੈ ਦੀ ਮੁਣਡੀ ਵਰੇਠਿਧੈ ਉਸੀ ਓਦੇ ਸਾਮਨੈ ਸਾਰੇਆ ਹਾ।

ਉਸੀ ਤੌਲੀ ਆਈ ਗੇਈ।

“ਨਹੀਂ, ਨਹੀਂ” ਉਸਨੇ ਸੋਚੇਆ, “ਆਂਡ ਏ ਕਦੇ ਬੀ ਨਹੀਂ ਹੋਨ ਦੇਂਗ।” ਕਦੇ ਬੀ ਨਹੀਂ ਹੋਨ ਦੇਂਗ।”

ਅਮਰੁ ਓਦੀ ਸੈਂਸਾ ਕਥਾ ਵੇਖਾਕਕ, ਆਖੈ ਕਰਦਾ ਹਾ।

“ਰਾਗੂ ਬਚੇਂਦਰ ਹੁਨ ਇਕਗਲਾ ਰੇਈ ਗੇਆ! ਕਿਥ ਚਾਲੀ ਓ ਰੌਹਗ ਹੁਨ ਇਕਕਲਾ? ਹਲ ਕੁਨ ਬਾਗ? ਨੁਆਡੇ ਦਾਂਦੇ ਦੀ ਸਾਮਵ ਕੁਨ ਕਰਗ? ਘੋਡੇ ਤੇ ਬਕਹਿਏ ਦੀ ਰਾਖੀ ਕੁਨ ਕਰਗ?” ਅਮਰੁ ਏ ਗਲਾਈ ਜਾ ਕਰਦਾ ਹਾ ਤੇ ਕੁਨਤੋ ਓਦੇ ਮਨੈ ਦੀ, ਖੁਫੈ ਦਾ ਤੀਲ ਕਰਦੀ ਜਾ ਕਰਦੀ ਹੀ। ਉਸਨੇ ਮਨੋਮਨ ਧਿਆਈ ਲੈਤਾ ਹਾ ਜੇ ਆ ਰਾਗੂ ਕਨੈ ਰੌਹਗ। ਉਸੀ ਤਥੈ ਮਸਤਾ ਦੇਗ ਜਡੀ ਮਾਧਾ ਅਪਨੇ ਕਨੈ ਲੇਈ ਗੇਈ ਏ। ਮਾਧਾ ਦਾ ਚੇਤਾ ਕਰੀ-ਕਰੀ ਆ ਅਤਥੁ ਬੀ ਕੇਰੀ ਜਾ ਕਰਦੀ ਹੀ।

ਦੀ ਨਿਆਨੀ ਏ ਕੁਝੀ ਗੈ ਬਚੀ ਦੀ ਏ। ਬੁਝੇ ਨੇ ਏ ਬੀ ਦਸੰਸਾ ਜੇ ਓਦੇ ਸਾਰੇ ਖੇਤਰ ਰੈਹਨ ਰਖੋਏ ਦੇ ਨ।

ਮੇਲੇ ਵਾ ਆਈਧੈ ਰਮਾਲੂ ਕੇਈਂ ਦਿਨ ਸੋਚੇਂ ਪੇਦਾ ਰੇਆ। ਹਰ ਵੇਲੈ ਉਸੀ ਚੌਦੇਂ ਪੰਦਰੇਂ ਵਰੇਂ ਦੀ ਹਿਰਣੀ ਲਵਦੀ ਰੌਂਦੀ। ਫੀ ਇਕ ਰੋਜ਼ ਆਂ ਉਸ ਬੁਝੇ ਕੋਲ ਥਲੋਡੇ ਜਾਈ ਪੁਜਗਾ। ਗਲਲ ਸਿਰੈ ਚੜਨ ਲਗੀ। ਸੌਦਾ ਹੋਈ ਗੇਆ। ਸੱਤੋਂ ਸਵੇਂ ਊਪਰ ਗਲਲ ਸੁਕਕੀ। ਕਿਥ ਹੋਰ ਜਮੀਨ ਬੇਚਨੀ ਪੇਈ ਗੇਈ।

ਤਿਥ ਸੋਖਿਧੈ ਰਮਾਲੂ ਨੇ ਸੱਤ ਸੌ ਰੁਪੇਆ ਬੁਝੇ ਗੀ ਦਿਜਾ ਤੇ ਮਾਧਾ ਗੀ ਘਰ ਲੇਈ ਆਯਾ।

ਹੁਨ ਓਦਾ ਇਕ ਨਮਾਂ ਜੀਵਨ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਆ।

ਮਾਧਾ ਭਾਧੇਂ ਲੀਕੀ ਗੈ ਹੀ, ਪਰ ਬੁਝੀ ਸੋਗੀ ਤੇ ਸਧਾਨੀ ਹੀ। ਸਸ਼ ਸੌਰਾ ਤੇ ਅਮ੍ਰੋਂ ਗੈ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਕਲੀ ਗੈ ਉਸਨੇ ਘਰ-ਬਾਹਰ ਸੰਭਾਲੀ ਲੈਤਾ। ਅਪਨੇ ਥਲੈਧੈ ਦਾ ਤਸੀ ਜਿਧਾਂ ਪਤਾ ਗੈ ਨਹੀਂ ਹਾ। ਰਮਾਲੂ ਨੇ ਬੀ ਕੇਇਏਂ ਵਰੇਂ ਪਰੰਤ ਅਪਨੇ ਖੇਤਰੋਂ ਦੇ ਆਡੀ-ਕਨੇ ਸਥਾਰੇ। ਮਾਧਾ ਕਨ੍ਹੇ ਰਲਿਧੈ ਹਲ ਬਹਾਨਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰੀ ਓਡੇਆ। ਵੱਲੋਂ ਵੱਲੋਂ ਦੌਂ ਦਾਂਦ ਬੀ ਮੁਲੋਂ ਲੇਈ ਲੈਤੇ। ਇਕ ਦੌਂਫ ਸਲੋਂ ਵਾਦ ਓਦੇ ਕਚਥ ਅਪਨੀ ਜ਼ਰੂਰਤੋਂ ਸੁਜਵ ਸਵ ਕਿਥ ਹੋਈ ਗੇਆ। ਇਕ ਗੀ, ਦੌਂ ਛਿਲ੍ਹ ਤੇ ਇਕ ਘੋੜਾ ਬੀ।

ਬਾਹ ਦੇ ਪੱਤੇ ਵਰੋਂ ਪਰੰਤ, ਇਕ ਜਾਗਤ-ਰਣੁ ਹੋਆ। ਪਰ ਖਵਰੈ, ਪੁਤਰ ਬਬੈ ਉਧਰ ਭਾਰਾ ਹਾ। ਜੇਠ ਮਹੀਨੋਂ ਚਿਲਕਦੀ ਬੁਣੈ ਚ ਰਮਾਲੂ ਖੇਤਰੋਂ ਪਰਾ ਆਧਾ। ਮਾਧਾ ਅੜੇ ਲੂਤਨੈ ਚ ਗੈ ਹੀ। ਓਦੇ ਸਾਰ ਗੈ ਰਮਾਲੂ ਗੜਵਾ ਭਰਿਧੇ ਪਾਨੀ ਇਕੱਠੇ ਢੀਕ ਲਾਈਏ ਪੀ ਗੇਆ। ਬਸ ਪਾਨੀ ਪੀਨੇ ਦੀ ਗੈ ਫਿਲਲ ਹੀ, ਟਿੱਡੇ ਚ ਨਹੀਂ ਗੱਡ ਬਜੀ ਜੇ ਪ੍ਰਾਣ ਲੇਇਧੈ ਗੈ ਗੇਈ।

ਅਨੰਦਰਾ ਦਾ ਸਾਹ ਅਨੰਦਰ ਰੇਈ ਗੇਅਗਾ ਤੇ ਬਾਹਰੈ ਦਾ ਬਾਹਰ।

ਹੁਨ ਮਾਧਾ ਉਪਰ ਜਿਧਾਂ ਇਕ ਪਬੰਤ ਗੈ ਆਨੀ ਪੇਅਗਾ ਹਾ।

ਪਰ ਮਾਧਾ ਘਾਬਰੀ ਨਈ। ਓਦਾ ਜਨਮ ਗੈ ਜਿਧਾਂ ਮਸੀਵਤਾਂ ਸ਼ਹਾਰਨੇ ਤੇ ਕਮਮ ਕਰਨੇ ਗੀਤੈ ਹੋਏ ਦਾ ਹਾ। ਰਮਾਲੂ ਦੇ ਬਾਦ ਕੀ ਨੁਆਡੀ ਘਰ-ਬੁਸ਼ਟੀ, ਖੇਤਰੇ-ਖੁਮ੍ਬੇ ਦਾ ਰਾਹੁਨਾ ਬਾਹੁਨਾ ਚਲਦਾ ਰੇਆ।

ਤੇ ਰਣੂ ਬਲਲੋ-ਬਲਲੋ ਮਠੋਦਾਂ ਰੇਆ। ਪਹਲੇ ਓ ਮਾਧਾ ਦੀ ਪਿਟ੍ਠੀ ਪਿਛੇ ਬਨੋਏ ਦਾ ਖੇਤਰੇ ਜਨਦਾ ਰੇਆ, ਫੀ ਕਨਾਡੈ ਚਿਡਿਧੈ ਜਾਨ ਲਗਾ; ਓਦੇ ਬਾਦ ਔਂਗਲ ਫਗਡਿਧੈ ਜਨਦਾ ਰੇਆ।

ਹੁਨ ਓ ਨਵੈਂ ਬਰੋਂ ਦਾ ਹੋਈ ਗੇਅਗਾ ਹਾ, ਤੇਸਾ-ਕੇਲਾ ਚੁਕਿਕਧੈ ਮਾਊ ਦੇ ਕਨੇ ਕਨੇ ਖੁਮ੍ਬੇ ਚ ਜਨਦਾ। ਨਿੱਕੇ-ਨਿੱਕੇ ਹਤਥੋਂ ਗੁਝੁਤੂ ਕੀ ਫਗਡਦਾ, ਤੇ ਕਨੇ ਫਿਲਲ ਕੀ ਤ੍ਰੋਡਦਾ।

ਪਰ ਹੁਨ ਮਾਧਾ ਗੀ ਕੀ ਪਰਮੇਸਰੈ ਨੁਆਡੇ ਕਥਾ ਖੂਸੀ ਲੈਤਾ। ਦੋਂ ਦਿਨ ਗੇ ਮਾਧਾ ਗੀ ਢਕਲ ਨਸੋਨਿਆ ਰੇਆ। ਕਾਰੀ ਕੀ ਕਿਧਾਂ ਹੋਈ ਸਕਦੀ ਹੀ? ਸਰੀਕੇਂ ਚਾ ਅਮਰੁ ਹਾ, ਤੇ ਨੁਆਡੀ ਭਾਬੀ ਕੁਨ੍ਤੀ ਮਾਧਾ ਦੀ ਪਕਕੀ ਮਿਤਾਰਨੀ ਕੀ ਹੀ, ਪਰ ਦੋਏ ਨਗਰ ਗੇਦੇ ਹੈ। ਤੇ ਖੌਲੁ ਕੀ ਉਤ੍ਥੈ ਨਈ ਹਾ। ਹੋਨੀ ਸੋਕਾ ਦਿਕਖੀ ਬਰਤੀ ਗੇਈ ਹੀ।

ਮਾਧਾ ਦੀ ਚਿਖ ਬਲੈ ਕਰਦੀ ਹੀ।

ਰਣੂ ਦਨਾ ਛਿੜੈ ਖੜੋਤੇ ਦਾ ਇਆਂ ਸੇਈ ਹੁਨਦਾ ਹਾ, ਜਿਧਾਂ ਉਤ੍ਥੇ ਛੜੀ ਓਦੀ ਦੇਹ ਗੈ ਹੀ, ਆਤਮਾ ਨਈ ਹੀ ਰੇਈਦੀ।

ਉਸੇ ਰੋਜ ਨਗਰਾ ਅਮਰੁ ਤੇ ਕੁਨ੍ਤੀ ਪਰਤੋਈ ਆਵੈ ਕਰਦੇ ਹੈ।

ਕੁਨ੍ਤੀ ਸਮਧਾਨਾ ਆਲੇ ਥੋਡੈ ਉਪਰ, ਅਪਨੇ ਗਿਲ੍ਲੂਏ ਗੀ ਇਕ ਹਤਥੈ ਕਨੇ ਸਾਮਿਵਧੈ ਵੈਠੀ ਦੀ ਹੀ। ਦ੍ਰਾਏ ਹਤਥੈ ਚ ਉਸਨੇ ਲਗਾਮ ਹੀ ਫਗਡੀ ਦੀ। ਪਿਛੇ ੨ ਅਮਰੁ ਇਕ ਹਤਥੈ ਚ ਤ੍ਰਮਵਡੀ ਤੇ ਦ੍ਰਾਏ ਹਤਥੈ ਕਨੇ ਸ੍ਰੁਣੈ ਉਪਰ ਰਕਖੀ ਦੀ ਇਕ ਬੁਸ਼ਕਡੀ ਥਮਿਮਏ ਟੁੱਅ ਕਰਦਾ ਹਾ। ਕੁਨ੍ਤੀ ਅਮਰੁ ਦੀ ਭਾਬੀ ਲਗਦੀ ਏ। ਬਹੁੰ ਭਾਊ ਦੀ ਬਹੈ ਆਲੀ, ਕੀ ਕੁਨ੍ਤੀ ਦੇ ਜਾਤਕ ਅਮਰੁ ਜਾ ਗੈ ਨ। ਇਸ ਗਲੈਂ ਗੀ ਦਸ ਬਰੇ ਹੋਏ ਨ, ਜਦੂ ਨਾਨਕੂ ਦਾ ਬਧਾਹ ਕੁਨ੍ਤੀ ਕਨੇ ਹੋਆ ਹਾ। ਕੁਨ੍ਤੀ ਦੀ ਬਰੇਸ ਅਫੂ ਬਾਰੋਂ ਬਰੋਂ ਦੀ ਹੀ। ਨਾਨਕੂ ਦਾ ਏ ਬਧਾਹ, ਓਦੀ ਮੈਨ ਜਾਨਾਂ ਗੀ ਵਡੈ ਦੇਈਧੈ ਹੋਆ ਹਾ। ਜਾਨਾਂ ਦੀ ਤਮਰ ਅਫੂ ਦਸੋਂ ਬਰੋਂ ਦੀ ਹੀ। ਜਾਨਾਂ ਕਨੇ, ਕੁਨ੍ਤੀ ਦੇ ਬਬੈ ਬਧਾਹ ਕੀਤਾ ਹਾ। ਜੇਦੀ ਤਮਰ ਅਫੂ ਪੰਜਾਏ-ਪਚੁੰਜੇ ਬਰੋਂ ਦੀ ਹੀ।

ਪਰ ਬਧਾਹ ਦੇ ਦੌਂ ਬਰੋਂ ਪਰੈਨਤ ਗੈ ਜਦੂ ਕੁਡਿਏ ਦੇ ਅਜੋਂ ਫੇਫੇ ਕੀ ਨਈ ਹੈ ਹੋਏ ਦੇ, ਜੇ ਇਕ ਰੋਜ ਨਾਨਕੂ ਖਲਾਡੇ ਗਾਹ ਪਾਇਧੈ ਬਹੁੰ ਪਰਤੋਆ ਹਾ, ਬਾਡਿਆ ਦੀ ਪਿਛਲੀ ਗੰਲੀ ਚ ਇਕ ਫਿਲਡਰੈ ਤੁਸੀਂ ਡੰਗੀ ਲੇਅਗਾ। ਕਿਥ ਚਿਰੈ ਪਰੈਨਤ ਗੈ ਕੁਨ੍ਤੀ ਦੇ ਬਬੈ ਜੋਰ ਪਾਨਾ ਸ਼ੁਲੁ ਕਰੀ ਓਡੇਅਗਾ। ਨਾਨਕੂ ਦਾ ਕਾਲ ਹੋਏ ਦੇ ਬਰਾ ਗੈ ਹੋਆ ਹੋਨਾ ਜੇ ਅਮਰੁ, ਜਾਨਾਂ ਗੀ ਛੋਡਿਧੈ ਕੁਨ੍ਤੀ ਗੀ ਲੇਈ ਆਯਾ।

ਬਧਾਹ ਤੇ ਕੇ ਹੁਨਦਾ ਦੌਨੈਂ ਦਾ, ਅਮਰੁ ਦੇ ਕੁਨ੍ਤੀ ਚਾ ਤੈ ਜ਼ਾਗੇ ਨ। ਬਹੁੰਆਂ ਦੌਂ ਕੁਡਿਧਾਂ ਨ, ਇਕ ਛੇਂ ਬਰੋਂ ਦੀ ਛਲੀ ਤੇ ਤੌਂ ਬਰੋਂ ਦੀ ਛਲੀ; ਕੁਡਿਏ ਕਥਾ ਲੀਕਾ ਏ ਗਿਲ੍ਲੂ ਏ। ਅਜੋਂ ਬਰੇ ਦਾ ਕੀ ਨਈ ਹੋਆ, ਜਿਸੀ ਉਸਨੇ ਥੋਡੈ ਉਪਰ ਬੈਠੇ ਦੇ ਗੋਦਾ ਲੇਦਾ ਏ।

ਅਮਰੁ ਕੁਨ੍ਤੀ ਗੀ ਖੁਲੈ ਰਕਖਨੇ ਦੇ ਬਤੇਰੇ ਜਤਨ ਕਰਦਾ ਏ, ਪਰ

ਗ੍ਰਾਂ ਪੁਜਦੇ ਗੈ ਰਣ੍ਹ ਦਾ ਕੋਡੂ ਆਧਾ ਤਾਂ ਕੁਨਤੀ ਨੇ ਘੋੜਾ ਰੋਕੀ ਲੈਤਾ,
ਤੇ ਉਧਰਾ ਤਤੀ ਵੈਠੀ। ਗਿਲਲੁਏ ਗੀ ਅਮਰੁ ਦੇ ਸੂਣਡੇਆ ਲੁਅਾਵੈ ਗਲਾਨ
ਲਗੀ, “ਅੱਕ ਰਣ੍ਹ ਕਚਢ ਜਾ ਕਰਨੀ ਆਂ।”

ਅਮਰੁ ਸੂਰਤ ਜਨ ਤਸੀ ਦਿਖਦਾ ਰੇਆ ਤੇ ਓ ਅੰਦਰ ਗੇਈ ਤਠੀ।

ਕੁਨਤੀ ਗੀ ਦਿਕਖਾਵੈ ਇਥਾਂ ਸੇਈ ਹੁਨਦਾ ਏ ਜੇ ਏ ਜੁਅਾਂਟੀ ਜਨਮ ਜਨਮਾਂਤਰੇ
ਵੀ ਤ੍ਰੇਆਈ ਵੀ ਏ, ਕਣਡੀ ਦੇ ਖੇਤਰੈ ਆਂਗਰ। ਸ਼ਲੰਧਾ ਕਿਨਾ ਮਾਰੁ
ਏ! ਪਰ ਅਕਖੀ—ਦੁਖੇਂ ਦੇ ਛੂਗੇ ਸਰ, ਜਿਦੀ ਕੋਈ ਆਹ ਨਈ, ਜਿਨਦਾ
ਕੋਈ ਤਲ ਨਈ!

ਅਮਰੁ ਹੁਨ ਮਾੜ ਦੇ ਮਤਾ ਆਖਨੇ ਗਲਾਨੇ ਪਰ ਅਪਨੇ ਬਾਹ ਲੇਈ
ਰਾਜੀ ਹੋਈ ਗੇਆ ਏ। ਕੁਨਤੀ ਗੀ ਮਤਾ ਕਸਾਲਾ ਤੇ ਇਸੈ ਗੱਲੈ ਦਾ ਏ,
ਪਰ ਤਸਨੇ ਮੂਆ ਇਕ ਬੋਲ ਵੀ ਨਈ ਕਹੁਆ। ਦੋਸ ਦੇਏ ਵੀ ਤਾਂ
ਅਪਨੇ ਜਨਮ ਦੇਨੇ ਆਲੀ ਦੇ ਸ਼ਬਾਹ ਕੁਸੀ ਦੇਏ, ਜੇਡੀ ਤਸੀ ਸੰਸਾਰੈ ਬੰਧਨੇ ਚ
ਪਾਇਧੈ, ਆਪੂ ਮੇਹਸਾਂ ਆਸਤੈ ਇਨੋਂ ਬੰਧਨੇ ਥਮਾਂ ਸੁਕਤ ਹੋਈ ਗੇਈ।

ਗ੍ਰਾਂ ਅੜੇਂ ਫਿਝੁ ਕੌਹ ਹਾ।

ਅਮਰੁ ਪਰਸੋ-ਪਰਸ ਹੋਈ ਗੇਦਾ ਹਾ। ਕੁਨਤੀ ਨੇ ਵੀ ਬੁਧੈ ਕਥਾ
ਚਚਨੇ ਆਸਤੈ ਅਕਖਾਏਂ ਤਗਰ ਭੁੰਡ ਲਮਕਾਈ ਲੈਂਦੇ ਦਾ ਹਾ। ਗਿਲਲੁਏ
ਉਧਰ ਤਸਨੇ ਤਾਣੀ ਲਾਈ ਵੀ ਹੀ।

ਰਹੈਵਨ ਗੈ ਅਮਰੁ ਗੀ ਗ੍ਰਾਂ ਆਲੀ ਵਕਖੀ ਸਮੀ ਧੂੜ ਉਡਰਦੀ ਲਵਦੀ।
ਕੋਈ ਸੁਆਰ ਪੂਰੀ ਤੇਜੀ ਕਨੇ ਘੋੜੇ ਗੀ ਦਵਾਡੇ ਆਰੈ ਕਰਦਾ ਹਾ।
ਕੁਨਤੀ ਨੇ ਵੀ ਘੋੜੇ ਗੀ ਦਿਕਖਾਵੈ ਅਪਨੇ ਘੋੜੇ ਵੀ ਲਗਾਮ ਬਿਚਿਚਾਵੈ
ਤਸੀ ਰਸ਼ਟੇ ਪਰਾ ਬਿਨਦ ਵਕਖੀ ਕਰੀ ਲੈਤਾ।

ਘੋੜ-ਸੁਆਰ ਕੋਲ ਓਂਦੇ ਗੈ ਰਕੀ ਗੇਆ। ਚਾਨਚਕ ਰਾਸਾਂ
ਖਚੋਝਾਂ ਤਾਂ ਹਿਨ-ਹਿਨ ਕਰਦੇ, ਘੋੜੇ ਦੇ ਅਗਲੇ ਦੋਏ ਪੈਰ ਤੈ ਹਤਥ
ਉਧਰ ਚਕੋਈ ਗੇ।

ਅਮਰੁ ਨੇ ਭਟ੍ਟ ਪਨਛਾਂਨੀ ਲੈਤਾ ਜੇ ਜਗਤੂ ਏ। ਜਮ੍ਹ ਸ਼ਹਰ
ਤਗਰ ਮਸ਼ਹੂਰ ਸਜਨਾਂ ਲਾਨੇ ਆਲਾ ਤੇ ਬਾਡੇ ਸਾਰਨੇ ਆਲਾ ਜਗਤੂ।

ਰਣ੍ਹ ਦੇ ਸਾਮਜੇ ਗੈ ਮਾਧਾ ਵੀ ਲੋਥੈ ਗੀ ਨੁਅਾਲੇਆ ਬੀ, ਤਸੀ
ਮਸਾਨ ਘਾਟ ਵੀ ਨੇਤਾ, ਚਿਖੈ ਪਰ ਵੀ ਰਕਖੇਆ ਤੇ ਰਣ੍ਹ ਨੇ ਅਪਨੇ ਹਥੋਂ
ਦਾਹ ਵੀ ਦਿੱਤਾ। ਕਿਨਾ ਚਿਰ ਓ, ਬਲਦੀ-ਬੁਖਦੀ ਚਿਖੈ ਪਾਸੈ ਬਿਟ
ਬਿਟ ਦਿਖਦਾ ਰੇਆ। ਫਿਰੀ ਵੀ ਤਸਨੇ ਏ ਨਈ ਹਾ ਸੋਚਾਗ ਜੇ ਹੁਨ
ਮਾਧਾ ਤਸੀ ਕਦੇ ਨਈ ਲਵਗ। ਰਣ੍ਹ ਸਵ ਕਿਸ਼ ਜਿਧਾਂ ਜਿਧਾਂ ਲੋਕ
ਗਲਾਂਦੇ, ਕਰੈ ਕਰਦਾ ਹਾ। ਓ ਕਿਧਾਂ ਸਚ ਮਨਦਾ ਜੇ ਏ ਨੁਅਾਡੀ ਮਾੜ
ਵੀ ਲੋਥੈ ਏ, ਜਿਸੀ ਤਸਨੇ ਦਾਹ ਦਿੱਤਾ ਏ। ਜੇ ਤਸੀ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਹੁਨਦਾ
ਤਾਂ ਓ ਮਾੜ ਵੀ ਲੋਥੈ ਕਨੈ ਗੈ ਚਮਕੇ ਦਾ ਰੌਹਦਾ। ਲੋਕ
ਸ਼ਿਕਕੀ ੨ ਹੁਣੀ ਜਦੇ, ਪਰ ਓ ਤਸੀ ਨਈ ਛੋੜਦਾ।

ਬਵਜਨ ਮਾੜ ਦੇ ਰੀਹਨਾ-ਏ ਬਚਾਰ ਵੀ ਓਂਦੇ ਆਸਤੈ ਓਪਰਾ ਹਾ।
ਜਦੂਂ ਦਾ ਜਸਮੇ ਦਾ ਹਾ ਇਕ ਪਲੈ ਆਸਤੈ ਵੀ ਮਾਂ ਓਦੀ ਅਕਖੀ ਓਲੈ
ਨਈ ਹੀ ਹੋਈ। ਓਂਦੇ ਆਸਤੈ ਤੇ ਸਾਰਾ ਸੰਸਾਰ ਗੈ ਓਦੀ ਮਾੜ ਦੇ ਚਗਿੰਦ
ਫਿਰਦਾ ਹਾ। ਮਾੜ ਵੀ ਗੋਦਾ ਵੀ ਬਾਣਨਾ ਤਸਨੇ ਭਾਖੀ ਹੀ, ਹੋਰ ਤਸੀ
ਕਿਸ਼ ਨਈ ਹਾ ਸੇਈ।

ਗ੍ਰਾਂ ਦੇ ਲੋਕ ਘਾਬਰੀ ਨੇਵੇ ਹੇ। ਓ ਸੌਚੈ ਕਰਦੇ ਹੇ, ਰਣ੍ਹ ਢਾਈ
ਮਾਰਿਧੈ ਨਈ ਰੋਆ ਤਾਂ ਏਦਾ ਬਚਨਾ ਵੀ ਕਠਨ ਏ।

ਜਨਾਨਿਧਾਂ ਟਲਲਾ ਤਾਰਿਧੈ ਆਇਆਂ ਤਾਂ ਰਣ੍ਹ ਦੇ ਕੋਲ ਬੇਇਧੈ ਰੋਨ

लगियां। रण्‌ की बी नईं रोएआ। ओ उन्दे बक्खी धूरियै
दिखदा रेआ, जियां आखै करदा होऐ, “मेरी माऊ ने हूने आई जाना
ऐ, तुस की रोऐ करदियां ओ ?”

फी सबनें सोचेआ, रण्‌ गी इकला छोड़ी ओडो, तां ओ जरूर रोई
पौग। ए सोचैयै ग्रां आले, कोटुऐ दे बार चली गे। इक दो जने वेर्इ
गे, बाकी परतोई आए।

कुन्तो नै अन्दर औंदे गै रण्‌ गी दिक्खेआ तां ओदा लूं-लूं भै
कन्नै कम्बी उट्टे आ। इकै नजरी च उसने सेई करी लेआ जे रण्‌
इस संसारै च घट्ट ऐ ते माया कच्छ मतर।

अजें रण्‌ ने कुन्तो गी नईं हा दिक्खेआ।

कुन्तो ने अपने गिल्लुऐ गी इक बक्खी टकाया ते आपूं रण्‌ कच्छ,
ओदे सामनै आई खड़ोती।

रण्‌ ने टडोई दिएं अक्खीं कन्ने उसी दिक्खेआ, ते दूऐ गै खिन,
जोरें इक अरड़ मारी—“अम्मां !”

कुन्तो ने उसी अपनी गोदा च सम्हाली लैता, ते आपूं बी उदे
कन्ने २ रोन लगी।

“पुतरा तेरी अम्बड़ी —

माड़ी जिद, माड़ी जान कुथें गेई ?

जाना हा तां मिगी बी लेई जन्दी कन्ने !

ओ ! मिगी सेई हृन्दा तां आऊं नगर नि जन्दी !

ओ माड़िए भैने, ओ माड़िए सखिए—

माड़िए जिदे माड़िए जाने—

पुतरा, तेरी अम्बड़ी, बच्चू तेरी अम्बड़ी !”

बाहर बैठे दे मानुएं गी साह फिरेआ जे रण्‌ बी रोआ। इक इक
करियै ओ अपने घरे गी परतोई आए।

कुन्तो ते रण्‌ किन्ना चिर उआं गै रोंदे रेह।

अमूर ने कुन्तो गी जदूं आंदा हा, तां ग्रां दिएं दूइएं जनानिएं
कन्ने माया बी उसी दिक्खन आई ही। पता नईं ओ केड़ी घड़ी ही जे
चुपचपीती ते धावरी दी कुन्तो गी इआं बजोआ हा जिआं इस ओपरे
ग्रां च ओदा अपना बी कोई ताही ऐ।

उस बेलै ओ धावरी दी इस करियै ही जे उसी भलेआं सेई
हा जे ओदा अपना साईं पूरा होई गेदा ऐ, ते ओ हुन इक भूठे
साईं दे बस पेई गेई ऐ। उस बेलै ओदा सोहल मन कलमाई
गेदा हा। ग्रां दियां जनानियां उसी बाहरा दा गै दिक्खा करदियां
हां, ओदी छड़ी नुआर गै। ओदे मनै च दबोई दियां सीकां ते अक्खीं
दे अंदर डकोए दे अत्थरूं कोई नईं हा दिक्खा करदा।

माया ने कुन्तो गी दिखदे गै जिआं दुखें दे ढूंगे सरै दी थाह
ने लेई लैती। दौनें इक दूए दी बक्खी दिक्खेआ, नजरां इक दूए
नजरें च गडोई गेइआं। पर दौनें, इक दूए गी कुआलेआ नईं।
कुआलने दी लोड बी के ही चुप चपीते गै दौनें जिआं इक दूए दे

दुख-सुखी बंडी लैने दी हामी भरी लैती ही ।

कुन्तो माया गी 'बोबो' आखियै कुआलदी ही ।

माया गी इयां बजोंदा जिअं कुन्तो उदे अपनै गै शरीरै दा
कोई अंग ऐ । नुआड़ी ओ सोह नईं ही खंदी । ओ जेल्लै वी
इक दूए कोल जंदियां, इक दूए दे कम्मै च हत्य पुआंदियां, इक दूए
दे ज्यारें गी प्यार करदियां, ते इक दूए कन्ने, गल्लां करदे-करदे
नईं हियां हुटियां ।

गल्लां करदे २ इक बारी माया गी खबरै के होई गेआ हा ?
स्हैवन गै ओ बड़ी गै भावुक होई गेई, कुन्तो गी घोडियै गलै कन्ने
लाया ते बुआसरन लगी,—“कुन्तो रसदी-बसदी धूस्ती ऐ मेरी,
परमेशर सबै किश दित्ते दा ऐ, कुसै वी गल्लै दी थोड नईं ।
पर मन खबरै की म्हेशां त्रेआए २ दा रौहदा ऐ ! तुगी दिक्खनीअं
तां त्रेह जिअं मुक्की जन्दी ऐ ।”

कुन्तो दियां अक्खीं अत्थहएं कन्ने भरोई गेइयां । माया दी
गोदा च सिर रक्खियै ओ डुसकन लगी । किश चिरै परैन्त ओ
चुप होई ते गलान लगी,—“बोबो, तेरे कच्छ सबै किश ऐ ते
मेरे कच्छ किश बी नईं । इयां लबदा ऐ जियां सबै किश खुसोई गेदा
ऐ ते जमदे गै ओपरे दे मुल्ल आई वस्सी दियां, जित्यें कोई जानूं-
पछानूं नईं । सवाए तेरे, बोबो मेरा कुन ऐ ? जे तूं नईं हुन्दी
तां चरोकने दा मौहरा खाई लैते दा हुन्दा !”

ए आखियै ओ परतियै डुसकन लगी पेई ही, ते माया ने उसी
परतियै गलै कन्ने लाई लैता हा ।

अज्ज कुन्तो गी माया दी इक-इक गल्ल चेतै आवा करदी
ही । उसी के पता हा जे चानचक्क गै माया जीवनै दी बत्ता च
उसी इकली छोड़ी जाग । इस चाली दुरी जाग जे उसी सूह वी
नईं लग्न देग । ओ हुन कुसगी अपने मनै दियां सुना करग ?
कोदी गोदा च सिर रक्खियै सबै करग ?

पहले ओ जदूं वी अपने झूठे साईं अमरू जां ओदी माऊ कशा
तंग पौंदी तां माया कोल आइयै अपने मना दी भडास कड्डी लैंदी
ही । हुन ओदी जिन्दू दा आसरमां कुन बनग ? ओदे अत्थरूं कुन
पूंजग ? उसी अपनी छाती कन्ने कुन लाग ?

कुन्तो गी भलेअं चेता हा जे माया ने केईं बारी उसी मौती दे
मूंआ कड्डेआ हा । छल्लो जदूं होई ही तां ओदे बचने दी कोई
मेद नईं ही रेई । सस्सू ने पुंबां वी तुआरी ओडेआ हा, पर माया
ने हिम्मत नईं ही छोड़ी; दिने-रातीं ओदे कच्छ बैठी दी रेई ।
अदूं के किश नईं हा कीता ओदे आस्तै उसने ? फी जदूं छल्ली होई
तां वी उसने उस्सै चाली परमेशर बनियै उसी बचाई लैता हा । माया
दियां कीती दियां ओ कियां भुल्लै ? पर उसने माया आस्तै के
कीता ? माया ने उसी सबै किश दित्ता, पर ओदे कोला लैता
कदैं वी किश नईं ।

हुन माया अपनी मानतं रण् उसी देई गेई ऐ ।

ओदे कशा इस मानता दी साम्ब वी होग जां नईं ?

कुन्तो इने सोचें च पेदी ही । उसने ध्याई लैता जे अपनी जान
देइयै वी ओ रण् दी पगोश करग ।

बड़ी मुद्दकलें कुन्तो दे हत्था रण् नै ग्राह खादा ।

फी बी ओ ताई-नुआईं, अगो-पिच्छे, अन्दर-बाहर तलोफदा
जे कुदरै अम्मां खड़ोती दी होऐ तां उसी कुआलै, पर माया दा
छोरा बी नजरी नईं पौदा । बैदे-खड़ोन्दे रण् दे अथरूं किरी-
किरी पौदे ।

कुन्तो दा बी उयै हाल हा । माया गी ओ अपनी बड़ी भैन
समझदी ही । ओदे आस्तै, माया दा हिरख गै ओदी जिन्दू दा
आसरमां हा । पर इस बेलै ओ रण् गी दिक्खी-दिक्खी अपना
दुख भुली गेई । ओ पूरा जतन करै करदी ही जे रण् दे
मनै दे अम्बरै पर दुखें दे जडे बदल घनोते दे न, कुसै चाली ओ
सम्बी जान, उड़ुरी जान ते उत्थें सुच्चा निम्बल होई जा ।

द्वाए रोज बड़ी पहर गै कुन्तो ने केइएं रोजें दे भुक्खे-तरेआए दे
घोड़ें, गवें ते बकरिएं गी धा-टाली आनियै पाई । बाड़िया दे
भल्ल ठीक कीते । सुकके दे गोटे साम्बियै इक बक्खी टकाए । बाईं
दा आपूं जाइयै पानी आंदा ।

कुन्तो दियां दोऐ कुड़ियां बी ओदे कोल उत्थें उठी आइयां ते
उनै बी रण् दा मन परचाने दा जतन कीता ।

संभ घरोई तां अपने खेतरें दा परतोंदे होई अमरू उत्थें
आया ।

“कुन्तो किन्ना क चिर रौहना तूं इत्थे होर ?”

“दिनबार तां करियै गै श्रौंग ।”

“पर किरत-किरेआ कराने जुडे पैसे ?”

कुन्तो चुप रेई ।

“ए लै—”

कुन्तो ने चुप-चपीते हत्थ अगड़ा करियै पैसे लेई लैते ।

“दस रपे न ।”

कुन्तो ने कोई जवाब नई दित्ता ।

ज्याने उस बेलै ग्रंगनै च बैठे दे हे । अमरू ने बल्ल
जनेइ गलाया, “हुन जिमीं कुन बाग रमालू दी ?”

“आऊं बांग—” कुन्तो ने नीमीं नजर कीते दे गै जवाब दित्ता ।

“के ? तूं बागी ? इककली ? बतोई ते नईं गेई दी ? कदे
कोई जनानी बी दिक्खी हल बांदे ?”

कुन्तो ने पलभर अमरू अल्ल दिक्खेआ । ओदिएं अकिलएं च
इक नमीं गै लो आई गेई ही—“जे कुसै जनानी ने अजें तोड़ी हल
नईं बाया तां हुन बाग । भला कम्म करने च के मीणा ऐ ?”

“पर तूं इककली.....?”

“माया बी ते इककली गै बाई-गुड़ी लैदी ही ।”

“ओ ते ऐ गै इककली ही, आपूं नईं बांदी तां के करदी ।”

“अम्मीं इककली बाई लैग ।”

“नईं, ओऊं तेरे कन्ने हत्थ पुआंग ।”

“नईं, तुस अपने पासै गै ध्यान देओ ।”

“तूं बड़ी खचरी बनै करनी एं कुन्तो—ए चाले खरे नईं ।”

“में जे किश करंग, रणू आस्तै ।”

“ते अपने आस्तै किश नईं करगी ।”

“मिगी अपनी चिता नईं ।”

“पर मिगी ते तेरी चिता ऐ ।”

“हुन मेरी चिता छोड़ी दे, नमीं लाड़ी आई जाग तां.....!”

“कुन्तो—।”

“गल्ल ते पक्की होई गेदी ऐ ।”

“तुगी के होई गेआ ? माया दा भूत गै ते नईं आई चमड़ेआ तुगी ।”

“इयां गै समझी लै । अउं तेरी खरीदी ते दी ऐं नईं, नां गै तूं मेरा साईं ए । मेरे साईं ने मिगी दिक्खेआ वी नईं ते पर-मेसरै गी प्यारा होई गेआ । की बी तूं मिगी लेईं आंदा । जियां रक्खेआ उयां अऊं गै रेईं । में मता किश जरेआ, बो हुन ए नईं जरी सकदी जे मेरे हुन्दे जीदे इस बे-आसरमें ऊयाणे दा सब्बै किश कोई खूसी लै ।”

“कुन्तो !” अमरू गरजेआ ।

“अऊं इयां कदें नईं होन देंग । जे तूं पंचैती च जाना चाहें तां जाई सकना एं । मेरे पासेआ तुगी खुल्ल ऐ, जो मरजी सै कर ।”

पलेआई दी बट्टे उपर पौंदे दिक्खियै, अमरू डौर-भौर होई गेआ ।

“कुन्तो तुम्हीं ते मिगी मता मजबूर कीता हा जे में व्याह करी लैं ।”

“धर्में पुन्ने ते व्याह होना गै लोडचदा । पर में ए कदूं आखेआ हा जे मिगी इन्हें ऊयाणे दे नरकैच सुट्ट । कुआरे रेइयै तूं ते अपने मनै दियां पूरियां करी लेइआं पर..... मेरी ते खैर परालब्द गै इयै जनेई ही, पर रणू दी जिम्मेदारी ते मेरे उपर ए । तूं के नुआड़ी जिमीं खूसी लैना चाहन्ना ?”

“अऊं ए जिमीं नईं साम्वंग तां ए बुडग वी कियां ?”

“मेरे कशा जित्थूं तगर होग अऊं करंग ।”

“तेरा दमाक फिरी गेदा लबदा ऐ ।”

कुन्तो चुप होई रेई । उसी भलेआं सेई हा जे ओदे अपने मनै च ते किश नईं पर अमरू दे मनै च खुट्ट भरोचे दा ए ।

अमरू ने इस बेलैं गल्ल बदानी खरी नईं समझी । ओ जे किश करना चाहंदा हा, पक्के पैरें करना चाहंदा हा । उसी इस गलैं दा जकीन हा जे जमीन कुदरै जाई नईं सकदी । ओदे बब्बै कशा खूसी ही रमालू ने, ते हुन ए खिन्नू पुड़ियो लैना ऐ उसने । अज्ज नईं तां कल, कल नईं तां परसों ।

अमरू पुल्ले पैरें उत्थुआं खिसकी आया ।

कुन्तो ने कोसे-कोसे अत्थरूं बगांदे इक लम्मा साहू भरेआ । अज्ज नवें बरें दे संगै-साकै दे तागे गी उसने इकैं खिनै च घिट्टी देइयै त्रोड़ी ओड़आ हा — पर नईं, ए सूतर मुण्डा गै कच्चा हा ।

ਅਜ ਉਸਨੇ ਅਪਨੇ ਭੁਠੇ ਸਾਈਂ ਗੀ ਬੇਪਡਦ ਕਰੀ ਉਡੇਆ ਹਾ।
ਮਨੈ ਚ ਧੁਖੈ ਕਰਦੀ ਅੰਮ੍ਰਗੁ ਦੇ ਲੋਰੇ ਹੁਨ ਬਾਹਰ ਜੀਮਾਂ ਨੁਆਰਨ ਲਗੇ ਹੈ।
ਰਣੂ ਵੀ ਬੇਦਨਾ ਨੇ ਆਵੇ ਮਨੈ ਚ ਸੁਤੇ ਦਾ ਸਤ ਜਗਾਈ ਓਡੇਆ
ਹਾ।

ਖੈਲੁ ਲੈਹੜਾ ਪੁਜਾ।

ਉਥਮਪੁਰਾ ਕਿਥ ਚੀਜਾਂ-ਵਸਤਾਂ ਲੇਇਂ ਆਵੈ ਕਰਦਾ ਹਾ। ਸਾਮਨੈ
ਗੈ ਅਵੇਂ ਕੋਹ ਉਪਰ ਕਿਸ਼ਨਪੁਰ, ਖਡਤਾ ਗਾਂ ਨ, ਫੀ ਕਿਗੜੈ ਤੌ, ਤੇ ਤੈ
ਟਪਿਧੈ ਅੰਮ੍ਰੇ ਮਨੇਹ।

ਖੈਲੁ ਜਾਤੀ ਦਾ ਝੂਮ ਏ ਤੇ ਏਠਲੇ ਪਦਰ ਰੌਂਹਦਾ ਏ।

ਓਦੀ ਬਰੇਸ ਹੋਗ ਕੋਈ ਪੈਤ੍ਰਿਏਂ ਬਰੇਂ ਦੀ। ਪਰ ਅੜੇ ਬਧਾਹ ਨਈ
ਹਾ ਹੋਏ ਦਾ, ਕੀ ਜੇ ਦੂਰ ਪਾਰ ਬੀ ਘਰੈ ਚ ਕੋਈ ਕੁਝੀ ਨਈ ਹੀ, ਜੇਦੈ ਬਦੂ
ਓ ਅਪਨਾ ਬਧਾਹ ਕਰਦਾ।

ਖੈਲੁ ਤੇ ਰਮਾਲੂ ਦਿਆਂ ਆਡੀਂ ਬਨੇ ਮਿਲਦੇ ਹੈ। ਬਚੈਰੈ ਕਚਛ ਥੋਡਾ
ਗੈ ਜਮੀਨ ਹੀ, ਮਸਾਂ ਘਮਾਂ'ਕ ਸਾਰੀ। ਇਕਲੀ ਜਾਨ ਹੀ, ਜਿਧਾਂ ਕਿਧ
ਗੁਜਰ ਹੋਈ ਜਨਦੀ ਹੀ। ਜਦੂ ਰਮਾਲੂ ਪਲਟਨੀ ਚਾ ਪਰਤੀਆ ਤਾਂ ਖੈਲੁ
ਚੌਂਦੇ-ਪੰਦਰੇ ਬਰੇਂ ਦਾ ਹਾ, ਪਰ ਬਡਾ ਰੰਗੀਲਾ ਤੇ ਸ਼ੌਂਕੀ। ਢੋਲਕ ਬਜਾਂਦ
ਹਾ, ਗਾਂਦਾ ਹਾ, ਤੇ ਸੁਨਨੇ ਆਲੇ ਮਸਤ ਹੋਈ ਜਨਦੇ ਹੈ।

ਢੋਲਕੁਆ ਉਪਰ ਓ ਤੁਲਲਰੀ ੨ ਗਾਂਦਾ:

“ਦੇਆਂ ਮਾਏ ਮੇਰਾ ਗੋਡਨੂ, ਮੈਂ ਮਹਾਂਗ ਗੁਹਨ ਜਾਨਾ,

ਲੋਭਾ ਮਹਏ ਦਾ !

ਦੇਆਂ ਮਾਏ ਮੇਰਾ ਗੋਡਨੂ ਮੈਂ ਮਹਾਂਗ ਗੁਹਨ ਜਾਨਾ,
ਲੋਭੀ ਮਹਏ ਦਾ !”

ਤੇ ਕਨ੍ਨੋਂ ਉਪਰ ਹਥ ਟਕਾਇੈ ਜੇਲੈ ਓ ਭਾਖ ਲਾਂਦਾ—

“ਲਮਿਆ ਬਾਡਿਆ ਕੀ ਲਾਨਾ,
ਬਹ-ਬਹ ਨਈ ਅਥੇ ਜੀ ਲਾਨਾ !”

ਤਾਂ ਸੁਨਨੇ ਆਲੇ ਦੇ ਮਨ ਢੋਲਕੇ ਖਾਨ ਲਗਦੇ।

ਤੇ ਜੇਲੈ ਓ ਰੇਆ ਲਾਂਦਾ—

“ਚਨਾ ਰਾਮਵਨੈ ਦਾ ਕੁਆਲੁ
ਠਿਹੁ ਲੁਗਾ ਤੇ ਭਜੀ ਗੇਆ ਬਾਲੁ
ਮਨਕਾ, ਓ ਪੇਆ ਤੇਰਾ—
ਤੇ ਨਖਰਾ ਓ ਗੇਆ ਤੇਰਾ—”

ਤਾਂ ਸਾਰੋਂ ਗੀ ਅਪਨਾ ਮਨ ਥਮਮਨਾ ਪੇਈ ਜਨਦਾ।

ਰਮਾਲੂ ਬੀ ਉਸ ਬੇਲੈ ਰਾਗ-ਰੰਗੇ ਦਾ ਬਹੁ ਸ਼ੌਂਕੀ ਨਈ ਹਾ।

ਖੈਲੁ ਗੀ ਓ ਅਪਨੇ ਕੋਲ ਬੁਆਲੀ ਲੈਂਦਾ। ਇਨੋਂ ਭਾਖੋਂ ਦੀ
ਲੁਆਣੀ ਤੇ ਬੈਲੈਂ ਚਾ ਬਾਹਰਾ ਆਨਾ ਉਦੇ ਬਸਤੈ ਚ ਨਈ ਰੌਂਹਦਾ। ਮਕਦਮੇ
ਬਾਜੀ ਦੇ ਬੇਲੈਂ ਤੇ ਅਪਨੀ ਜਿਮੀਂ ਥੋਨੇ ਦੇ ਪਰੈਨਤ ਕਈ ਬਰੇ ਰਮਾਲੂ ਦਾ
ਮਨ ਨਈ ਹਾ ਕੀਤਾ ਜੇ ਓ ਰਾਈ-ਵਾਈ ਕਰੈ। ਚੀਰੇ ਪਹਰ ਖੈਲੁ ਕਥਾ
ਮਾਖਾਂ-ਢੋਲਡੂ ਸੁਨਦਾ ਰੌਂਹਦਾ।

ਪਰ ਜਦੂ ਰਮਾਲੂ ਨੈ ਮਾਧਾ ਗੀ ਮੁਲੋਂ ਆਂਦਾ, ਤਾਂ ਖੈਲੁ ਇਕਲਾ
ਰੇਈ ਗੇਆ। ਰਮਾਲੂ ਵੀ ਬਹ-ਘੁਸ਼ੀ ਚ ਖੈਲੁ ਸਰੀਕ ਨਈ ਹਾ ਹੋਈ
ਸਕਦਾ। ਦੌਨੈਂ ਦੇ ਮਜਾਟੈ ਇਕ ਬਡੀ ਗੈ ਉਚੀ ਕਂਧ ਹੀ। ਰਮਾਲੂ
ਠਕਕਰ ਹਾ ਤੇ ਖੈਲੁ ਝੂਮ।

माया ने कदें खैरु दे सामनै भूषण नईं हा गुआड़ेआ पर इक बारी खैरु कन्ने उदी भत्त होई गेई ही । ओ भत्त ऐसी होई जे खैरु भाव लानी गै भुली गेआ ।

रमालू गी बड़ा चबात लगा जे खैरु ने भाव लानी की ओड़ी ओड़ी ऐ ? पर खबरै माया ने असली गल्ल कियां जानी लैती ? ए बचारदे गै उदा लूं-लूं परसे कन्ने सिज्जी गेआ । पर ओ बड़ी हट्ठ मनै आली जानी ही, परतियै कदें खैरु कन्ने ओदी भत्त नई होई ।

खैरु बी मना दा बुरा नईं हा । कच्चे कम्म उसने कदें कीते नई हे । बाहरा भाएं फरेत ते बैतल सेर्ई हुन्दा हा, पर शौंक छड़ा ढोलकुआ दी थापै उप्पर गीत गाने ते, कन्ने उप्पर हत्थ रकिलयै भाखां लाने दी गै हा । भाखें-गीतें दी लुआणी कन्ने गै ओदे स्वासें दी तंद जुड़ी दी ही । हुन माया दे हिरखै दी नईं खिच्च लगी जे जीने दा एका सरिस्त बी नईं रेआ । इकके भत्त होने करी नुआड़े मनै दे मौज-मेलैं च ज्वाह बी नईं रेआ । ऐसे भत्त होने करी नुआड़े मनै दे मौज-मेलैं च ज्वाह बी नईं गेई, भाखां घाल होई गेइआं, गीतें दे संगे घटोई गे । लोक हिरखै पेई गेई, भाखां घाल होई गेइआं, गीतें दे संगे घटोई गे । लोक हिरखै करदे न तां उदे मनै दे नापे खिड़दे न, पर ओदे मनै दा ते सर औ सुककी गेआ हा । उसने अपने हिरखै दा 'बी' जिस बाड़िया सुट्टैआ हा ओ ओदी अपनी नईं ही । ओदी हाड़ी-सौनी दा मालक कोई होर हा खैरु दे अपने मनै दी बाड़ी कमलाई गेई । नां उथें सौन बरेआ, न कौगनै दियां पुँगां गेइयां ।

एदे परैस्त जे कदें भाव लाई बी तां—

"लम्मियां बाड़िया बी लाना-
घर घर नईं असें जी लाना ।"

बाड़ी उदी अपनी नईं ही, तां के होआ ? ऐ ते लम्मी ही । कदें कुसै होर घर 'बी' नईं हा लाया उसने । कुसै कन्ने भत्त बी कियां हुन्दी ?

हुन उसने अपने मनै गी थम्मी लैते दा हा, ते इस्से गल्ला च संदोख करी लैते दा हा जे माया रमालू कन्ने सुखी घृहस्त बसाइयै रवै करदी ऐ पर जदूं रमालू दा काल होआ ते माया उप्पर जियां अम्बर गै त्रुट्टी पेआ तां खैरु गी बी घट्ट दुक्ख नईं हा होआ । उदे कलापे च जियां होर बी विस धुली गेई । गीतें दी लुआणी ते उच्चियां भाखां किश होर बी जहरी होई गेइयां । ओदे मनै च थमोए दा हाड़, बन्न त्रोड़न लगा, पर बन्न त्रोड़ियै जा कुत्त बक्खी ? माया अपने झ्याणे गिल्लुयै गी लैइयै इस दुनियां च कियां जी सकदी ऐ ? इयै सोची २ ओदे मनै दा हाड़ संगड़ोइयै आप-मुहारा पिच्छे परतीआ ते ओदी अक्खीं च आई समाया । सेजलै दी इक परत म्हेशां आस्तै अक्खीं च वेई गेई । भुल्ल भलेखै जदूं कदें ओदे होठ कम्बी पैंदे—

"लम्मियां बाड़िया बी लाना-
घर घर नईं असें जी लाना ।"

तां सेजलै दी ए परत मती घनी होई जन्दी ।

माया दी घर - घृहस्ती चलदी रेई ।

रणू मठोन्दा गेआ ।

खैरु खड़ते दे बहुं शाह दी हट्टी, दना बसोने आस्तै वेई गेआ ।

शाह होर कुसै गुजरी कन्ने गल्ले रुज्जे दे हे, ते मतियां लमकाई २

गल्लां करै करदे हे। उनें खैरु गी सिरै परा गंड तुआरदे दिक्खेआ
तां गलान लगे—“वै के नां तेरा ? कुत्थुआं आवै करना ?

“बजार गेदा हा शाह जी !” खैरु ने गंड इक बख्ती टकांदे
होई गलाया ।

“हैं, बजार गेदा हा ? तां मिलियै जाना हा, किन्ने क
दित लाई आयां !”

“चौं पजें दिनें परती आयां !”

“तां तुगी के पता होग — ?”

“कैदा ?”

“वै रमालू ठांकरै दी घरै आली — के नां हा नुआड़ा — ?”

“माया ?” खैरु दी खानेआ निकली गेई ।

“हां माया — नुआड़ा काल होई गेआ ।”

पहलै ते खैरु गी किश समझोआ गै नईं, पर किज खिनें परैन्त
तुआड़े रुआ गै जियां उडरी गे। कालजा गिटुईं आई गेआ ।
ए सच ऐ जां झूठ — इब्बी पुच्छते दी अह नईं पेई उसी । गंड
चुकियै, उनें पैरें गै अगड़ा दुरी पेआ ।

शाह ने तुआईं दिक्खेआ वी नईं ।

ओ फी गुजरी कन्ने लमकाई २ गल्लां करन लगा ।

“चन्न माडा चढे आ ई पहाड़े आलै किगरे,
उड्ही जंदे पैद्धी चन्ना रेई जन्दे पिजरे,

गांदे गांदे ते अत्थरुं बगांदे खैरु ने रात कट्टी ओड़ी ।
ओदे मनै च न्हेरा हा । सारे संसारै गी न्हेरे ने ग्रसी लैते दा हा
इस न्हेरे च ओ किन्नियां तलोफां मारदा ! ओदा चन्न तै म्हेशां
आस्तै मौती दे किगरे दे ओलै जाई छप्पे दा हा ।

दूए दिन ओ, दूए पहर घरा बाहर निकलेआ । ते खलाड़े दी
पछेला, अम्बै दी छामां हेठ आइयै बैई गेआ ।

उम बेलै उसी अपना आप ओपरा जन बजोआ करदा हा ।
उपरले पहरै गी जा करदा, नाग पलेसी रस्ता, आले-दुआले
लोकै दियां बाड़ियां, ते अम्बै दी छां, सबै किश उसी ओपरा ओपरा
लगै करदा हा ।

उसी चेता आया जे इस्सै अम्बै हेठ बैठे दे उसने पहली ते
खीरली बारी माया गी दिक्खेआ हा । उपरली बाईं पानी
खौदला होई जाने करी ओ हेठली बाईं पानी लैने गी जा करदी ही ।
खबिया ढावा घड़ा रक्खेदे ते सज्जे हत्थ बिन्ना फगड़े दे, पुआरें
पैरें तीली २ गेईं पुटदी ओ जा करदी ही । बाऊ कन्ने लिम्बां मुआं
उपर बिला-बिशैं करदियां हियां । सारी देह कसोई कसोई दी
ते लबक लिफै करदा हा । दबट्टा उडरै करदा हा ते ओ घड़ी २ उसी
सिरै उपर लै करदी ही । उसने दपट्टे दी साम्बा च दिक्खन
नईं होआ जे रुखै हैठ खैरु बैठे दा ऐ । पर खैरु गी पछानदे
चिर नईं लगा जे माया गै पानियां गी जा करदी ऐ । तुआर
पहले नईं ही दिक्खी दी भाएं पर फी बी पशानदा हा ।

पर ए के ? इहर माया कन्ने भत्त होई उहर उसने दिक्खदे
गै झुण्ड कड़ी लैता । पर पलौ च गै ए के होआ — ए कनेई भत्त

होई ? खैरु गी किश सेई नई होआ ।

अज्ज इस्मै अम्बै दी छामां हिठ ओ धा परतियै उग्गी आया हा ।
छां ओपरी बजोई, पर धा चिरै दा पशानू सेई होआ ।

उस्मै थासै पर ओदियां नजरां हियां जिददरा, कदें माया
पशारों पेरें आई ही । ओ दिखदा रेआ—दिखदा रेआ । स्हैवन
गे रणू उद्दरा ओदा लब्बा ।

“रणू गे ?” खैरु दे ओठ बिद क हल्ले ।

रणू खैरु कोल पुज्जा तां रुकी गेआ ।

“तूं कदूं आया नगरै दा, चाचूं ?”

‘कल रातीं आया हा !’

फी दोए चुप होई गे । दोनें गी किश सुजजै नई हा करदा
जे गल्ल कियां लान । दोए इक दूए गी दिखदे जा करदे हे ।

बीर—रणू व्याणा हा, गलान लगा :

“अम्मा ने अदूं रातीं गलाया हा जे खैरु गी जाइयै आख ओ
डागदारै गी सद्दी आनै ।”

खैरु दी अक्खी इक लो बलदी सेई होई, ते गला भरी आया,
‘मेरा नां लेआ हा माया ने ?’

“हां, पर चाचूं तूं नगर गेदा उठी हा ?”

“फी कुन गेआ हा डाकदारै गी सद्दन ?”

‘कोई नई । कुन्तो मासी बी अमरु कन्ने नगर गेई दी ही ।
अऊं तौं नई टप्पी सकेआ । उस वेल्लै तविया बड़ियां लांजां पवै
करदियां हियां ।

फी रणू ने सारी गल्ल उसी सुनाई । मुनांदे २ उदी गलानी
भारी होई गेई, ते अक्खीं चा अथरूं किरन लगे । खैरु, साह रोकियै
सब सुनदा रेआ, ओ व्यारो कन्ने व्याणा कियां बनी जन्दा ?

ए सुनियै उसी संदोख होआ जे कुन्तो उदे कन्ने रवै करदी ऐ ।

“हल कुन वाग, इयै ते दिन न बाहने दे ?” उसने रणू गी
पुच्छेआ ।

“मासी गला करदी ही जे उयै सब किश करग ।”

खैरु गी माया ते कुन्तो दा हिरख-सरबंध सेई हा ।

किश चिरै परैन्त रणू चली गेआ ।

उस्सै दिन संबां वेल्लै, कुन्तो कन्ने ओदी मलाटी होई । उसते कुन्तो
गी आखेआ जे ओ आखै तां रणू दी जिमीं ओ बाई देए ।

कुन्तो ने ओदी गल्ल सुनी तां बिद क मुस्काई । फी गलान लगी,
“ए कियां होई सकदा ऐ ?”

कुन्तो ने फी गलाया, “ए ठौकरें दा ग्रां ऐ ते दूए, रणू दी
जिमीं उपर सरीके दी नीत खरी नईं । इस जिमीं उपर पता नईं
के किश होग ? तूं रणू दे सरीके गी दिखी सखागा ? नहक
तमशाना ऐ उनेंगी । ठौकरें दी जिमीं दा इक नीच कामा मालक
बनी जा—ते सरीके दे दिखदे-सुनदे ?”

गल्ल आखियै कुन्तो गी बजोआ जे उसने नामनासब गल्ल आखी
ऐ, पर गल्लां ते ओ सच्चियां हियां । होर गलांदी बी के ?

ओ ते उत्थुआं टुरी गेई, पर खैरू दा मन जियां कुसै दोफाड़ करी ओडेआ। ओ अपनी उकात भुल्ली बैठे दा हा। उसी चेता गै नईं हा रेआ, जे ओ इक अच्छूत ऐ। इक नीच जाति च जरम लैता ऐ उसने। हमदर्दी दी जड़ी वस्त ओ बिना मुलें देना चांहदा ऐ, उसी ओ बी देने दा अखत्यार नईं।

अमरू गी इस गल्लै दा ते पूरा जकीन हा जे रमालू दी जमीन परतियै ओदे हृथ आई जानी ऐ। पर कुसै ऐसे उपा दी लोड़ ही जे सप्त बी मरी जन्दा ते सोटा बी नईं भजदा।

कुन्तो गी रणू कच्छ रौहदे मतै रोज होई गे है। छल्लो ते छिल्ली—दोऐ कुड़ियां बी ओदे कन्ने गै रौहदियां न। अमरू सोचदा—“ओ पहले बी ते मेरे कच्छ कदें नईं रेई। उदी देह मेरे कोल ही भाएं, बी मन खबरै कुत्थें कुत्थें उडुरदा रौहदा हा? ए ते अऊं गै हा जिसने उसी नविकयै रख्वे दा हा। पर मिगी नईं हा पता जे ओ माया ते रणू दी इन्नी सक्की निकलग। सारा घर साम्बी लैता दा ऐ उसने। माया कशा बी मता कम्म करदी ऐ ओ। सुनेआ ऐ जे हुन हल बी बाहूग। बतोई गेदी ऐ, होर के!”

अमरू हर बेल्लै इने सोचें च गै हुब्बे दा रौहंदा।

अज्ज बी ओदियें सोचें दी रींग लम्मी होई जा करदी दी।

उसी बचार आवै करदा हा जे कुन्तो कशा हुन जिमीं खूसनी सखल्ली गल्ल नईं। इसै करियै उसने साक-सरबंध बी ओड़ी लैते न। जनानी मुआनी गै सेई, पर ग्रां आले पक्ख ते ओदा गै करगण। लैने दे कुदरै देने गै नईं पेई जान। कोई ऐसी

चाल चलनी चाई दी ऐ जे सहजें सहजें सारा कम्म होई जा। की उसी ख्याल आया जे की नईं पंचती च गल्ल चुपकी जा? किश दई-दुआइयै कमेटें गी गंडी लैता जा। छे घमाएं दी गल्ल ऐ, सक्खर खर्च कीते दा बी अर्थ गै लगग।

अमरू इने सोचें च पेदा हा, जे बाहर किश रीला सनोचा। जियां जनानिएं दी जफकी लग्गी दी होए। गाली-मुआलीं बी सुनियां। रीला किश होर बदेआ तां गैली च आइयै उसने दिक्खेआ जे ओदी मां कुन्तो गी चोटी दा फगड़ियै ते धरीड़ियै आना करदी ऐ, ते दूइआं जनानियां ए दिक्खी करी रीला पा करदियां न। कईं चबात बुज्जै करदियां न, ते कईं हस्सै करदियां न।

“कुत्ती, पेरनी, सत्तखसमी! अपना घर छोड़ियै चली गेई यारें कन्ने फँमलने गी। कदूं दा यार बनाए दा ऐ उसी?”

“बे—!” अमरू माऊ दियां गल्लां सुनियै दना अगड़ा होआ, “गल्ल के होई ऐ? ए के करै करनीं एं?”

“तूं पिच्छे हट!” अमरू दी माऊ ने कुन्तो गी जोरें लत्तै दी टकाई ते चोटी फगड़ियै फी धरीड़ेआ। कुन्तो करलाई। ओदी अरड़ सुनियै अमरू कम्बी गेआ।

कुन्तो गी छिड़ा लगा, पर चोटी ते ओदी सस्यू दे हृथै च ही। अमरू दी नजर ओदे सिरै उप्पर जाई गडोई, बाल इस चाली पटोऐ दे है जे उन्दे चिट्ठे मुण्ड बी लब्बन लगे है। ओदे कशा दिक्खन नईं होआ। उसने पिटु परती लेई।

ओदी माऊ ने गलाया,

“तेरे नेह तले हु इनें गस्तिएं गी नविकयै नहै रक्खी सकदे । औं
इन्दे पोतड़ें दी बाकफ आं । बडलै मिगी मेलो ने दस्सेआ जे रातीं
इसी जगतु मिलने गी आए दा हा ।”

जगतु ! अमरू ने जगतु दे बारे च से किश सोचेआ गै नहै हा ।
तुआईं कुन्तो ने ओदी माऊ गी जोरै कन्ने परे सुट्टेआ ते आपूं
करलाई । सस्स इक पासै भल्लै उप्पर जाई पेई ते कुन्तो करलाई २
गलान लगी, “झूठे दोस लाइयै तुस मिगी हुन इस घरै च नहैं
आनी सकदे । मेरे घरै आला जित्थें नहैं, में उथें नहैं रौहना ।”

“घरै आला नहैं, पर अमरू ते ऐ !” सस्सू नै भल्लै परा उठदे
उठदे गलाया ।

“में ओदी दुआल नहैं । ए मेरे कन्ने इन्ना चिर खेह खाइयै
हुन दूआ व्याह जुडान लगा ऐ ।”

“बड़ेआई दिक्खो सत्तखसमी दी । तेरै बट्टै असें अपनी कुड़ी नहैं
दित्ती दी ।”

“मिगी दित्ती ही ?”

“तेरे बट्टै ते दित्ती दी ऐ ।”

“जिसी दित्ती दी ऐ, उसी पुच्छो जाइयै ।”

“उस्सै तेरा चूंडा असेईं कगड़ाए दा ऐ ।”

“हुन लाई दिक्खो हां कोई जना हृथ छूण्डे गी ।” कुन्तो ने सिहनी
जन अगड़े होइयै गलाया, ‘जे हृथ गै नि बड़ी ओड़े तां आखेओ ।’

“तूं हृथ तोड़ी पुज्जी पेई ए !” अमरू दी माऊ ने इक बड़ा सारा
बट्टा चुक्की लैता, “अऊं हूनै तुगी थां लानी आं ।”

‘बे— !’ अमरू ने अगड़े होइयै माऊ दे हृथ लैते दो बट्टा इक
बक्खी सुटाई ओडेआ ते आखेआ—“बे, ग्रां गी तमाशा की दस्सनी
एं ? जा कुन्तो तुम्मी । जे नहैं औना चांहदी सहाड़े तां नहैं सेईं ।”
उस बेल्लै उसने गल्ल बदानी खरी नहैं समझी । जगतु दा नां
सुनियै बी ओ किश भै खाई गेदा हा ।

कुन्तो किश चिरै आस्तै उआं गै तमशी दी खड़ोती दी रेई ।
बालैं दिएं खिच्चें कन्ने घयाड़ी अजें बी तत्ती सेई होए करदी ही ।
ते अक्खीं चां पानी बगा करदा हा । भरमां ते ओठ कम्बै करदे हे ।
फी ओ जननिएं पासै दिक्खे बिजन परतोई गेई ।

अमरू ने घर आइयै माऊ गी पुच्छेआ, ‘जगतु आली गल्ल
सच्च ऐ ?’

“ते होर नहैं ? मेलो ने मेरे कन्ने झूठ आवना हा ?”

“ए कियां होई सकदा ऐ ?”

“पहलैं दी गै सार रली दी होनी ऐ दौनें दी ।”

“ए नहैं होई सकदा । कुन्तो इयै नेहै नहैं ।”

“तेरे जनेह झुड़हुएं गी के पता ?”

अमरू निक्खर खाइयै चुप होई रेआ ।

चिरै परन्त उसने गलाया;

“गल्ल माड़ी होई ।”

कुन्तो गी जेलै अमरू दी मा चूण्डेआ फगड़ियै लैई गैई तां
रणू उथें गै हा । बचैरे गी होर ते किश नहैं सुज्जा, नस्सियै

ਹਿਠਲੇ ਪਟਾਰ ਖੈਲ੍ਹ ਕਚਢ ਗੇਆ ਤਠੀ ।

ਕੁਨਤੋ ਲਡਿਧੈ ਪਰਤੀਈ ਤਾਂ ਦਿਕਖੇਆ ਜੇ ਰਣੂ ਤੇ ਖੈਲ੍ਹ ਅੰਗਜੈ ਦੀ
ਇਕ ਛੂਕਾ ਨਿਸ਼ਮੀਆਨ ਹੋਇਧੈ ਬੈਠੇ ਦੇਨ । ਪਰ ਉਸਨੇ ਛੜਾ ਦਿਕਖੇਆ
ਗੰ ਤੁਨਵੇ ਪਾਸੈ । ਬਿਜਨ ਕਿਥ ਆਖੇ ਗਲਾਏ ਕੋਠੁਆ ਵੇ ਅਨਦਰ
ਬੜੀ ਗੋਈ ਜਿਤਥੋ ਓਦੇ ਤੈਵੈ ਭਧਾਏ ਬੈਠੇ ਵੇ ਤੁਸਕੈ ਕਰਦੇ ਹੋ ।

ਕੁਨਤੋ ਵੀ ਓਪਰੀ ਸੁਆਰ ਦਿਕਖੈ ਰਣੂ ਤੇ ਖੈਲ੍ਹ ਦੀਏ ਇਕ
ਫ੍ਰੋਏ ਪਾਸੈ ਦਿਕਖਨ ਲਗੇ । ਦੌਨੋਂ ਗੀ ਕਿਥ ਸੁਜੜੀ ਨਈਂ ਹਾ ਕਰਦਾ । ਕੁਨਤੋ
ਵੇ ਅਨਦਰ ਜਾਈ ਬੱਨੇ ਵੇ ਕਿਥ ਚਿਰੈ ਪਰੈਨਤ ਖੈਲ੍ਹ ਨੇ ਗਲਾਧਾ, “ਰਣੂ, ਤੁਂ
ਅਨਦਰ ਜਾ । ਓ ਰੋਏ ਕਰਦੀ ਹੋਗ ।”

ਰਣੂ ਪੁਲੈ ਪੈਰੋਂ ਅਨਦਰ ਗੇਆ ਤਠੀ ।

ਖੈਲ੍ਹ ਬਲਲੋ-ਬਲਲੋ ਗੈਲਲੀ ਚ ਆਧਾ, ਓ ਮਨੋਮਨ ਕਿਥ ਘਟੈ ਕਰਦਾ ਹਾ ।
ਉਸੀ ਅਪਨੇ ਆਪੈ ਕਥਾ ਘੂਣਾ ਹੋਏ ਕਰਦੀ ਹੀ । ਪੁਅਂ ਪਰ
ਉਸੀ ਅਪਨੀ ਵੇਹ ਭਾਰ ਜਨ ਬਜੋਆ ਕਰਦੀ ਹੀ । ਰਮਾਲੂ ਤਵਾ ਮਿਤਰ
ਹਾ । ਦੌਨੋਂ ਇਕ ਫ੍ਰੋਏ ਵੀ ਰੋਹਲੀ-ਰੋਹਲੀ ਸੋਏ ਵੇ ਦਿਨ ਤੇ ਸ਼ਾਲੇ ਦਿਯਾਂ
ਕਈ ਰਾਤਾਂ ਕਟ੍ਟੀ ਦਿਯਾਂ ਹਾਂ । ਤੈ ਮਾਧਾ—ਓਦੀ ਸੂਰਤ ਉਸਨੇ ਅਪਨੇ ਮਨੈ ਵੇ
ਮੰਦਰੈ ਚ ਥਾਪੀ ਵੀ ਹੀ । ਤੇ ਹੁਨ ਬੀ ਓ ਸੂਰਤ ਉਸੈ ਚਾਲੀ ਸਜ਼ਜੀ-
ਸੁਆਰੀ ਵੀ ਉਸੈ ਥਾਰਾ ਰਖੋਈ ਵੀ ਏ । ਰਣੂ—ਰਮਾਲੂ ਤੇ ਮਾਧਾ
ਵੀ ਮਾਨਤ ! ਖੈਲ੍ਹ ਵੇ ਅਪਨੇ ਕੋਲ ਏ ਮਾਨਤ ਨਈਂ ਸੇਈ, ਛਿੜੈ
ਬੇਇਧੈ ਵੀ ਤੇ ਓ ਦਿਕਖ-ਮਾਲ ਕਰੀ ਸਕਦਾ ਏ ਇਸ ਮਾਨਤੈ ਵੀ, ਪਰ
ਉਸੀ ਇਨਨਾ ਵੀ ਖਤਧਾਰ ਨਈਂ । ਲੋਕ ਆਖਿਗਣ ਠੀਕਰੇ ਵਾ ਜਾਤਕ
ਫ੍ਰੋਏ ਵੈ ਬਸ ਜਾਈ ਪੇਆ ਏ । ਮੇਰੇ ਗੋਚਰੈ ਨਈਂ ਪੀਨ ਵੇਅ੍ਰੇ,
ਆਪੂ ਗੈ ਸਾਮਵੈ ਕਰੋ । ਪਰ ਏ ਕੀਧਾਂ ਹੋਈ ਸਕਦਾ ਏ ? ਰਣੂ
ਆਸਤੈ ਜਿਧਾਂ ਕੁਨਤੋ ਵਾਂਦੇ ਫੁੜਾਂ ਚੁਨਾ ਕਰਦੀ ਏ, ਕਿਨਾਕ ਚਿਰ

ਚੁਨਦੀ ਰੀਹਗ ? ਉਸੀ ਕੀ ਨਈਂ ਖਤਧਾਰ ਜੇ ਓ ਆਪੂ ਕਿਥ ਕਰੈ ? ਇਸ
ਕਰਿਧੈ ਜੇ ਓ ਨੀਚ ਜਾਤੀ ਦਾ ਏ ? ਡੂਮ ਏ ?

“ਮਿਗੀ ਡੂਮ ਕੁਨੇ ਬਨਾਧਾ ?”

ਪਰ ਏ ਸੁਆਲ ਓ ਕੋਵੇ ਅਗੋਂ ਰਖੈ ? ਕੁਨ ਏ ਜੋ ਇਸਦਾ ਜਵਾਬ
ਦੇਂਦੇ ਸਕਦਾ ਏ ?

ਓ ਘਰ ਪੁਜਾ । ਸੁਰੂ ਚਮਧਾਰੈ ਉਸੀ ਸਨੇਅਾ ਦਿਤਾ ਜੇ ਕੋਈ
ਘੋੜ ਸੁਆਰ ਆਏ ਦਾ ਹਾ । ਆਖੈ ਕਰਦਾ ਹਾ ਜੇ ਜਗਤੂ ਨੇ ਉਸੀ ਕਲ
ਸ਼ੁਹੰਸਹ ਸਵੇ ਦਾ ਏ ।

●

ਰਣੂ ਕੋਠੁਆ ਵੇ ਅਨਦਰ ਗੇਆ ਤਾਂ ਦਿਕਖੇਆ ਜੇ ਕੁਨਤੋ ਥਮ੍ਮੀ ਦੇ
ਸ਼ਹਾਰੈ ਹਤਥੈ ਤਥਾਰ ਸਿਰ ਟਕਾਇਧੈ “ਤ੍ਰਪ-ਤ੍ਰਪ” ਅਤਥਲੁ ਬਗਾਈ ਜਾ ਕਰਦੀ
ਏ । ਗਿਲ੍ਲੂ ਖਟ੍ਟੈ ਤਥਾਰ ਸੇਈ ਗੇਦਾ । ਛੁਲੀ ਓਦੇ ਬਕਟਟੁਆ ਵੀ
ਇਕ ਕਨੀ ਫਗਡਿਧੈ ਖਿਚਵੈ ਕਰਦੀ ਏ, ਤੇ ਛੁਲੀ ਦੂਰ ਬੇਇਧੈ ਮਾਊ ਗੀ
ਰੋਵੈ ਦਿਕਖੀ-ਦਿਕਖੀ ਆਪੂ ਵੀ ਰੋਂਦੀ ਜਾ ਕਰਦੀ ਏ ।

ਰਣੂ ਡੌਰ-ਮੌਰ ਹੋਏ ਦਾ ਕਿਥ ਪਲ ਉਥੋਂ ਖੜੋਤਾ ਰੇਆ, ਕੀ ਬਲਲੋ ਕ
ਬੁਆਸਰੇਆ, “ਮਾਸੀ !”

ਕੁਨਤੋ ਨੇ ਉਸ ਬਕਥੀ ਨਈਂ ਦਿਕਖੇਆ ਤੇ ਕਿਥ ਖਿਨੋਂ ਪਰੈਨਤ ਬਿਜਨ
ਦਿਕਖੇ ਗੈ ਬੋਲਲੀ, “ਰਣੂ, ਛੁਲੀ ਗੀ ਬਾਹਰ ਲੇਈ ਜਾ ।”

ਰਣੂ ਨੇ ਛੁਲੀ ਗੀ ਬਾਮਾ ਵਾ ਫਗਡਿਧੈ ਟੁਆਲੇਆ । ਤੁਸਕਦੀ ੨ ਓ
ਤਵੀ ਤੇ ਰਣੂ ਕਨੇ ਬਾਹਰ ਆਈ ਗਈ ।

ਕੁਨਤੋ ਹੁਨ ਉਥੋਂ ਗੈ, ਜਿਤਥੋ ਓ ਖੜੋਤੀ ਵੀ ਹੀ, ਥਮ੍ਮੀ ਕਨੇ

ਡਾਸਨਾ ਲਾਈਂ ਬੇਈ ਗੇਈ। ਤਸੀ ਰਾਤਿਂ ਜਗਤੁ ਦੇ ਆਨੇ ਵੀ ਗਲ ਚੇਤੈ
ਆਈ ਤਠੀ।

ਗਿਲ੍ਹੁ ਰਾਤਿਂ ਚਾਨਚੜਕ ਰੋਈ ਪੇਆ ਹਾ, ਤੇ ਉਸੀ ਚੁਪਕ ਕਰਾਨੈ ਆਸਟੈ
ਉਸਨੇ ਮਮਾਂ ਤਦੇ ਸੁਆਂ ਚ ਪਾਯਾ ਹਾ। ਗਿਲ੍ਹੁ ਸੇਈ ਗੇਆ ਤੇ ਓਦੀ ਬੀ
ਅਕਥ ਲਗੀ ਗੇਈ। ਪਰ ਮਮਾਂ ਗਿਲ੍ਹੁਏ ਵੇ ਸੁਆਂ ਚ ਗੈ ਪੇਵਾ ਰੇਆ।
ਉਸੈ ਬੇਲੈ ਕੁੱ ਬਲਿੰ ਜਨੇਈ ਭਿਤ ਠੋਰੇਆ। ਓਦਾ ਤਾਹ ਨਿਕਲੀ
ਗੇਆ। ਇਸ ਬੈਲੈ—ਕੁਨ ? ਕੇ ਕਰਨ ਆਯਾ ਏਂ ਕੋਈ ? ਓਦੀ ਕਿਥ
ਸ਼ਾਚੀ ਨਈ ਸਕੀ।

ਭਿਤ ਠੋਰਨੇ ਵੀ ਬੁਆਜ ਪਰਤਿਧੀ ਆਈ।

ਮਮਾਂ ਗਿਲ੍ਹੁਏ ਵੇ ਸੁਆਂ ਕਡੂਧੀ ਕੁਰਾਂ ਠੀਕ ਕੀਤਾ ਤੇ ਤਡੂਧੀ ਬੇਈ
ਗੇਈ। ਕੀ ਬਾਰੀ ਫੀ ਬੇਲੈ ਜਨੇਈ ਭਿਤ ਠੋਰਨੇ ਵੀ ਬੁਆਜ ਆਈ।

ਰਣ੍ਣ, ਛਲ੍ਹੀ ਤੇ ਛਲ੍ਹੀ ਪਰਲੀ ਚੂਕਾ ਸੁਰ੍ਤੀ ਵੇ ਹੈ।

ਓਦੀ ਤਠੀ। ਦਰਵਾਜ਼ੀ ਕਚਢੀ ਆਈ, ਪੁਚਛੇਆ,—“ਕੁਨ ਏ ?” ਪਰ ਕੋਈ
ਬੋਲੇਆ ਨਈ।

ਭਿਤ ਠੋਰਨੇ ਵੀ ਬੁਆਜ ਪਰਤਿਧੀ ਆਈ।

ਓਦੇ ਮਨੈ ਵੀ ਧੱਡਕੀ ਬਦੀ ਗੇਈ। ਹੁਨ ਓਦੀ ਕੇ ਕਰੈ ? ਸੌਂਗਲ
ਖੋਲੈ ਜਾਂ ਨਈ ? ਇਸ ਬੇਲੈ ਕੁਨ ਏ ਓਦੇ ਕਚਢੀ ਆਨੇ ਆਲਾ ?
ਅਮੁਲ ਗੈ ਤੇ ਨਈ ਕੁਦਰੈ ਵੇ ਵੀ ਚੋਰੀ ਆਯਾ ? ਏ ਸੋਚਿਧੀ ਉਸਨੇ
ਸੌਂਗਲ ਖੋਲੀ ਓਡੀ। ਤਥ੍ਵੇਂ ਅਮੁਲ ਨੇਈ ਹਾ। ਗੁਪਕ ਨਹੇਰੇ ਚ
ਅਪਨੇ ਸਾਮਨੇ ਇਕ ਓਪਰੇ ਮਾਨੁ ਗੀ ਦਿਕਿਖੀ ਓਦੀ ਕਮੀ ਤਠੀ। ਓਦੀ
ਗਲਾਨੀ ਬੰਦ ਹੋਈ ਗੇਈ। ਓਪਰੇ ਮਾਨੁ ਨੇ ਕੁਨ੍ਤੀ ਗੀ ਚੁਪ
ਦਿਕਿਖੀ ਗਲਾਯਾ,

“ਫਰੇਓਂ ਨਈ, ਅੜੁਂ ਜਗਤੁ ਆਂ। ਨਹੇਰੇ ਚ ਰਸਤਾ ਭੁਲ੍ਹੀ ਗੇਆਂ।”

ਕਿਨੈ ਚ ਕੁਨ੍ਤੀ ਵੇ ਸਾਮਨੈ ਤਡੂਂ ਦਾ ਦਿਗ ਆਈ ਗੇਆ, ਜਿਸ ਬੇਲੈ
ਓਦੀ ਹੋਸ਼ੀ ਚ ਆਈ ਹੀ ਤਾਂ ਜਗਤੁ ਵੇ ਪਟ੍ਟੈ ਉਧਰ ਓਦਾ ਸਿਰ ਰਖੋਏ ਵਾ
ਹਾ। ਹੁਨ ਬੀ ਓਦੇ ਮਨੈ ਗੀ ਉਸੈ ਚਾਲੀ ਧਾਕਾ ਲਗਾ, ਤੇ ਜਿਧਾਂ
ਹੁਨ ਕੀ ਓਦੀ ਜਗਤੁ ਵੇ ਪਟ੍ਟੈ ਉਧਰਾ ਸਿਰ ਚੁਕਿਧੀ, ਛਿੱਡੈ ਹੋਈਧੀ ਬੇਈ
ਗੇਈ ਹੋਏ।

ਜਗਤੁ ਨੇ ਕੁਨ੍ਤੀ ਗੀ ਇਨਾ ਚਿਰ ਚੁਪ ਦਿਕਲੇਆ ਤਾਂ ਪਰਤਿਧੀ
ਗਲਾਯਾ, ‘ਨਹੇਰਾ ਮਤਾ ਏ, ਘੋੜਾ ਬੀ ਟਪਲੀਓਈ ਗੇਆ ਏ। ਇਦਾ ਲੰਗੈ
ਕਰਦਾ ਹਾ, ਸੋਚੇਆ ਬਿਨਦ ਲੋ ਹੋਨੇ ਤਗਰ ਇਤ੍ਥੇ ਗੈ ਠਹੂਰੀ ਜਾਂ। ਕੁਤੈ ਰਸਤੇ
ਵਾ ਕਰਸਤੈ ਨਈ ਪੇਈ ਜਾਂ !’

ਜਗਤੁ ਵੀ ਗਲ ਸੁਨਿਧੀ ਕੁਨ੍ਤੀ ਇਧਾਂ ਖਡੀਓਈ ਰੇਈ ਜਿਆਂ, ਓਦੇ
ਕਚਢੀ ਆਖਨੇ ਗਲਾਨੇ ਜੋਗਾ ਕਿਥ ਨਈ ਹਾ ਰੇਆ। ਖੀਰ ਓਦੀ ਕਿਥ
ਨਈ ਆਖੀ ਸਕੀ ਤਾਂ ਉਸਨੇ ਬੇਲੈ ਕ ਭਿਤ ਬੇਡਨਾ ਲਾਏ।

ਕੁਨ੍ਤੀ ਗੀ ਭਿਤ ਬੇਡਦੇ ਦਿਕਵੀ ਜਗਤੁ ਨੇ ਗਲਾਯਾ :

‘ਜੇ ਤੂਂ ਆਖਨੀ ਏਂ ਤਾਂ ਦੁਰੀ ਜਨਨਾਂ, ਪਰ ਇਕ ਮਾਨਤ ਤੇ ਰਕਵੀ
ਲੈ ਮੇਰੀ।’ ਏ ਆਖਦੇ-ਆਖਦੇ ਉਸਨੇ ਖੀਸੇ ਚ। ਇਕ ਕੀਮਤੀ ਦੋ-ਲਡਿਆ
ਹਾਰ, ਕਿੰਨੇ ਵੀ ਇਕ ਜੋਡੀ ਤੇ ਇਕ ਟਿਕਕਾ ਕਹੇ ਆ ਤੇ ਕੁਨ੍ਤੀ ਵੇ ਅਗ੍ਗੇ
ਕੀਤਾ। ਕੁਨ੍ਤੀ ਟਊ ਹੋਈ ਦਿਕਵੀ ਰੇਈ। ਹਾਰ - ਕਿੰਨ - ਟਿਕਕਾ !
ਮਨੈ ਚ ਆਯਾ ਜੇ ਹਲਥੀ ਚ ਲੇਇਧੀ ਦਿਕਵੀ ਤਨੇ ਗਹਨੇਂ ਗੀ।

ਜਗਤੁ ਨੇ ਓਦੇ ਮਨੈ ਵੇ ਖਤੋਲੇ ਗੀ ਸਮਝਦੇ ਹੋਈ ਗਲਾਯਾ, “ਇਨ੍ਹੋਂ
ਗਹਨੇਂ ਗੀ ਅਪਨੇ ਕੋਲ ਰਕਵ, ਜਡੂਂ ਲੋਡ ਪੀਂਗ ਲੇਈ ਜਾਂਗ। ਬਰਤਨੇ
ਹੋਂਗਨ ਤਾਂ ਬਰਤੀ ਲੈਯਾਂ।”

ਅਜੇਂ ਤਗਰ ਕੁਨ੍ਤੀ ਮਨੈ ਵੇ ਖਤੋਲੇ ਗੀ ਰੋਲ ਦੇਆ ਕਰਦੀ ਹੀ,

ਪਰ ਜਗਤੁ ਦੇ ਮਜਨ੍ ਦਾ ਖੁਡੂ ਸਮਕਿਥੈ ਸ਼ੈਵਨ ਗੈ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਉਸੀ ਕੇ
ਹੋਆ, ਪਲੈ-ਖਿਨੈ ਚ ਸੁਤ੍ਰਾਂ ਦਾਂ ਰੰਗ ਬਦਲੋਈ ਗੇਆ। ਇਕ ਬਾਰੀ ਪਹਲੋਂ
ਕੀ ਓਦੀ ਜਿਨ੍ਹੂ ਦਾ ਸੌਦਾ ਹੋਆ ਹਾ, ਜੇਡਾ ਓਦੇ ਬਾਪੂ ਨੇ ਕੀਤਾ ਹਾ,
ਪਰ ਅਜਜ ਆਪੂਂ ਗੈ ਅਪਨੇ ਆਪੈ ਗੀ ਕੇਚਨ ਲਗੀ ਪੇਈ ਏ? ਨਹੀਂ ਏ ਕਦੇ
ਨਹੀਂ ਹੋਈ ਸਕਦਾ — ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਹੋਈ ਸਕਦਾ।

ਉਸਨੇ ਲਮਮਾ ਸਾਹ ਭਰਦੇ ਹੋਈ ਗਲਾਧਾ :

“ਅੱਤ ਇਕਲੀ ਜਨਾਨੀ-ਸੁਆਣੀ ਆਂ। ਬਧਾਗੇ ਮੇਰੇ ਕਨ੍ ਰੌਹਦੇ
ਨ। ਯੁਆਡੀ ਮਾਨਤ ਅੱਤ ਕਿਧਾਂ ਸਾਮਲਾ ? ਇਨ੍ ਗਹਨ੍ ਗੀ ਬਰਤੀ
ਕੀ ਕਿਧਾ ਸਕਾਂ ? ਅੱਤ ਵਿਧਵਾ ਜੇ ਆਂ।”

‘ਤੂ’ ਰਕਖੀ ਤੇ ਲੈ, ਸਾਮਲ ਨਹੀਂ ਕਰੇਆ ਭਾਏ।” ਜਗਤੁ ਨੇ ਪਾਨੀ
ਉਪਰ ਲੀਕਰ ਪਾਨੇ ਦਾਂ ਜਤਨ ਕੀਤਾ।

ਪਰ ਕੁਨਤੋ ਮਲੇਆਂ ਤਿਲਕਨੀ ਹੀ, ਪਾਨੀ ਕਿਧਾਂ ਠਹਰਦਾ ਤਵੇ ਉਧਰ ?
“ਚੀਜੇਂ ਦੀ ਸਾਮਲ ਤੇ ਕਰਨੀ ਗੈ ਪੈਂਦੀ ਏ, ਸੋਚੀ ਸਮਕਿਥੈ ਕੀ ਚਲਨਾ ਪੈਂਦਾ
ਏ।” ਏ ਆਖਦੇ-ਅਖਦੇ ਕੁਨਤੋ ਨੇ ਅਵੇ ਭਿਤ ਕੇਡੀ ਓਡੇ।

ਹੁਨ ਜਗਤੁ ਦੇ ਆਖਨੇ ਗਲਾਨੇ ਜੋਗ ਕਿਥ ਨਹੀਂ ਰੇਆ। ਡੋਲ ਕੀਤੇ
ਦੇ ਗਹਨ੍ ਗੀ ਗੋਯੈ ਪਾਧਾ ਤੇ ਜਨ੍ ਪੈਰੋਂ ਗੈ ਪਰਤੋਈ ਗੇਆ।

ਗੁਪ ਨਹੇਰੇ ਚ ਦੌਨੋਈ ਇਕ ਟ੍ਰੋਏ ਦੇ ਸੁਹ ਮਲੇਆਂ ਨਜ਼ਰੀ ਨਹੀਂ ਪੇ,
ਤੇ ਕੁਸੈ ਗੀ ਸੇਈ ਨਿ ਹੋਆ ਜੇ ਟ੍ਰੋਏ ਅਪਨੇ ਮਜਨ੍ ਚ ਕੇ ਸੋਚਾ
ਕਰਦਾ ਏ।

ਬਸ ਇਨ੍ਹੀ ਗੈ ਗਲਲ ਹੋਈ ਹੀ।

ਜਗਤੁ ਗੀ ਗੈਲੀ ਚਾ ਆਂਦੇ ਜਾਂ ਜਨਦੇ, ਖਵਰੈ ਮੇਲੋ ਨੇ ਕਿਧਾਂ ਦਿਕਖੀ
ਲੈਤਾ, ਤੇ ਲੋ ਲਗਦੇ ਗੈ ਅਮਰੂ ਦੀ ਮਾਝ ਗੀ ਜਾਈ ਸੁਨਾਧਾ।

ਰਣੂ, ਛਲ੍ਹੋ ਤੇ ਛਲ੍ਹੀ ਗੀ ਲੇਇਥੈ ਬਾਡਿਆ, ਗੋਡੈ ਦੇ ਕੋਲ ਗੇਆ
ਤਠੀ, ਜਿਥੋਂ ਮਾਧਾ ਨੇ ਬੀਨੇ ਆਸਟੈ ਇਕ ਸ਼ੈਲ ਪਦਰਾ ਥਾਰ ਬਨਾਏ ਦਾ
ਹਾ। ਉਥੋਂ ਸੈਲ੍ਲੀ ਖਵਲ ਤੁਗੀ ਆਈ ਦੀ ਹੀ।

ਛਲ੍ਹੋ ਹੁਨੈ ਤਗਰ ਬਿਦ ੨ ਟੁਸਕੈ ਕਰਦੀ ਹੀ। ਤੈਵੈ ਖਵਲੈ ਪਰ
ਕਿਨਾ ਚਿਰ ਬੈਠੇ ਦੇ ਰੇਹ, ਪਰ ਇਕ ਟ੍ਰੋਏ ਗੀ ਕੁਸੈ ਕੀ ਕੁਆਲੇਆ ਨਹੀਂ।

ਕੀ ਰਣੂ ਨੇ ਗੈ ਗਲਲ ਚ ਲਾਈ।

“ਛਲ੍ਹੋ ! ਵੇ ਪਹਲੇ ਕੀ ਮਾਸੀ ਗੀ ਮਾਰਦੀ ਹੁਨ੍ਦੀ ਹੀ ?”

“ਨਹੀਂ” ਛਲ੍ਹੋ ਨੇ ਸੁਤ੍ਰਾਂ ਪਰਾ ਅਤਥਲ੍ਹਏ ਦੀ ਮੈਲ ਪੁੱਜਦੇ ਹੋਈ ਗਲਾਧਾ :
“ਉਥੋਂ ਤੇ ਵੇ ਨੇ ਕਦੇ ਟ੍ਰੋਡੇਆ ਕੀ ਨਹੀਂ ਹਾ ਅਮਮਾਂ ਗੀ।”

“ਵੇ ਤੁਗੀ ਤੇ ਮਾਰਦੀ ਹੋਗ ?”

“ਜੜ੍ਹੁ ਉਸ ਘਰ ਰੌਹਦੇ ਹੇ ਤਾਂ ਮਿਗੀ ਕੀ ਤੇ ਛਲ੍ਹੀ ਗੀ ਕੀ ਮਾਰਦੀ
ਹੁਨ੍ਦੀ ਹੀ।”

“ਓ ਤੇ ਏ ਗੈ ਡੈਨ।” ਕੋਲ ਬੈਠੀ ਦੀ ਛਲ੍ਹੀ ਨੇ ਆਖੇਆ।

“ਥੁਆਡਾ ਬਾਪੂ ਕੀ ਤੇ ਤੁਝੋਂ ਗੀ ਮਾਰਦਾ ਹੋਗਾ ?” ਰਣੂ ਨੈ
ਪਰਤਿਥੈ ਪੁਛੇਆ।

“ਅਮਰੂ ?”

“ਹਾਂ।”

“ਓ ਕੋਈ ਸ਼ਹਾਡਾ ਬਾਪੂ ਥੋੜਾ ਏ, ਚਾਚੂ ਏ।”

“ਬਾਪੂ ਕੁਨ ਏ ਥੁਆਡਾ ਕੀ ?”

“ਓ ਤੇ ਗੇਦਾ ਤਠੀ ਸੁਰਗੈਈ।”

ਰਣੂ ਗੀ ਹਰਾਨੀ ਹੋਈ। ਉਸੀ ਤੇ ਇਸ ਗਲੈ ਦਾ ਪਤਾ ਗੈ ਨਹੀਂ ਹਾ।

ਕਿਥ ਚਿਰੈ ਆਸਟੈ ਤੈਵੈ ਕੀ ਚੁਪ ਹੋਈ ਗੇ।

अमरु दी मां रोई पिट्ठी, कंदै कन्नै टक्करां मारी-मारी ते बाल
पुट्ठी २ चाल होई गेई ।

कल ओदी धी शानां दी, जेडी कुन्तो दै बट्टै ओदे बुहुँ बब्बै
कन्ने व्याई ही, कुसे संगी घोटी उड्डी ही ।

अमरु नसदा द्रीड़दा दरसू पुज्जा, पर जे किश उसने सुनेआ,
कन्ने उपर हत्थ रखियै उस्से बेलै परती आया अपने ग्रां । लोथ
उदे जाने कशा पहले गै फूकी ओड़ी दी ही ।

शाना दी उमर हुन कोई पंजियें (२५) दे लगभग ही ते खसम
सत्तरा-बत्तरा होई गेदा हा । हुन नौ दस बरे होई गै हे शानां गी
नुआड़े कच्छ रौंहदे । पर ओदी देह ते आत्मा त्रे आई दी गै रेई ।
उदी ज्वानी दे बदल नां कुदरै बरे, नां धारां रौंसलिया
होईआं । सरीर इक सुके दा हा लबदा सर । अक्खीं, जियां उज्जड़े
दे बाग ।

चानचक्क गै बदल घनोई गे । धारां रौंसलियां सेई होन
लगियां । सरीरै दा सर भरोने कशा पहले गै, लोके दे मैजरै दे
खतोले च बुब्बी गेआ । अक्खीं दे उज्जड़े दे बाग फुलने फलने गी
रसले होई उठे ।

सोहनू कन्ने नुआड़ी भत के होई जे जिदू दा रंग-ढंग गै
बदली गेआ ।

सोहनू लम्बड़दारै दा जातक हा ते हुनै दस जमातां पास करियै
परतोआ हा । पौडर, क्रीम, लिपस्टिक, नैह-पालश—किन्नियां
गै शहरी सुगातां उसने शानां गी दित्तियां ।

परतियै छल्लो ने गल्ल लाई :

“रणू तेरा वापू कुत्थे ऐ ?”

“ओ चरोकना मरी गेदा ऐ ।”

“तूं दिक्खे दा ऐ उसी ?”

“नईं, अम्मां गलांदी ऐ तैल्लूं अऊं बड़ा लौका हा ।”

“तेरी मम्मां कियां मरी गेई ?”

“तापै कन्ने । अऊं डागदारै गी सद्दन गेआ, पर तौ नईं
टपोई । पैर तिलकेआ ते अऊं रुड़न लगा हा, पर भौड़े च पुज्जने
शा पहले गै कंडै आई लग्गा ।”

“पार नईं जान होआ ?”

“नां । परतियै घर आया तां अम्मां बेसुर्त पेई दी ही ।
ओ मरी गेदी ही !”

“तेरी अम्मां मेरे कन्ने बड़ा हिरख करदी ही ?”

“मिगी बी मासी बड़ा हिरख करदी ऐ । हुन तुस मिगी
इकले छोड़ियै परतियै बे दे घर ते नईं दुरी जागेओ ।”

“सिर फूकना गे नुआड़ा हुन ?” छल्लो ने नकक चाढ़दे होई
गलाया, “की नईं अस इथें इक अपना कोठू पाई लैचै ? जे बे,
अम्मां गी लेई बी जाग तामीं अस उस्से कोठुआ च रौहगे ।”

छल्लो दी ए गल्ल रणू दे मन लगी । मिती बी बथेरी ही
उत्थें, ते बट्टै दा बी घाटा नईं हा । बस कन्दां चिनने दी लोड़ ही ।

“हूनै गंडां पानियां चुरू करी उड़ने ग्रां ।” रणू ने सलाह दित्ती ।
ते त्रैवे जने लगी, पे कोठू पाने च ।

ਅਮਰੂ ਦੀ ਮਾਂ ਰੋਈ ਪਿਟ੍ਠੀ, ਕਨੰ ਕਨੰ ਟਕਕਰਾਂ ਮਾਰੀ-ਮਾਰੀ ਤੇ ਬਾਲ
ਪੁਟ੍ਠੀ ੨ ਥਾਲ ਹੋਈ ਗੇਈ।

ਕਲ ਆਦੀ ਥੀ ਸ਼ਾਨਾਂ ਦੀ, ਜੇਡੀ ਕੁਨਤੀ ਦੇ ਬਣ੍ਹੈ ਓਦੇ ਬੁਝੈ ਬਵੈ
ਕਨੇ ਵਧਾਈ ਹੀ, ਕੁਸੈ ਸੱਗੀ ਘੋਟੀ ਉਡੀ ਹੀ।

ਅਮਰੂ ਨ ਸਦਾ ਟ੍ਰੀਡਦਾ ਦਰਸੂ ਪੁਜਾ, ਪਰ ਜੇ ਕਿਸ਼ ਉਸਨੇ ਸੁਨੇਆ,
ਕਨੇ ਉਪਰ ਹਥ ਰਖਿਯੈ ਉਸੈ ਵੇਲੈ ਪਰਤੀ ਆਯਾ ਅਪਨੇ ਗ੍ਰਾਂ। ਲੋਥ
ਉਦੇ ਜਾਨੇ ਕਥਾ ਪਹਲੇਂ ਗੈ ਫੁਕੀ ਆਡੀ ਦੀ ਹੀ।

ਥਾਨਾ ਦੀ ਤਮਰ ਹੁਨ ਕੋਈ ਪੰਜਿਧੇ (੨੫) ਦੇ ਲਗਭਗ ਹੀ ਤੇ ਖਸਮ
ਸਤਤਾ-ਬਜ਼ਤਾ ਹੋਈ ਗੇਦਾ ਹਾ। ਹੁਨ ਨੌ ਦਸ ਬਰੇ ਹੋਈ ਗੈ ਹੈ ਥਾਨਾਂ ਗੀ
ਨੁਆਡੈ ਕਚਚ ਰੌਹਦੇ। ਪਰ ਆਦੀ ਵੇਹ ਤੇ ਆਤਮਾ ਤੇ ਆਈ ਦੀ ਗੈ ਰੇਈ।
ਉਡੀ ਜਵਾਨੀ ਦੇ ਬਦਲ ਨਾਂ ਕੁਦਰੈ ਬਰੇ, ਨਾਂ ਧਾਰਾਂ ਰੌਸਲਿਆ
ਹੋਈਆਂ। ਸਰੀਰ ਇਕ ਸੁਕੇ ਦਾ ਹਾ ਲਵਦਾ ਸਰ। ਅਕਖੀਂ, ਜਿਧਾਂ ਉਜ਼ਡੇ
ਦੇ ਬਾਗ।

ਚਾਨਚਕ ਗੈ ਬਦਲ ਘਨੋਈ ਗੈ। ਧਾਰਾਂ ਰੌਸਲਿਆਂ ਸੇਈ ਹੋਨ
ਲਗਿਆਂ। ਸਰੀਰੈ ਦਾ ਸਰ ਮਰੋਨੇ ਕਥਾ ਪਹਲੇਂ ਗੈ, ਲੋਕੋਂ ਦੇ ਮੈਜਰੋਂ ਦੇ
ਖਤੋਲੇਂ ਚੁਕੀ ਗੇਆ। ਅਕਖੀਂ ਦੇ ਉਜ਼ਡੇ ਦੇ ਬਾਗ ਫੁਲਨੇ ਫਲਨੇ ਗੀ
ਰਸਲੇ ਹੋਈ ਉਠੇ।

ਸੋਹਨੂ ਕਨੇ ਨੁਆਡੀ ਝੱਤ ਕੇ ਹੋਈ ਜੇ ਜਿੜ੍ਹ ਦਾ ਰੰਗ-ਢੰਗ ਗੈ
ਬਦਲੀ ਗੇਆ।

ਸੋਹਨੂ ਲਮਭਡਾਰੈ ਦਾ ਜਾਤਕ ਹਾ ਤੇ ਹੁਨੈ ਦਸ ਜਮਾਤਾਂ ਪਾਸ ਕਰਿਯੈ
ਪਰਤੀਆ ਹਾ। ਪੀਡਰ, ਕੀਮ, ਲਿਪਸ਼ਿਕ, ਨੈਹ-ਪਾਲਚ—ਕਿਨ੍ਨਿਆਂ
ਗੈ ਸ਼ਹੀ ਸੁਗਾਤਾਂ ਉਸਨੇ ਥਾਨਾਂ ਗੀ ਦਿਤਿਆਂ।

ਪਰਤਿਯੈ ਛੁਲਲੋ ਨੇ ਗਲਲ ਲਾਈ :

‘ਰਣੂ ਤੇਰਾ ਬਾਪੂ ਕੁਤੱਥੇ ਏ ?’

“ਓ ਚਰੋਕਨਾ ਸਰੀ ਗੇਦਾ ਏ।”

“ਤੂਂ ਦਿਕਲੇ ਦਾ ਏ ਤੁਸੀ ?”

“ਨਈਂ, ਅਸਮਾਂ ਗਲਾਂਦੀ ਏ ਤੈਲੂਂ ਅਊਂ ਬੜਾ ਲੌਕਾ ਹਾ।”

“ਤੇਰੀ ਅਸਮਾਂ ਕਿਧਾਂ ਸਰੀ ਗੇਈ ?”

“ਤਾਪੈ ਕਨੇ। ਅਊਂ ਡਾਗਦਾਰੈ ਗੀ ਸਦਦਨ ਗੇਆ, ਪਰ ਤੌ ਨਈਂ
ਟਪੋਈ। ਪੈਰ ਤਿਲਕੇਆ ਤੇ ਅਊਂ ਰੁਝਨ ਲਗ ਹਾ, ਪਰ ਭੀਡੇ ਚ ਪੁਜਨੇ
ਥਾ ਪਹਲੇਂ ਗੈ ਕਂਡੈ ਆਈ ਲਗਾਂ।”

“ਪਾਰ ਨਈਂ ਜਾਨ ਹੋਆ ?”

“ਨਾਂ। ਪਰਤਿਯੈ ਬਹ ਆਯਾ ਤਾਂ ਅਸਮਾਂ ਬੇਸੁਰਤ ਪੈਈ ਦੀ ਹੀ।
ਓ ਸਰੀ ਗੇਦੀ ਹੀ !”

“ਤੇਰੀ ਅਸਮਾਂ ਮੇਰੇ ਕਨੇ ਬੜਾ ਹਿਰਖ ਕਰਦੀ ਹੀ ?”

“ਮਿਗੀ ਬੀ ਮਾਸੀ ਬੜਾ ਹਿਰਖ ਕਰਦੀ ਏ। ਹੁਨ ਤੁਸ ਮਿਗੀ
ਇਕਲੇ ਛੋਡਿਯੈ ਪਰਤਿਯੈ ਕੇ ਦੇ ਬਹ ਤੇ ਨਈਂ ਟੁਰੀ ਜਾਗੇਓ।”

“ਸਿਰ ਫੁਕਨਾ ਗੇ ਨੁਆਡਾ ਹੁਨ ?” ਛੁਲਲੋ ਨੇ ਨਕ ਚਾਫ਼ੇ ਹੋਈ
ਗਲਾਧਾ, “ਕੀ ਨਈਂ ਅਸ ਇਥੇਂ ਇਕ ਅਪਨਾ ਕੋਣੂ ਪਾਈ ਲੈਚੈ? ਜੇ ਕੇ,
ਅਸਮਾਂ ਗੀ ਲੇਈ ਬੀ ਜਾਗ ਤਾਮੀਂ ਅਸ ਉਸੈਂ ਕੋਨੁਆ ਚ ਰੌਹਗੇ।”

ਛੁਲਲੋ ਵੀ ਏ ਗਲਲ ਰਣੂ ਦੇ ਸਨ ਲਗਮੀ। ਮਿਤੀ ਬੀ ਬਥੇਰੀ ਹੀ
ਉਥੇਂ, ਤੇ ਬਣ੍ਹੈ ਦਾ ਬੀ ਥਾਟਾ ਨਈਂ ਹਾ। ਬਸ ਕਨਦਾਂ ਚਿਨਨੇ ਦੀ ਲੋਡੀ ਹੀ।

“ਹੁਨੈ ਗੱਡਾਂ ਪਾਨਿਆਂ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰੀ ਉਡੇਨੇ ਆਂ।” ਰਣੂ ਨੇ ਸਲਾਹ ਦਿਤੀ।
ਤੇ ਤੈਂਵੇ ਜਨੇ ਲਗੀਂ ਪੇ ਕੋਣੂ ਪਾਨੇ ਚ।

ਗ੍ਰਾਂ ਚ ਬੜੀ ਹੁਲ ਪੇਈ ਗੇਈ ।

ਪਰ ਬੁਝਾ ਇਸ ਹਾਲਤੀ ਚ ਨਈਂ ਹਾ ਜੇ ਸ਼ਾਨਾਂ ਗੀ ਕਿਥਾ ਆਖਦਾ-
ਗਲਾਂਦਾ । ਜੇਲੈ ਚੱਚਾ ਬਦਨ ਲਗੀ, ਤੇ ਸ਼ਾਨਾਂ ਉਸੀ ਲਵਨੇ ਕਥਾ ਬੀ
ਰੇਈ, ਤਾਂ ਬੁਝੇ ਨੇ ਸ਼ਾਨਾਂ ਗੀ ਆਖੇਆ, “ਸੋਹਨੂੰ ਕਨ੍ਨੇ ਤੇਰਾ ਸਰਕਬਧ ਏ ਗੈ,
ਮੇਰੇ ਕਨ੍ਨੇ ਕੂਨਾ ਬੀ ਕੀ ਸ਼ੋਡੀ ਓਡੇਆ ?”

ਸ਼ਾਨਾਂ ਬੁਝੇ ਵੀ ਗਲ ਸੁਨਿਧੈ ਕਿਥਾ ਸਂਗਚੋਈ । ਉਸੈ ਦਿਨ ਉਸਨੇ
ਸੋਹਨੂੰ ਗੀ ਗਲਾਧਾ, “ਹੁਨ ਅੱਠ ਇਤਥੇ ਨਈਂ ਰੇਈ ਸਕਦੀ ।”

ਸੋਹਨੂੰ ਪਹਲੇ ਗੈ ਤਧਾਰ ਹਾ ।

ਸਲਾਹ ਬਨੀ ।

ਪਰ ਉਸੈ ਦਿਨ ਬੁਝੇ ਗੀ ਬੀ ਸੂਹ ਲਗੀ ਗੇਈ । ਉਸਨੇ ਸੋਚੇਆ, ਬੁਝੇ ਬਾਰੈ
ਪਸ਼ ਤਤਰਨ ਲਗੀ ਏ, ਮੁੰਦਾ ਖਰਾਬ ਹੋਨ ਲਗਾ ਏ । ਅੱਠ ਤੇ ਅੰਗੇ ਗੈ ਥੈਲੁਏ
ਚ ਪੇਦਾਂ, ਕੀ ਨਈਂ ਇਸੈ ਵੀ ਬੂਡੀ ਘੋਟੀ ਓਡਾਂ ?”

ਨਾਲੇ ਦੇ ਪਾਰ ਸੋਹਨੂੰ ਬਲਗਦਾ ਗੈ ਰੇਆ, ਤੇ ਬੁਝੇ ਨੇ ਸ਼ਾਨਾਂ ਵੀ ਲੋਥ
ਬੀ ਫੂਕੀ ਓਡੀ । ਗ੍ਰਾਂ ਦੇ ਕਮੇਟ ਬੀ ਓਦੇ ਹਮੈਤੀ ਹੈ ।

ਕਿਥਾ ਬੀ ਹੋਏ ਮਾਊ ਆਸਟੈਂ ਸ਼ਾਨਾਂ ਤਾਏ ਹੀ, ਜੋ ਬਧਾ ਦੇ ਪਹਲੇਂ ਹੀ
— ਭੋਲੀ ਭਲੋਕੀ, ਮਿਟਿਧਾਂ ਗਲਲਾਂ ਕਰਨੇ ਆਲੀ, ਗਬੈ ਵੀ ਟੈਹਲ, ਘਰੈ ਦਾ
ਸਾਰਾ ਕਮਮ ਤੇ ਗੋਡਿਧਾਂ-ਵਾਡਿਧਾਂ ਕਰਨੇ ਆਲੀ । ਇਕ ਠੇਡਾ ਖਾਈ ਗੇਈ ਤਾਂ
ਨੇਗਾ ਕੇ ਨਥੀ ਹੋਈ ਗੇਆ ਹਾ, ਆਪੂੰ ਸਮਹਲੀ ਜਨਦੀ ।

ਅਸਲੁ ਬੀ ਕਿਥਾ ਇਥੈ ਜਨੇਇਧੇ ਸੋਚੇਂ ਚ ਬੁਢਕੇ ਦਾ ਹਾ । ਖੀਰ ਮਾ
ਪੁਤਰਾ ਦਾ ਰੋਹ ਕੁਨਤੀ ਆਲੀ ਬਕਖੀ ਸੁਡੇਆ ।

‘ਤੂੰ ਤੈਲਕੂੰ ਬਿਚਚ ਆਈ ਖੜੋਤਾ ਹਾ, ਨਈਂ ਤਾਂ ਮਿਸ਼ਮੀ ਸਂਗੀ ਘੋਟੀ
ਓਡੀ ਹੀ ਨੁਆਡੀ ।’

‘ਸੰਗੀ ਘੋਟੈਨੇ ਵੀ ਲੋਡ ਗੈ ਨਈਂ ਪੌਨੀ ਅਸਮਾਂ ! ਏ ਤਡਫੀ

ਤਡਫੀ, ਸਹਕੀ ੨ ਮਰਾ । ਹੁਨ ਜੇ ਆਪੂੰ ਬੀ ਆਂਗ ਇਸ ਘਰ ਤਾਮਮੀਂ
ਨੈਈਂ ਬਾਡਨਾ ਉਸੀ ।”

“ਉਸੀ ਸ਼ਹਾਡੈ ਆਨੇ ਵੀ ਲੋਡ ਬੀ ਕੇ ਏ ? ਛੇ ਘਮਾਂ ਜਮੀਨ ਬਣ੍ਹ
ਤੇ ਨੈਈਂ ਹੁਨਦੀ, ਜਿਸੀ ਓਡੀ ਵਾਹਨੇ ਰਾਹਨੇ ਚ ਲਗੀ ਵੀ ਏ ।”

“ਜਿਮੀਂ ਨੁਹਾਡੇ ਕਚਚ ਨਈਂ ਰੇਈ ਸਕਦੀ । ਵਾਹ ਕਰਦੀ ਏ ਤਾਂ ਵਾਹ ।
ਮੇਂ ਸੋਚੀ ਲੈਤਾ ਏ ਜੇ ਪੱਚੈਤੀ ਚ ਗਲ ਚੁਕਕਾਂ ।”

“ਕਿਥਾ ਤਾਰਨਾ ਪੈਗ ਕਮੇਟੇਂ ਅੰਗੇ ।”

“ਤਾਂ ਕੇ ਏ ?”

‘ਪਰ ਏਦੇ ਕਥਾ ਪਹਲੇਂ ਤੁਗੀ ਬਧਾ ਕਰੀ ਲੈਨਾ ਲੋਡਚਦਾ ।
ਪਿਛੁਆਂ ਕਿਥਾ ਹੋਰ ਗੈ ਬਲਸ਼ਵ ਨਿ ਖੜਾ ਹੋਈ ਜਾ ।’

“ਪਰ ਸਵਨੇਂ ਗੀ ਪਤਾ ਏ ਜੇ ਲੋਆਦ ਤੇ ਮੇਰੀ ਗੈ ।”

“ਜਨਾਨੀ ਬਿਮਲੀ ਖੜੋਏ ਤਾਂ ਫੀ ਉਸੀ ਕੁਨ ਰੋਕੈ । ਪੱਚੈਤੀ
ਪੁਜਨੇ ਕਥਾ ਪਹਲੇਂ ਗੈ ਛਲਲੋ ਗੀ ਬੁਝੈ ਦੇਈ ਓਡਨਾ ਚਾਇਦਾ ।”

“ਤਾਂ ਅੱਠ ਕਲ ਗੈ ਮਾਨਸਰ ਹੋਈ ਆਨਨਾਂ ।”

‘ਤੌਲੀ ਗੈ ਤਿਤਥ ਸੋਧਨੀ ਲੋਡਚਦੀ ਏ ।’

“ਕੁਨ ਏ ?” ਜਗਤੂ ਨੇ ਨਹੇਰੇ ਚ ਤਲੋਫਦੇ ਹੋਈ ਪੁਛੇਆ ।

ਕੁਝੈ ਦੇ ਸੁਰਕਨੇ ਵੀ ਛੇਡ ਸੁਨਚੈ ਵੀ ਹੀ ।

“ਅੱਠ ਆਂ”

“ਸਰੋ ?”

“ਆਂ ।”

फी सरो जगतू दी खट्टै उप्पर आइयै वेई गैई ।

“तुगी सेई नईं जे में अजज जाना ए ?”

“कटड़ै ?”

“हाँ ।”

“सेई हा, पर पहले बी ते तू जन्दा हा, तां बी अंज
आँदी गै ही”

जगतू गी इस बेलै ए गल्ल कौड़ी जन बजोई ।

“नंदू घर नईं हा ?”

“अज्ज ओ मती चाढ़ी ऐठे दा ए । भ्यागा गै होश आग
उसी ।”

“बोतल फड़ा उत्थुआं ।”

सरो तौकड़े चा बोतल कहियै लेई आई ।

जगतू उडुआ, सरो दे हथा बोतल लेइयै कोठुआ दे बाहर
आया उठी । सरो बी पिच्छें-पिच्छें आई गैई ।

सामनै गै पहाड़ी दी टीसी दे पिच्छुआं पुन्नेआं दा चम्प
बल्लें-बल्लें उस्सरै करदा हा । ते सर्हईं सरै उप्पर चाननी दियां
अपसरां अपने रेशमी चीरे खलारै करदियां हियां । किश रंगो-ए-
भरमो-ए दे दो पैछी सरै उप्पर उडरै करदे हे । डिङुएं दियां
बुआजां हर पासेआ आवै करदियां हां ।

जगतू ने बोतल मुआं कन्ने लाई ते इककै डीकै अद्दी बोतल
खाली करी ओड़ी । सरो ने अद्दी बच्ची दी बोतल जगतू दे हथा
लेइयै खुट्टी उप्पर टकाई ओड़ी ।

जगतू ने आखेआ, “सरो तू बड़ी गै भोली ए ।”

सरो ने बामें दा दो-लड़िया हार उदे गलै च पांदे होई गलाया,
“ऐं ते सेई, बो इन्नी नईं जिन्नी तूं समझेआ ए ।”

“के मतलब ?” जगतू ने उदी बामें गी खोलियै इक बक्खी
खड़ोंदे होई आखेआ ।

“मतलब ए जे मिगी सेई जे ऐ मेरिएं बामें दियां ए सौंगलां बी हून
त्रुटी जन्दियां न । किश दिन पहले ए बज्जी दियां रौंहदियां हियां ।”

जगतू ने सोगे होइयै ओदे बक्खी दिवखेआ । उस बेलै चाननी
व सरो दियां अक्खीं कुसै भगेआड़नी दिएं अक्खीं साईं सेई होआ
करदियां हियां ।

सरो बोली, “जे कोई होर हुसनपरी आई बस्सी ए मनै च, तां
मेरे कशा शाप्यालने दी के लोड़ ए ? मैं कदूं तुगी कुतै जाने कशा
रोकेआ ए कदे ?

सरो दी गल्ल सुनियै जगतू परतियै ओदे कोल आई खड़ोता ।
ओदे मूँढें उप्पर हथ्य रक्खियै ते अक्खीं च अक्खीं पाइयै बोलेआ,
‘तुगी भोली कुन आखदा ए, तूं खचरी ए ।’

“अपनी अपनी अक्ली दा फेर ए । इन्ना ग्रांखग जे मेरे कशा
किश बी शाप्यालना तुगी सोबदा नईं ।”

“आमी तेरे कशा किश शाप्यालना नईं चांहदा । ओ सरै उप्पर
पैछी उडरदा दिक्खै करनी ए ? कियां डौर-भौर होए दा, ए । इक चन्न
सामनै लब्बा करदा ए उसी, ते इक सरै दे विच्च । केड़े पासै हावै ?
दौनें बक्खियैं दी लो उसी अपने अपने पासै विच्चै करदी ए । ओ
कुतै बक्खी जा ?”

“ਤੱਥਪਰੈ ਗੀ।” ਸਰੋ ਬਿਵ ਮੁਸਕਾਇਥੈ ਕੋਲੀ ‘ਅਸਲੀ ਚਨਨ ਤੇ
ਤੱਥਪਰ ਗੈ, ਸਰੈ ਆਲਾ ਚਨਨ ਤੇ ਪਰਛੀਰਾ ਏ ਓਦਾ।’

“ਪਰ ਸਰੈ ਆਲਾ ਚਨਨ ਏ ਤੇ ਓਦੇ ਕੋਲ।”

“ਫੀ ਬੀ ਓ ਤਸੀ ਕਦੇ ਨਈਂ ਥੋਈ ਸਕਦਾ।”

‘ਓ ਬੀ ਤਸੀ ਕਦੇ ਨਈਂ ਥੋਗ।’ ਜਗਤੂ ਨੇ ਅਥਥੁ ਭਰੋਚੀ
ਨਜ਼ਰੀ ਕਨੇ ਸਰੋ ਪਾਸੈ ਦਿਕਖੇਆ—‘ਵਧੁ ਹਾਂਬੈ ਕਰਦਾ ਏ, ਪਰ
ਕਰੈ ਕੇ—?’

“ਲਚਾਰ ਜੇ ਏ?” ਸਰੋ ਨੇ ਜਗਤੂ ਵੀ ਗਲਲ ਪੂਰੀ ਕਰਦੇ ਹੋਈ ਗਲਾਧਾ
ਤੇ ਕਨੇ ਗੈ ਹੱਸੀ ਪੇਈ।

ਜਗਤੂ ਸਰੋ ਦੇ ਹੱਸਨੇ ਵਾਂ ਢੰਗ ਦਿਕਖਿਥੈ ਸੋਗਾ ਹੋਈ ਗੇਆ। ਓਦੇ
ਮਨੈ ਚ ਇਕ ਸੌਸਾ ਬਿਜੀ।

ਓਦਾ ਭੰ ਠੀਕ ਗੈ ਨਿਕਲੇਆ, ਸਰੋ ਨੇ ਕਿਥ ਬਦਲੋਈ ਵੀ ਬੁਆਜੈ
ਚ ਗਲਾਧਾ: ‘ਜਗਤੂ ਤੇਰੇ ਪਿੱਛੋਂ ਮੈਂ ਅਪਨਾ ਧਰਮ, ਕੁਲਮਰਯਾਦ, ਸਥਵੈ ਕਿਥ
ਛੋਡੀ ਓਡੇਆ। ਵਧਾਹ ਵੇ ਪਹਲੇ ਤੇਰੇ ਕਨੈ ਕੌਲ-ਕਰਾਰ ਕੀਤੇ ਹੇ, ਵਧਾਹ
ਵੇ ਪਰੈਨਤ ਬੀ ਉਨੈਈਂ ਨਭਾ ਕਰਨੀ ਆਂ। ਤੇਰੇ ਪਧਾਰੈ ਗੀ ਗੈ ਮੈਂ ਅਪਨਾ
ਧਰਮ ਤੇ ਅਪਨੀ ਕੁਲ-ਮਰਯਾਦ ਸਮਝੇਆ। ਅੜਜ ਉਡੀ ਨੈਈਂ ਰੇਆ। ਹੋਰ
ਸਥ ਕਿਥ ਸ਼ਹਾਰੀ ਸਕਨੀਂ ਆਂ ਪਰ ਏ ਨਈਂ। ਖਕਰੈ ਕੁਨ ਏ ਓ ਜਿਨ੍ਹੇ
ਸਿਗੀ ਹਰਾਈ ਉਡੇਆ ਏ। ਮੇਰੀ ਤੇਰੀ ਗਲਲ ਅਤ੍ਯੁੰ ਕਥਾ ਸੁਕ੍ਕੀ। ਅੜ
ਯਾ ਕਰਨੀ ਆਂ।’

ਜਗਤੂ ਉਦੇ ਪਾਸੈ ਦਿਖਦਾ ਰੇਆ। ਸਰੋ ਜਿਧਾਂ ਆਈ ਹੀ, ਤੁਸੀਂ ਚਾਲੀ
ਨਹੀਂ ਬੁਚਡਿਏ ਚ ਗੁਆਚੀ ਗੇਈ।

ਜਗਤੂ ਕਿਨਾ ਗੈ ਚਿਰ ਮੂਰਤ ਜਨ ਉਦਰ ਦਿਖਦਾ ਰੇਆ।

ਕਿਥ ਚਿਰੈ ਪਰੈਨਤ ਪਰਤਿਥੈ ਜੇਲੈ ਉਸਨੇ ਸਰੈ ਪਾਸੈ ਦਿਕਖੇਆ, ਤਾਂ
ਇਕ ਪੈਛੀ ਉਥਾਂ ਗੈ ਸਮਾਨੈ ਗੀ ਹਾਂਬੈ ਕਰਦਾ ਹਾ। ਪਰ ਕਦੇ - ਕਦੇ ਓ
ਖਲਲ ਸਰੈ ਪਾਸੈ ਬੀ ਡੋਲਕਾ ਖਾਈ ਜਦਾ ਹਾ।



ਪਕਕ ਦੌਂ ਮਹੀਨੇ ਪਰੈਨਤ ਖੈਣ ਗੀ, ਸੂਣੈ ਗੁਡਨੂ ਬਾਹਨਾ ਗੈ ਪੇਆ।
ਕਰਦਾ ਬੀ ਕੇ? ਸੀਨ ਅਫਾ ਬੀਤੀ ਗੇਦਾ ਹਾ, ਜਿਨ੍ਹੇ ਗੋਡੀ ਕਰੀ ਤੱਡੀ
ਦੀ ਹੀ ਉਨੋਂ ਕਰਸਾਨੇ ਵਾਲੂ - ਲੂ ਕੁਕਡਿਏ ਦੇ ਬੀਏ ਆਂਗਰ ਬਰਖਾ ਵੀ
ਫੁਆਰਾ ਗੀ ਬਲਗਾ ਕਰਦਾ ਹਾ। ਇਨੋਂ ਦੌਂ ਮਹੀਨੇ ਚ ਖੈਣ ਨੇ ਅਪਨੇ
ਨਿਕਕੇ ਨਿਕਕੇ ਦੌਂ ਖੇਤਰੋਂ ਪਾਸੈ ਦਿਕਖੇਤੀ ਬੀ ਨਈਂ ਹਾ। ਬਚੈਰੇ ਖੇਤਰ ਭੁਕਖੇ-
ਤੇਆਏ ਬੁਡੇ ਦੇ ਖੇਤਰੋਂ ਚ ਇਅਂ ਲਵਦੇ ਹੇ ਜਿਅਂ ਕੁਸੈ ਸਰੈ ਦੇ ਬਚਕਾਰ
ਦੌਂ ਕੁਧੜ ਖੜੋਤੇ ਦੇ ਹੋਨ। ਖੀਰਲੇ ਨਿਮ੍ਬਲ ਹੇ ਹੁਨ। ਇਨੋਂ ਖੇਤਰੋਂ ਗੀ
ਬਾਹਨੇ ਦੇ ਸਥਾਏ ਹੁਨ ਕੋਈ ਤਪਾ ਨਈਂ ਹਾ।

ਸਰਗੀ ਵਾ ਬੇਲਾ ਹਾ। ਖੈਣ ਸਤਨੀਂਦਰਾ ਗੀ ਕੋਨੁਆ ਦੇ ਬਾਹਰ ਤਠੀ
ਆਧਾ। ਚਢਦੇ ਪਾਸੈ ਦਿਕਖੇਆ ਤੇ ਸੇਈਂ ਹੋਆ ਜੇ ਨਹੇਰੇ ਵਾ ਚੀਰਾ
ਫਟੁਨੇ ਗੀ ਹੁਨ ਚਿਰ ਨਈਂ। ਪੁਰੇ ਵੀ ਠੰਡੀ - ਠੰਡੀ ਬਾ ਦੇਹ ਬਿਚ ਨਮਿਧਾਂ
ਤਾਂਗਾਂ ਜਗਾ ਕਰਦੀ ਹੀ। ਠੰਡੀ ਵੀ, ਇਸ ਚਾਲੀ ਵੀ ਏ ਛੇਡ-ਛਾਡ ਅੜਜ
ਮਤੋਂ ਧਿਆਂ ਪਰੈਨਤ ਉਸੀ ਬੱਡੀ ਸ਼ੈਲ ਬਜੋਈ। ਉਥੋਂ ਖੜੋਤੇ-ਖੜੋਤੇ ਗੈ
ਉਸਨੇ ਇਕ ਆਕਡ ਮਾਰੀ। ਉਦਰ ਕੁਕਕੜੁੰ ਬਾਂਗ ਵਿਤੀ। ਦੂਰ ਕੁਤੈ

दांदें दे गलें दियां घैटियां बजिजयां, जियां खेतरें दे ठौगरें दी पूजा होनी होए। खैरु ने वी गुडन् चुक्की लैता। तुम्राइं चढ़दे गी कुसे गुज्जरी दी दुइदनी डुल्लने आली ही।

खैरु फिगले खेतरें पुज्जा तां लो मती बदी गई। रण् दे खेतर उदे कन्ने गै हे, उसने दिक्खेआ, कुन्तो नै खबरै कुस बेल्ले दा दांदें गी अर्भें लाए दा हा। कम्मे च हुज्जी दी कुन्तो ने ओदे पासै दिक्खेआ वी नईं।

कदें इयां गै माया गी खेतरें च आए दे दिखदा हा !

ए सोचदे गै खैरु दे हत्था गुडन् छुड़की पेआ ते इक पासै दी आड़ी उपर ओ बैई गेआ। कुन्तो दे थार उसी माया हल बांदी लब्बै करदी ही। उसी चेता आया जे कियां उसी दूरा दा दिक्खियै माया भुण्ड कहुी लैदी ही। खैरु भुण्ड दिक्खियै किच मुसकांदा, फी उदियां नजरां जियां भुण्ड गी बेदियै माया गी दिक्खी लैदियां, ते ओदे होठें उपर बल्ले जनेई उऐ बोल सुरक्की औन्दे—

“लम्मिया बाड़िया वी लाना,
धर-धर नईं असें जी लाना।

कुन्तो नै स्हैवन गै खैरु गी बैठे दे दिक्खी लैता। दांदें गी छोड़ियै ओ उसदे कच्छ आई खड़ोती, ते बड़ी मलैम बुआजै च आखन् लगी—“अज्ज लगी ऐ बैहल तुकी ?”

खैरु ने सिर चुक्कियै कुन्तो गी दिक्खेआ, ते भट्ट गै उट्टी खड़ोता। ओदे मुआं निकली गेआ ‘राहना के ते वाहना के—?’

दूआ बोल अन्दर गै कुदरै अड़की गेआ। कुन्तो समझी गैई। ए भाख उसी वी ओंदी ही। कन्नै उसी ओदी बेदन वी भाखी ही। माया ने इक बारी ओदे कन्नै गल्ल कीती ही। पर इक बारी ए वी गलाया हा जे ‘खैरु गी दिक्खियै मेरा मन धक-धक करन लगदा ए। खबरै की ?’ कुन्तो गी ए वी सेई हा जे खैरु ने कदें कोई सारत नईं ही कराई, कदें कोई कच्चे बोल नईं हे बोले। इससे करियै ओ खैरु गी अपनापे दी नजरी कन्नै दिखदी ही।

पर खैरु गी कियां सेई होआ जे कुन्तो गी ओ उदी जिन्हू दा भेत सेई ए? कुन्तो ते दूर, माया गी वी कियां पता होई सकदा हा इस गलै दा ?

पर मनै राएं के नईं हुन्दा ?

खैरु दियां अक्खीं किश भरोने गी होई आइयां। उसने मूँह परती लैता।

कुन्तो ने आखेआ, “राहना वाहना नईं तां खानां के ए? ए खीरले निम्बल न। बरखा अज्ज आई जो कल आई। गुडन् कन्ने के होना ए, दांद लेई लै दौं ध्याड़िएं आस्तै।

खैरु ने अक्खीं पूँजियां, ते परतियै ओदी बक्खी मूँह करियै बोलेआ, “नईं बुआ, मैं गुडन् कन्ने गै दौं ध्याड़िएं च कम्म मकाई सुट्टना ए।”

कुन्तो परतियै दांदें कोल दुरी गैई, ते उनें गी हिक्कन लगी। खैरु गुडन् लेइयै अपने खुम्बे च गेआ उठी।

दूरा गै कुन्तो ने रणू ते छल्लो गी शा बेला आनदे दिक्खेआ
तां दांदे गी पुचकारियै रोकी लैआ। हल-पंजाली खोलियै उनेहँ
शामां लैई गेई। फी गिलुऐ गी पिट्ठिया दा खोलियै ओदे मुआं
परा परसीना पूंजेआ ते उसी दुट पल्यानलगी। इन्हे चिरै गी
रणू ते छल्लो वी आई पुज्जे। छल्लो आंदे गै माऊ दी पिट्ठी कन्हे
पलमोई गेई, ते रणू ओदे आस्तै देहां च ढोडा भोरन लगा।

ढोडा भोरदे-भोरदे चानचकक रणू दी नजर खेतर गुडदे खैरु
उपर जाई पेई। ओ झट्ट उट्टी खडोता, ते ए आखदे - आखदे उहर
नस्सी गेआ — “छल्लो तूं ढोडा भोर, अऊं औन्नां।”

“चाचू, तुम्हीं आई गेआ ?” रणू ने खैरु कच्छ पुजदे पुजदे
गलाया।

खैरु ने मुस्काइयै ओदे पासै दिक्खेआ।

“दे चाचू, आऊं तेरी मदद करां।” रणू ने ओदे हासे दा
जवाब दिता।

‘कुन्तो दी मदद करै कर। जनानी-मुआनी इकली गै सब
किश करदी है।’

“ओ मिगी करन गै नईं दिन्दी किश। कन्हे उहर दांद वी
ते हैन, तेरे कच्छ ते उब्बी नईं। अऊं तेरे कन्हे कम्म करै
करड।”

खैरु ने प्पारा कन्है ओदी पिट्ठु थपथपाई।

“माया उदे उपर इन्हीं ते दया करी मैई जे रणू गी ढोड़ी

गेई है। बिल्कुल माऊ दी नुग्राह है। पर किस्मत बी खबरै माऊं
आली गै। अमरू ते ओदी मा इसी जीन देंगण ? कुन्तो ने जैड़ी
करवानी दिती है। इदे आस्तै ओ किस अर्थ ओग ?”

रणू दी बुग्राजै उसी परतियै इनें सोचें चा बाहर कही लेआ।

“चाचू तूं मेरा कोठु नईं दिक्खेआ ?”

“तेरा केड़ा कोठु वै ?”

“मैं, छल्लो ते छल्ली ने ब्राह्मिया च इक बकवरा कोठु पाया है,
दौं गंडे दा।”

“पर तुगी लोड़ के पेई ?”

“खेडनै आस्तै चाचू ! अज्ज तूं उसी दिक्खन ओगा नां ?”

“जहर !” खैरु ने मुण्डी हलाई।

इन्हे चिरै गी छल्लो दा आला मुनचा।

ओ रणू गी सदै करदी ही।

रणू ने तआईं दिक्खेआ। गिलुऐ गी पिट्ठी बन्नियै कुन्तो
परतियै दांदे गी खेतरें च लेआ करदी ही। ओ उट्टेआ, पर
स्हैवन गै उसी बचार आया जे खैरु ने ते शा-बेला नईं
कीता।

“चाचू तेरा शा-बेला कुत्यें है ?”

“अऊं नईं खंदा शा बेला पुत्तरा ? इवकै बेलै रुट्टी खांग
घर जाइयै।”

“ਕਲਵੈ ਥਮਾਂ ਅੜੁੰ ਲੇਈ ਆਵਾ ਕਰੰਗ ਤੇਰੇ ਆਸਟੈ ਬੀ ।”

“ਜਾਂ ਨਾਂ, ਇਆਂ ਨਈਂ ਕਰੇਆਂ। ਤੁਂ ਕੁਨਤੋ ਆਸਟੈ ਗੇ ਆਨਾ ਕਰ, ਕਨ੍ਨੇ ਕੁਨਤੋ ਕਨ੍ਨੇ ਕਮੰ ਚ ਹੁਤਥ ਪੁਆ ਕਰ ?”

“ਖਾਰਾ ਚਾਚੂ ।” ਰਣੂ ਨੇ ਗੇਈ ਪੁਟਦੇ ਪੁਟਦੇ ਗਲਾਵਾ, ਪਰ ਤੂਂ ਸ਼ਹਾਡਾ ਕੋਠੂ ਤੇ ਦਿਕਖਾਨ ਆਗਾ ਨਾਂ ?”

“ਸਜਾਂਲੈ ਆਂਗ ।” ਖੈਣ ਨੇ ਗਲਾਵਾ।

ਰਣੂ ਨਚਚਦਾ-ਤਪਦਾ ਦੁਰੀ ਗੇਯਾ।

ਉਸੈ ਰੋਜੈ ਦੀ ਗਲ ਐ।

ਸਜਾਂ ਬੇਲੈ ਛੁਲਲੋ ਬਕਲੁ ਗੀ ਚਾਰਿਧੈ ਤੇ ਰਣੂ ਘੋਡੇ ਗੀ ਪਾਨੀ ਪਲਧਾਇਧੈ ਲੇਈ ਆਏ ਹੈ। ਹੁਨ ਦੋਏ ਬਾਡਿਆ ਚ ਅਪਨੇ ਕੋਠੂ ਵੇ ਬਾਹਰੋਂ ਮਕੌਲ ਫੇਰੇ ਕਰਦੇ ਹੈ।

ਕੁਨਤੋ ਨੇ ਬਾਈਂ ਦਾ ਦੌਂ ਬਲਟੱਕ ਪਾਨੀ ਆਨਿਧੈ ਟਕਾਏ, ਚੁਲੀ ਚ ਅਗਗ ਬਾਲੀ ਤੇ ਤਬਾ ਉਧਰ ਰਖੇਆ ਜੇ ਕਿਸ ਬਨਾਈ ਲੈ। ਇਨੇ ਚਿਰੈ ਚ ਗਿਲ੍ਲੂ ਰੋਈ ਪੇਥਾ। ਉਨੇ ਤਕੇ ਗੀ ਚੁਲੀ ਦੇ ਉਧਰ ਗੈ ਰੋਹਨ ਦਿੱਤਾ ਤੇ ਖੁਟੀ ਕਚਛ ਬੇਇਧੈ ਗਿਲ੍ਲੁਏ ਗੀ ਦੁਇ ਪਲਧਾਨ ਲਗੀ।

ਮਨਾਸਾ ਠੀਕ ਕਰਦੇ-ਕਰਦੇ ਅਮਰੂ ਬੇਡੇ ਚ ਆਵਾ। ਕੁਨਤੋ ਤਸੀਂ ਦਿਕਿਖਿਧੈ ਬੀ ਤਯਾਂ ਗੈ ਬੈਠੀ ਰੇਈ, ਜਿਧਾਂ ਪਹਲੋਂ ਬੈਠੀ ਵੀ ਹੀ। ਅਮਰੂ ਵੀ ਟੋਰਾ ਚ ਕਿਸ ਭਕਕ ਏ ਹਾ ਜਾਂ ਨਈਂ, ਇਸ ਸਰਵਨਥੈ ਚ ਕਿਸ ਆਖੇਆ ਨਈਂ ਜਾਈ ਸਕਦਾ।

ਅਮਰੂ ਓਦੇ ਕੋਲ ਆਇਧੈ ਬੇਈ ਗੇਆਂ।

ਕੁਨਤੋ ਦਿਧਾਂ ਨਜਰਾਂ ਗਿਲ੍ਲੁਏ ਉਧਰ ਹਿਧਾਂ।

“ਆਊ ਕਲ ਥਲੋਡੇ ਗੇਦਾ ਹਾ ।” ਅਮਰੂ ਨੇ ਗਲਲ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ।

ਕੁਨਤੋ ਕਿਸ ਨਈਂ ਬੋਲੀ।

“ਗਲਲ ਪਕਕੀ ਕਹੀ ਆਂਗਾਂ ।”

ਹੁਨ ਕੁਨਤੋ ਕਿਸ ਸੋਗੀ ਹੋਈ। ਤੇ ਸ਼ਹੈਵਨ ਗੈ ਤਦੇ ਮਨੈ ਦੀ ਬਡਕੀ ਬਦੀ ਗੇਈ ਪਰ ਫੀ ਬੀ ਓ ਬੋਲੀ ਨਈਂ।

“ਮੈਂ ਨਈਂ ਹਾ ਚਾਂਹਦਾ ਪਰ ਤੁਂ ਆਪੂ ਗੈ ਹਣ ਕੀਤਾ ਏ। ਪਤਾ ਨਈਂ ਤੁਂ ਕੀ ਬਸਦੀ-ਰਸਦੀ ਬੁਸਤ ਛੋਡਿਧੈ ਇਥੇ ਆਈ ਗੇਈਂ ਏ ।”

‘ਬਖਲੀ ਜਨਾਨੀ ਅਨਦਰ ਬਾਡਿਧੈ ਬੀ ਕਦੇ ਬੁਸਤ ਬਨਦੀ ਏ ?’

‘ਤੁਗੀ ਬਖਲਾ ਮੈਂ ਕਦੇ ਨਈਂ ਹਾ ਥਾਮੇਆ, ਬਰੈ ਵੀ ਗੈ ਹੀ ਤੂਂ ।’

‘ਤਾਂ ਫੀ ਟੂਏ ਬਾਹੁ ਵੀ ਕੇ ਲੋਡ ਪੇਈ ?’

‘ਬੇ ਵੀ ਗੈ ਜਿਹੈ ਏ ।’

‘ਬੇ ਦੇ ਮਨੈ ਵੀ ਪੂਰੀ ਹੋਈ ਗੇਈ, ਕੇਡੀ ਲਗਾ ਬਾਹੁ ਜੁਡੇਆ ?’

‘ਚਹੇ ਵੀ ਸੱਤੋਂ ਗੀ ।’

‘ਪਂਦਰਾ ਗੈ ਰੋਜ ਬਾਕੀ ਰੇਹਨ ਪਰ ’

ਗਲਲ ਕਰਦੇ 2 ਕੁਨਤੋ ਵੇ ਸੂਹਾ ਦਾ ਰੰਗ ਕਾਲਾ ਪੇਈ ਗੇਆ। ਤਸੀ ਪਹਲੇਂ ਇਸ ਗਲਲੈ ਦਾ ਬਚਾਰ ਗੈ ਨਈਂ ਹਾ ਆਵਾ। ਪੁਚਛੀ ਬੈਠੀ—

‘ਧਰੰ ਪੁਨੰ ਜਾਂ—’

‘ਨਈਂ, ਛੁਲੀ ਵੇ ਬਣੈ ।’

ਕੁਨਤੋ ਗੀ ਜਿਧਾਂ ਕਇਧੈ ਖਡਧੈ ਸਾਧੇ ਇਕੈ ਬਾਰੀ ਡਗੀ ਖਾਵਾ।

ਗਿਲ੍ਲੁਏ ਬੀ ਦੁਇਦ ਪੀਨਾ ਛੋਡੀ ਦਿੱਤਾ। ਜਿਧਾਂ ਓਦੇ ਆਸਟੈ ਬੀ ਦੁਇਦ ਦਾ ਸੁਆਦ ਬਦਲੀ ਗੇਆ ਹਾ।

ਕੁਨਤੋ ਗੀ ਸੋਚਿਧੈ ਬੀ ਕਿਸ ਸੁਜ਼ਾ ਨਈਂ ਜੇ ਕੇ ਆਖੈ।

“ਕਲਾਈ ਥਮਾਂ ਅੱਠ ਲੇਈ ਆਵਾ ਕਰਗ ਤੇਰੇ ਆਸਤੈ ਬੀ ।”

“ਨਾਂ ਨਾਂ, ਇਆਂ ਨਈਂ ਕਰੇਆਂ। ਤੁਂ ਕੁਨਤੋ ਆਸਤੈ ਗੇ ਆਜਾ ਕਰ।
ਕਨੇ ਕੁਨਤੋ ਕਨੇ ਕਮੰ ਚ ਹਵਥ ਪੁਆ ਕਰ ?”

“ਖਰਾ ਚਾਬੂ ।” ਰਣੂ ਨੇ ਗੇਈ ਪੁਟਦੇ ਪੁਟਦੇ ਗਲਾਧਾ, ਪਰ ਤੁਂ ਸ਼ਹਡਾ
ਕੋਠੂ ਤੇ ਦਿਕਖਨ ਆਗਾ ਨਾਂ ?”

“ਸਜਾਲੈ ਆਂਗ ।” ਖੈਣ ਨੇ ਗਲਾਧਾ।

ਰਣੂ ਨਚਚਦਾ-ਚਪਦਾ ਦੁਰੀ ਗੇਧਾ।

ਉਸੈ ਰੋਜੈ ਦੀ ਗਲਲ ਏ।

ਸਜਾਂ ਬੇਲੈ ਛਲਲੋ ਬਕਲੁ ਗੀ ਚਾਰਿਧੈ ਤੇ ਰਣੂ ਘੋਡੇ ਗੀ ਪਾਨੀ
ਪਲਿਆਇਧੈ ਲੇਈ ਆਏ ਹੈ। ਹੁਨ ਦੋਏ ਬਾਡਿਆ ਚ ਅਪਨੇ ਕੋਠੂ ਦੇ ਬਾਹਰੋਂ
ਮਕੌਲ ਫੇਰੇ ਕਰਦੇ ਹੈ।

ਕੁਨਤੋ ਨੇ ਵਾਈਂ ਦਾ ਦੌਂ ਬਲਟੜ ਪਾਨੀ ਆਨਿਧੈ ਟਕਾਏ, ਚੁਲ੍ਹੀ ਚ
ਅਗ ਬਾਲੀ ਤੇ ਤਬਾ ਤੱਥਰ ਰਖੇਆ ਜੇ ਕਿਥ ਬਨਾਈ ਲੈ। ਇਨੇ
ਚਿਰੇ ਚ ਗਿਲਲੂ ਰੀਈ ਪੇਖਾ। ਉਨੇ ਤਬੇ ਗੀ ਚੁਲ੍ਹੀ ਦੇ ਤੱਥਰ ਗੈ ਰੀਨ
ਦਿੱਤਾ ਤੇ ਖੁਡੀ ਕਚਛ ਬੇਇਧੈ ਗਿਲਲੁਏ ਗੀ ਦੁਇ ਪਲਿਆਨ ਲਗੀ।

ਮਨਾਸਾ ਠੀਕ ਕਰਦੇ-ਕਰਦੇ ਅਮਲੁ ਬੇਡੇ ਚ ਆਧਾ। ਕੁਨਤੋ ਤਸੀ
ਦਿਕਿਖਿਧੈ ਬੀ ਤਯਾਂ ਗੈ ਬੈਠੀ ਰੇਈ, ਜਿਧਾਂ ਪਹਲੇ ਬੈਠੀ ਦੀ ਹੀ। ਅਮਲੁ
ਦੀ ਟੀਰਾ ਚ ਕਿਥ ਭਕਕ ਏ ਹਾ ਜਾਂ ਨਈਂ, ਇਸ ਸਰਵਨਥੈ ਚ ਕਿਥ
ਆਖੇਆ ਨਈਂ ਜਾਈ ਸਕਦਾ।

ਅਮਲੁ ਓਦੇ ਕੋਲ ਆਇਧੈ ਬੇਈ ਗੇਆਂ।

ਕੁਨਤੋ ਦਿਧਾਂ ਨਜ਼ਰਾਂ ਗਿਲਲੁਏ ਤੱਥਰ ਹਿਧਾਂ।

“ਆਊਂ ਕਲ ਥਲੋਡੇ ਗੇਦਾ ਹਾ ।” ਅਮਲੁ ਨੇ ਗਲਲ ਸ਼ੁਝ ਕੀਤੀ।

ਕੁਨਤੋ ਕਿਥ ਨਈਂ ਬੋਲੀ।

“ਗਲਲ ਪਕਕੀ ਕਹੀ ਆਂਗਾ ।”

ਹੁਨ ਕੁਨਤੋ ਕਿਥ ਸੋਗੀ ਹੋਈ। ਤੇ ਸ਼ਹੈਵਨ ਗੈ ਤਦੇ ਸੱਜੇ ਦੀ ਬਿਡਕੀ
ਬਦੀ ਗੇਈ ਪਰ ਫੀ ਬੀ ਓ ਬੋਲੀ ਨਈਂ।

“ਮੈਂ ਨਈਂ ਹਾ ਚਾਂਹਦਾ ਪਰ ਤੁਂ ਆਪੂਂ ਗੈ ਹਣ ਕੀਤਾ ਏ। ਪਤਾ ਨਈਂ
ਤੁਂ ਕੀ ਬਸਦੀ-ਰਸਦੀ ਬੁਸ਼ਟ ਛੋਡਿਧੈ ਇਥੇ ਆਈ ਗੇਈ ਏ ।”

‘ਬਖਲੀ ਜਨਾਨੀ ਅਨਦਰ ਬਾਡਿਧੈ ਬੀ ਕਦੇ ਬੁਸ਼ਟ ਬਨਦੀ ਏ ?’

‘ਤੁਗੀ ਬਖਲਾ ਮੈਂ ਕਦੇ ਨਈਂ ਹਾ ਥਾਵੇਆ, ਬਹੰ ਦੀ ਗੈ ਹੀ ਤੁਂ ।’

‘ਤਾਂ ਫੀ ਦ੍ਰਾਏ ਬਾਹ ਦੀ ਕੇ ਲੋਡ ਪੇਈ ?’

‘ਕੇ ਦੀ ਗੈ ਜਿਹ੍ਹ ਏ ।’

‘ਕੇ ਦੇ ਸੰਜੇ ਪੂਰੀ ਹੋਈ ਗੇਈ, ਕੇਡੀ ਲਗਾ ਬਾਹ ਜੁਡੇਆ ?’

‘ਚਢੇ ਦੀ ਸੱਜੇ ਗੀ ।’

“ਪਂਦਰਾ ਗੈ ਰੋਜ ਬਾਕੀ ਰੇਹਨ ਪਰ ”

ਗਲਲ ਕਰਦੇ 2 ਕੁਨਤੋ ਦੇ ਸੂਂਹਾ ਦਾ ਰੰਗ ਕਾਲਾ ਪੇਈ ਗੇਆ। ਉਸੀ
ਪਹਲੇ ਇਸ ਗਲਲੈ ਦਾ ਬਚਾਰ ਗੈ ਨਈਂ ਹਾ ਆਧਾ। ਪੁੱਛੀ ਬੈਠੀ—

‘ਧੰਮੇ ਪੁਨੇਂ ਜਾਂ—’

‘ਨਈਂ, ਛਲਲੋ ਦੇ ਬਟ੍ਟੇ ।’

ਕੁਨਤੋ ਗੀ ਜਿਧਾਂ ਕਇਧੈ ਖੜਾਪੈ ਸਾਧੇ ਇਕੈ ਬਾਰੀ ਡਗੀ ਖਾਵਾ।

ਗਿਲਲੁਏ ਬੀ ਦੁਇਦ ਪੀਨਾ ਛੋਡੀ ਦਿੱਤਾ। ਜਿਧਾਂ ਓਦੇ ਆਸਤੈ
ਬੀ ਦੁਇਦ ਦਾ ਸੁਆਦ ਬਦਲੀ ਗੇਆ ਹਾ।

ਕੁਨਤੋ ਗੀ ਸੋਚਿਧੈ ਬੀ ਕਿਥ ਸੁਜ਼ਾ ਨਈਂ ਜੇ ਕੇ ਆਖੈ।

खीर बल्लें जनई उसने गलाआ :

“ए कियां होई सकदा ऐ ?”

“के गल्ल ?” अमरु ते इस गलै आस्तै त्यार गै होइयै
आया हा ।

“मेरा हुन उस घरै कन्ने कोई सरबंध नईं । छल्लो गी की
बहुं देआं अऊं ?”

‘कुन्तो, तेरा दमाक किश मता गै फिरी गेदा ऐ । तूं ओ घर
छोड़ेआ, पर छल्लो ते मेरी गै धी ऐ ।’

अमरु दी बुआजै च रोऐ दे तिरमिरे है ।

उसने परतियै गलाया:

‘तूं जे किश करै करनी एं, ओदे च तुगी किश बी नईं
थोना । मेरे रस्ते च इआं रोडे नईं अड़का ।’ ओदे मुआं चा
ए फगडा पंचौती च जाने दी गल्ल बी निकलन लगी ही पर फी ओ
तौले गै सम्बली गेआ ।

तुआईं कुन्तो दियां अक्खीं खबरै की परसिज्जली आइयां ? दौं
अत्थरुं निकले ते गल्लें उप्पर इक धास जन बनान्दे रुकन लगे ।
अत्थरुं जियां जियां तिलकदे, उआं उआं अमरु दा मन बी परसिज्जलन
लगा ।

ओ दिक्खै करदा हा—कुन्तो किन्नी शैल ऐ ! सारे ग्रां च
होर कुन ऐ नेह शलैपे आली ? ओह आपूं एदे कन्ने हिरख बी
ते घटू नईं करदा । ए वे ने गै सारी बबैद पाई ऐ । उऐ इसी
मतियां गहलां गलांदी ही, नईं तां ए उत्थै तंग बी की पौंदी ?

ते भिम्मीं दूगा ब्याह करियै के लैना हा ? कुसी पता ऐ जे कुआरे
रेइयै भूत बनने आली गल्ल सच्च ऐ जां भूठ ?

‘कुन्तो !’ हुन अमरु दी बुआज बड़ी मलैम ही ।

कुन्तो ने गिल्लएं नजरें कन्ने ओदे पासै दिक्खेआ । उसी बजोआ
जियां अमरु आखै करदा होऐ, — ‘आऊं वे दे डरें ब्याह करै
करनां । छल्लो गी बहुं देना गै पौग । नईं तां मेरी गती
कुत्थे ?’

‘पंज क बरे बलगना पौग ?’ कुन्तो ने पुच्छेआ ।

“हां—के करना फी ? छल्लो बहुं होई लैग तो गै दकेरा
होग ।”

‘वे गी आख जे कल गै छल्लो गी लैई जा आइयै ।’

अमरु हरान रेई गेआ ।

उसने सूचेआ जे ए के होआ ?

ओ अपने थारा उटुआ, पर गै अग्गे नईं पटोई ।

कुन्तो ओदे पासै दिक्खी रेई ।

किश विन दोऐ इयां गै रेह । फी अमरु बल्लें बल्लें बाहरा गी
गेआ उठी ।

कुन्तो मूरत जन बैठी दी रेई । गिल्लु बी गोदा पेदा सेई
गेआ । रणू ते छल्लो नचदे-त्रपदे ते रौला पांदे पचुआड़ी दा नसदे
आई गे । कुन्तो ने दिक्खेआ, रणू ने छल्लो दी चोटी फगड़ी
दी ऐ, छल्लो दौंहत्थे अपना सिर थम्मियै हस्से करदी ऐ । कुन्तो
गी दिक्खियै दोऐ ओदे कच्छ आई बैठे ।

ਛਲਲੋ ਨੇ ਗਲਾਧਾ,
“ਅਸਮਾਂ ਅਥੋ ਅਪਨੇ ਆਲਡੈ ਮਕੋਲ ਫੇਰੀ ਓਡੇਆ ਏ ।
“ਆਲਡਾ ? ਕਨੇਆ ਆਲਡਾ ?” ਕੁਨਤ੍ਤੋ ਨੇ ਹਰਾਨ ਹੋਇਥੈ
ਪੁਛੇਆ ।

“ਉਥੈ ਕੋਠੁ ਜੇਡਾ ਅਸੋਂ ਗੋਡੈ ਕਚਦ ਬਨਾਏ ਦਾ ਏ ।”
“ਓ ਏ ਆਲਡਾ ?”

“ਹਾਂ ਮਾਸੀ !” ਰਾਗੁ ਬੋਲੇਆ, “ਅਸ ਆਲਡਾ ਹੈ ਆਖਨੇ ।
ਖੈਲੁ ਚਾਚੂ ਹੁਨੈ ਵਾਡਿਆ ਦੇ ਕਚੜੇ ਗੈਲੀ ਚਾ ਲੰਗਾ ਕਰਦਾ ਹਾ । ਅਸੋਂ ਗੀ
ਮਕੋਲ ਫੇਰਦੇ ਦਿਕਖੇਆ ਤਾਂ ਖਡੋਈ ਗੇਆ, ਤੇ ਕੋਠੁ ਦਿਕਖੀ ਆਖਨ ਲਗਾ,
“ਬੈ ਆਲਡਾ ਬਨਾ ਕਰਦੇ ਓ ? ਬਡਾ ਥੈਲ ਆਲਡਾ ਏ !” ਮਾਸੀ,
ਦਨਾ ਅਨੰਦਰ ਸਜਾਨਾ ਰੇਈ ਗੇਆ ਏ ।”

ਚਾਨਚਕ ਹੈ, ਰਾਗੁ ਗੀ ਏ ਦਿਕਖਿਧੈ ਬਡਾ ਚਮਵਾ ਹੋਆ ਜੇ ਕੁਨਤ੍ਤੋ
ਰੋਨ ਲਗੀ ਪੇਈ ਏ । ਤ੍ਰਪ ਤ੍ਰਪ ਅਥਥਰੁਂ ਕਿਰੈ ਕਰਦੇ ਨ, ਤੇ ਹੋਠ ਕਮੜੈ
ਕਰਦੇ ਨ ।



ਜਗਤੁ ਨੈ ਸ਼ਾਰਾਬੈ ਦਾ ਖੀਰਲਾ ਬੁਟੁ ਭਰੇਆ ਤੇ ਸਾਲੀ ਬੋਤਲੈ ਗੀ
ਛੰਡਿਧੈ ਮਾਰੇਆ । ਬੋਤਲ ਇਕ ਬਣ੍ਹੇ ਤੱਥਪਰ ਪੇਈ ਤੇ ਚੁਰਚੂਰ ਹੋਈ ਗੇਈ ।
ਕੋਈ ਵਾਹਰ ਖਡੋਤਾ ਦਾ ਘੋਡਾ ਤ੍ਰਵਕੀ ਪੇਆ ।

ਜਗਤੁ ਨੇ ਮਨਾਸਾ ਬਨੇਆ, ਤੇ ਸੂਡੈ ਬਨਦੁਕ ਟਕਾਈ । ਫੀ
ਅਮਵਰੈ ਪਾਸੈ ਦਿਕਖੇਆ, ਬਦਲ ਘਨੋਤੇ ਦੇ ਹੈ, ਤੇ ਬਲਲੋਂ ਬਲਲੋਂ ਗੁਝੈਕੈ
ਵੀ ਕਰਦੇ ਹੈ । ਬਾਊ ਦੀ ਟੋਰੈ ਕਥਾ ਸੇਈ ਹੁਨਦਾ ਹਾ ਜੇ ਪੱਲੋਂ ਖਿਨੇਂ ਚ

ਤੇਰੀ ਓਨੇ ਆਲੀ ਏ । ਓ ਇਕੈ ਜਾਲੀ ਚ ਘੋਡੇ ਤੱਥਪਰ ਜਾਈ
ਬੈਠਾ । ਲਗਾਮੈ ਗੀ ਤੁਨਕਾ ਲਗਨੇ ਦੀ ਢਿਲਲ ਹੀ ਜੇ ਘੋਡਾ ਬਾਊ ਕਨੇ
ਗਲਾਂ ਕਰਨ ਲਗਾ ।

ਸਰੋ ਕਨੇ ਸਰਵਥ ਬੁਟੁ ਦੇ ਅਜ਼ ਅਟੁ ਰੋਜ ਹੋਈ ਗੇਦੇ ਹੈ । ਇਨੋਂ ਅਟੁ
ਰੋਜੈ ਚ ਓ ਕੁਤੈ ਬੀ ਨਹੀਂ ਹਾ ਗੇਆ । ਬਸ ਇਏ ਸੋਚਦਾ ਰੇਆ ਜੇ ਕੁਨਤ੍ਤੋ ਕਨੈ
ਮਲਾਈ ਕਿਧਾ ਹੋਏ ? ਉਸੀ ਨਹੀਂ ਹਾ ਪਤਾ ਜੇ ਕੁਨਤ੍ਤੋ ਕਨਹੇ ਘਰਮੋਲੇ ਚ
ਫਸੀ ਵੀ ਏ । ਓਦੇ ਜਿਸ ਸ਼ਲੈਪੈ ਨੇ ਜਗਤੁ ਗੀ ਅਪਨੀ ਜਿਨ੍ਹੀ ਦਾ ਬੀ
ਥੀਹ ਨਹੀਂ ਰੀਹਨ ਦਿੱਤਾ ਹਾ, ਕੁਨਤ੍ਤੋ ਗੀ ਆਪੂਂ ਕਦੋ ਓਦਾ ਬਚਾਰ ਬੀ ਨਹੀਂ ਹਾ
ਗ੍ਰਾਹਾ । ਤੇ ਜਗਤੁ ਗੀ ਇਕੀ ਕੁਥੋਂ ਪਤਾ ਹਾ ਜੇ ਜੀਵਨੈ ਦੇ ਖੇਤਰੈ ਚ
ਸੱਚੈ ਦਾ ਹਲ ਚਲਾਇਧੈ, ਮੰਨਨ੍ਹਤੁ ਦੇ ਬੀ ਸੁਟਿਧੈ ਬੀ ਕੁਨਤ੍ਤੋ ਗੀ ਕਿਪਤੋਂ ਵੀ
ਪੁੱਜ ਗੈ ਥੋਈ ਏ । ਪਰ ਜਗਤੁ ਗੀ ਇਨੋਂ ਗਲਲੋਂ ਦਾ ਪਤਾ ਕਿਧਾ ਹੋਈ
ਸਕਦਾ ਹਾ ? ਓ ਸ਼ਰਾਬ, ਰਪੇ ਤੇ ਰੂਪੈ ਦਾ ਲੋਭੀ ਹਾ । ਕੁਨਤ੍ਤੋ ਦੇ ਰੂਪੈ
ਉਸੀ ਖਰੀਦੀ ਲੈਤਾ ਹਾ, ਤੇ ਸਰੋ ਦੇ ਰੂਪੈ ਗੀ ਉਸਨੇ ਬਿਸਰਾਈ
ਓਡੇਆ ਹਾ । ਇਸੈ ਕਰੀ ਸਨ ਮਾਰੇ ਦੇ ਬੀ ਹੁਨ ਉਸੀ ਸਰੇ ਬਧਾਡੇ
ਹੋਈ ਗੇ ਹੈ । ਘਰੈ ਚ ਦੇਡੇ ਦੇ, ਸ਼ਰਾਬ ਪੀ-ਪੀ ਇਨੋਂ ਦਿਨੋਂ ਓ ਇਏ ਸੋਚਦਾ
ਰੇਆ ਜੇ ਕੁਨਤ੍ਤੋ ਕਨੇ ਭਤ ਕਿਧਾ ਹੋਏ ? ਇਸੈ ਗਲਲਾ ਉਸਨੇ ਖੈਲੁ ਗੀ
ਵੀ ਸਹੀ ਭੇਜੇਆ ਹਾ ਪਰ ਖੈਲੁ ਆਧਾ ਨਹੀਂ ਹਾ । ਇਸ ਗਲਲੈ ਦਾ ਜਗਤੁ
ਗੀ ਰੋਹ ਤੇ ਸਤਾ ਹਾ, ਪਰ ਓ ਕਰੀ ਕੇ ਸਕਦਾ ਹਾ ? ਅਜ਼ ਉਸਨੇ
ਫੀ ਇਏ ਸੋਚੇਆ ਜੇ ਪਹਲੇ ਆਂਗੁ, ਇਕ ਬਾਰੀ ਕੁਨਤ੍ਤੋ ਕਨੇ ਚਲਿਧੈ ਗਲਲ
ਕਰੀ ਲੈ । ਹੁਨ ਬੀ ਨਹੀਂ ਮਨੀ ਤਾਂ ਜਵਰਦਸ਼ੀ ਕਰਗ ।

ਤਵੀ ਦੈ ਕਣਡੈ - ਕਣਡੈ ਓ ਘੋਡਾ ਦਵਾਡਾ ਜਾ ਕਰਦਾ ਹਾ । ਉਸਨੇ
ਜਾਨਿਧੈ ਕਿਸ਼ ਲਸੀ ਫਰਾਟੀ ਪਾਈ ਹੀ, ਤਾਂ ਜੇ ਓ ਭਲੇਆਂ ਸੋਚੀ
ਲੈ ਜੇ ਗਲਲ ਕੇ ਕਰਨੀ ਏ ? ਕੁਨਤ੍ਤੋ ਗੈ ਇਕ ਜਨਾਨੀ ਏ ਜਿਸ ਨੇ ਉਸੀ

इयां डीर - भौर करी सुट्टे आ हा। नईं तां रूप ते उसने बी
मते दिक्खे हे। सरो जनेहियां बी, जड़ियां सारे ग्रां गी पैरे हिं
मिदियां जंदियां न, उसी पूजन औंदियां रेहियां न।

टट्टेने आंगर मनेह दे उपरले पढ़रे दियां दों जोतां लब्बा
करदियां हां।

“कुन्तो ! विजन तेरै हुन आऊं रेई नईं सकदा। भत हुन्दे गे
आखी देंग ——” जगतू मनोमन सोचदा जा करदा हा। भाका
इसै गल्लै दा हा जे अज्जे तागर इऐ नेहियां गळां कुसै कन्ने उसने
नईं हियां कीतियां। किसै चाली नईं गै पिरगली ओ तां फी
आखना पौग जे अऊं चुकियै लेई जांग कुसै दिन। फी के
गलाग ओ ? ओदा हुन ऐ गे कुन ? अमरु कोला ते बख्ल
होई गी गेदी ऐ।

चानचक घोडा खड़ोई गेआ, ते स्हैवन गै जगतू ने बन्दूक
तानी लैती। ते ओदे ख्याले दी तद बी चुट्टी गेई।

खेतरें दे रुआर उयै थार हा, जित्थे उस दिन उसने घोड़े गी
छोड़ेया हा, ते आपूं दुरदे-दुरदे कुन्तो गी मिलन गेप्रा हा।

घोड़े दा सयानपुना दिक्खियै जगतू ने उसी थापी दिती प्यारा
कन्ने उदी पिट्ठी पर हत्थ केरेआ ते उसी खुल्ला छोड़ियै आपूं निडर
होइयै खेतरें दे आड़ी-बन्ने टपदा दुरी गेआ।

सबनें पासें सुन्न-मसान ही। बदल उआं गै घरोंते दे हे
ते हुन निकियां निकियां कुंगां बी पौन लगी पेइयां हियां।
दूरा इक फबीं दे फिडने दी बुआज इस ज्वाडी गी होर बी भयानक
बना करदी ही। गैल्ली च इक भल्लै कन्ने ओदी कमीज अड़की

तां ओ बबकी गेआ, ते भट्ट गै बन्दूकै उप्पर हत्थ जाई गेआ। पर
उत्थे किश हुन्दा तां ?

अज्जने च बड़ने कशा पहलें, जगतू किश सगेआ। बिन पर
ओ बाहर गै खड़ोता रेआ फी बल्ले २ अन्दर आई गेआ, ते हौली २
उसने भित्त ठोरे।

कुन्तो दी अजें हुनै अक्ख लगी ही। अदूदी रात उसने
इयै सोचदे २ बिहाई ओड़ी ही जे छल्लो ने पिछले जरमं
दे केडे पाप कीते दे हे, जिदे करी दौनें दा आलड़ा बनने थामां पहलें
गै उज्जड़ी गेआ।

जगतू ने दूई मारी भित्त ठोरेआ तां कुन्तो दी अक्ख
खुली। जगतू दा चेता ओदे गै नुआडे कालजे दी धड़की बदी
गेई।

जगतू ने त्री बारी भित्त ठोरेआ तां कुन्तो उट्टी। ओदियां
जंडा कम्बे करदियां हियां। बल्ले जनेई उसने भित्त खुली दित्ते।
इन्हे च मूँह ते के लबदे, पर दौनें इक दूए गी पनछानी
लैता।

दोए किन्ना गै चिर उयां गै चुप खड़ोते रेह।

जगतू ने जो सोचे दा हा, ओ जियां उसी बिस्सरो गै गेआ हा।

खीर कुन्तो ने गै पहल कीती :

“अज्ज फी रस्ता भुल्ली गे ?”

जगतू ने बल्ले जनेई गलाया:

अज्ज ते पक्क उत्थे आई पुज्जां, जित्थे ओना हा।”

“ਮਲੇਗਾਂ ਦਿਕਖੀ ਲੈ, ਥਾਰ ਉਏ ਨਾਂ? ਕਹੁੰ ਟਧਲੋਈ ਤੇ ਨਹੀਂ
ਗੇਵੇ?”

‘ਜੇ ਕਿਸ ਮਰਜੀ ਆਖੀ ਲੈ, ਪਰ—।’ ਗਲਲ ਕਰਦਾ ੨ ਜਗਤੂ
ਰੂਕੀ ਗੇਗਾ ਫੀ ਸ਼ਵੈਵਨ ਗੈ ਬੋਲੇਗਾ, “ਪਰ ਕੁਨਤੋ, ਅੜਾਂ ਹੂਨ ਤੇਰੇ ਬਿਨਾ
ਰੇਈ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ।”

ਕੁਨਤੋ ਡੌਰ-ਮੌਰ ਹੋਈ ਗੇਈ। ਵੇਹ ਪਰਦੇ ਕਨੇ ਸਿੱਜੀ ਗੇਈ।
ਜਗਤੂ ਦੀ ਬੁਆਜ਼ ਚ ਕਿਸ ਰੋਬ ਬੀ ਏ ਹਾ। ਕੁਨਤੋ ਗੀ ਬਜੋਗਾ ਜੇ
ਉਸਨੇ ਗਲਾਵਾ ਏ, “ਤੁਹੀਂ ਹੂਨ ਅੜਾਂ ਛੋਡੀ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ।”

ਕੁਨਤੋ ਨੇ ਅਪਨੇ ਆਪੈ ਗੀ ਸਮਾਲੇਗਾ ਤੇ ਫੀ ਬੋਲੀ “ਸੰਸਾਰੈ ਚ
ਮਨੁਖਿਆ ਦੀ ਹਰ ਇਚਥੇਗਾ ਤੇ ਪੂਰੀ ਨਹੀਂ ਹੁਣਦੀ।”

“ਅੜਾਂ ਏ ਗਲਲ ਨਹੀਂ ਮਨਦਾ। ਮੈਂ ਜੇਡੀ ਇਚਥੇਗਾ ਕੀਤੀ, ਉਸੀ
ਪੂਰਾ ਕਹਿਯੈ ਗੈ ਛੋਡੇਗਾ। ਤੇਰੀ ਮਰਜੀ ਕੇ ਏ?”

“ਮੇਰੀ ਮਰਜੀ?” ਕੁਨਤੋ ਦਾ ਮਨ ਕੀਤਾ ਜੇ ਜੋਰੇਂ ਗਡਾਕਾ ਮਾਰੈ,
ਪਰ ਕਿਸ ਸੋਚਿਹੈ ਬੋਲੀ, “ਮੇਰੀ ਮਰਜੀ ਏ ਜੇ ਤੂਂ ਇਥੋਂ ਨਹੀਂ
ਆਵੈ ਕਰ।”

ਜਗਤੂ ਗੀ ਕਿਸ ਰੋਹ ਆਈ ਗੇਗਾ।

“ਅੜਾਂ ਏ ਪੁਚਛਨਾ ਚਾਹਨਾਂ ਜੇ ਤੂਂ ਮੇਰੇ ਕਨੇ ਜਾਨਾ ਜਾ ਨਹੀਂ? ਜੇ
ਜੇ ਨਹੀਂ ਜਾਨਾ ਤਾਂ——।”

ਜਗਤੂ ਦੀ ਗਲਲ ਅੜੇ ਪੂਰੀ ਬੀ ਨਹੀਂ ਹੀ ਹੋਈ, ਚਾਨਚਕ ਪਿਚਛੇ
ਵਾਡੀ ਚ ਦਾਵੇਂ, ਗਬੋਂ, ਘੋੜੇਂ ਤੇ ਛਿਲਲੁਏਂ ਦੇ ਇਕੱਕੀ ਵਾਰੀ ਰਮਹਾਨੇ, ਰਡਾਨੇ
ਦਿਧਾਂ ਬੁਆਯਾਂ ਆਇਧਾਂ ਜੇ ਦੋਏ ਸਮਝੀ ਗੇ ਕੁਸੈ ਮਿਰਗੈਂ ਗੋਡੇਂ ਦਾ
ਦਰਵਾਜਾ ਖੋਲ੍ਹੀ ਲੈਂਤਾ ਏ।

ਕੁਨਤੋ ਨੇ ਨਹੇਰੇ ਚ ਗੈ ਚੂਕਾ ਪੇਦੀ ਕੁਹਾਡੀ ਚੁਕਕੀ ਤੇ ਪਚੁਗਾੜੀ
ਗੀ ਦਰੌਡੀ।

ਇਨ੍ਹੇ ਚਿਰੈ ਗੀ ਜਗਤੂ ਨੇ ਬੀ ਅਪਨੀ ਬੰਦੂਕ ਸਿਦਦੀ ਕਰੀ ਲੈਤੀ।
ਓ ਬੀ ਕੁਨਤੋ ਦੇ ਪਿਚੜੇ ਦਰੌਡੇਅ। ਗੌ, ਦਾਂਦ, ਛਿਲ੍ਹੂ, ਬੋਡਾ ਸਵੈ
ਗੋਡੈ ਚਾ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲੀ ਆਏ ਦੇ ਹੈ। ਚਾਨਚਕ ਬੋਡਾ ਜੋਰੇਂ
ਹਿਨਕੇਅ; ਕੁਨਤੋ ਹਾਸ਼ਮੀ, ਪਰ ਗੋਲੀ ਚਲਨੇ ਦੀ ਬੁਆਜ਼ ਸੁਨਿਧੈ ਓ
ਇਕ ਪਾਸੇ ਜਾਈ ਪੇਈ।

ਸਾਰੇ ਗ੍ਰਾਂ ਚ ਰੌਲਾ ਪੇਈ ਗੇਗਾ। ਲੋਕ ਸੁਤਨੀਨਦਰੇ ਗੈ ਦਰੌਡੇ, “ਕੁਤਾਂ?
— ਏ ਗੋਲੀ ਦੀ ਬੁਆਜ਼ ਕਨੇਈ ਹੀ?” ਹਰ ਪਾਸੇ ਇਥੈ ਰੌਲਾ ਹਾ।

ਲੋਕ ਕੁਨਤੋ ਦੀ ਬਾਡਿਆ ਕਿਟ੍ਟੇ ਹੋਈ ਗੇ।

ਸਥਾਨੋਂ ਦਿਕਖੇਆ ਬੋਡਾ ਇਕ ਪਾਸੇ ਤੱਤਫਾ ਕਰਦਾ ਹਾ,
ਤੇ ਟੂਇ ਬਕਖੀ ਮੋਏ ਦਾ ਮਿਰਗ ਪੇਦਾ ਹਾ।

ਲੋਕ ਪੁਚਛਾ ਕਰਦੇ ਹੈ, “ਏ ਮਿਰਗ ਕੁਨੇ ਮਾਰੇਗਾ?”

ਕੁਨਤੋ ਕੇ ਜਵਾਬ ਦਿਨੀ? ਓ ਚੁਪਧ ਹੀ।

ਲੋਕੋਂ ਗੀ ਹੂਨ ਪਰਤਕਥ ਪਰਮਾਨ ਥੋਈ ਗੇਗਾ ਜੇ ਜਗਤੂ ਓਵੇਂ ਕੋਲ
ਆਏ ਦਾ ਹਾ।

ਖਲਾਡੈ ਲੁਣੀ, ਲੁਡੀ, ਭਾਗੂ, ਨਾਨਕੂ, ਕਾਹਨੂ ਤੇ ਗ੍ਰਾਂ ਦੇ ਕਿਸ
ਹੋਰ ਲਮਵਡ-ਕਮੇਟ ਅਮਰਲ ਨੇ ਕਿਟ੍ਟੇ ਕੀਤੇ ਦੇ ਹੈ। ਇਕ ਬਕਖੀ,
ਸੁਚੜੇ ਕਣਾ ਦਨਾ ਛਿਡੈ, ਕਿਸ ਆਰਿਧੇ ਭਗਤ ਤੇ ਫੂਮ-ਚਮਧਾਰ ਬੀ

ਬੈਠੇ ਦੇ ਹੈ । ਉਨ੍ਦੇ ਚ ਖੈਲ ਬੀ ਗੋਡੇ ਉਪਰ ਟੁਢੀ ਟਕਾਇੱਧੈ
ਬੈਠੇ ਦਾ ਹਾ ।

ਲੁਣਡੀ ਜਿਸਨੇ ਸ਼ਰਾਬ ਪੀਤੀ ਦੀ ਹੀ, ਬੋਲੇਆ, “ਅਮਰੂ ਜੇ ਅਜ਼ਜ਼
ਤੇਰਾ ਬਬਕ ਜੰਵਾ ਹੁਨਦਾ ਤਾਂ ਇਸ ਬੇਲੇ ਤਗਰ ਉਸਨੇ ਇਸ ਗਸ਼ਟੀ ਗੀ ਟੁਕੁਕੀ
ਟਕਾਏ ਦਾ ਹੋਨਾ ਹਾ ।”

ਨਾਨਕੂ ਲਮਭਡੈ ਸੁਚੜੇ ਦਿਧਾਂ ਚੁੰਝਾਂ ਉਪਰ ਕਰਦੇ ਹੋਈ ਗਲਾਯਾ,
“ਉਸਨੇ ਤੇ ਟੁਕੁਕੀ ਟਕਾਏ ਦਾ ਹੋਨਾ ਹਾ, ਬੋ ਇਨ੍ਹਾਂ ਇਕ ਗਾਲ ਬੀ
ਨਈਂ ਕਹੂੰ ।”

“ਗਾਲ ਕਹੂੰਨੇ ਕਨੰ ਕੇ ਹੋਈ ਜਨਦਾ,” ਲੁਣਡੀ ਨੇ ਸਥਾਨੇ ਸਾਈਂ ਗਲਾਯਾ,
“ਉਸੀ ਤੇ ਗ੍ਰਾਂ ਚਾ ਬਾਹਰ ਕਹੂੰਨਾ ਲੋਡਚਦਾ ਐ ।”

ਭਾਗੂ ਕਸ਼ਾ ਏ ਗਲ ਸੁਨਿਧੈ ਰੌਹਨ ਨਈਂ ਹੋਆ, “ਗ੍ਰਾਂ ਚਾ ਬਾਹਰ
ਕਹਿੱਧੈ ਖੁੜਜਲ-ਖੁੜਾਰ ਕਰਨਾ ਏ ਉਸੀ ? ਕੀ ਨਈਂ ਇਤਥੈ ਗੈ ਕਿਥ ਪਰਵਥਧ
ਕੀਤਾ ਜਾ ?”

ਗਲ ਸੁਨਿਧੈ ਨਥੂ ਨੇ ਭਾਗੂ ਗੀ ਅਕਥ ਮਾਰੀ ਤੇ ਗਲੈ ਗੀ ਲਮਕਾਇੱਧੈ
ਆਖਨ ਲਗਾ, “ਗਲ ਤੇ ਭਾਗੂ ਬੀ ਸੋਲਾਂ ਆਨੇ ਠੀਕ ਐ, ਖੁੜਜਲ-ਖੁੜਾਰ
ਕਹਿੱਧੈ ਅਪਨੀ ਗੈ ਬਦਨਾਮੀ ਐ ।”

“ਬੁਝੀ ਗਲ ਏ ਏ ਜੇ ਅਮਰੂ ਨੇ ਬਨਿਧੈ ਨਈਂ ਰਖੀ । ਮੰਦ ਹੁਨਦਾ
ਤਾਂ ਬਗਾਨੇ ਬੇਡੈ ਕੀ ਜਾਨ ਦਿਨਦਾ ?” ਨਥੂ ਨੇ ਗਲਾਯਾ ।

ਅਮਰੂ ਗੀ ਨਥੂ ਦੀ ਗਲ ਸੁਨਿਧੈ ਰੋਹ ਆਯਾ, ਪਰ
ਗਲ ਟੁਕੁਕੇ ਉਪਰ ਪੁਜਦੀ ਦਿਕਿਖਿਧੈ ਉਸਨੇ ਅਪਨੇ ਮੜੇ ਦੀ ਮੜੇ ਵ
ਗੈ ਰਖੀ ।

ਨਾਨਕੂ ਲਮਭਡੈ ਨਥੂ ਦੀ ਗਲ ਫਮਡੀ, “ਮਈ ਪਹਲੇ ਕੁਨਤੋ ਕਸ਼ਾ
ਰਮਾਲੂ ਦੀ ਜਮੀਨ ਲੇਈ ਲੌ ਹਾਂ । ਓ ਤਗਾਂਨੈ ਮਾਲਕ ਬਨੀ ਬੈਠੀ ਦੀ
ਏ । ਜਮੀਨ ਲੇਇਧੈ ਤੇ ਦੇਓ ਅਮਰੂ ਦੀ ਸਾਊ ਗੀ । ਫੀ ਦਿਕਖੇਓ
ਆਪੂਂ ਗੈ ਜੰਦੀ ਨਈਂ ਅਮਰੂ ਕਹਾ ।”

“ਤੇ ਜੇਡਿਆ ਉਸ ਇਕਲੀ ਨੇ ਕੁਕਕਿਧਿਆਂ ਰਾਇਆਂ ਨ ?” ਭਾਗੂ ਨੇ
ਪੁਛੇਥੇਆ । ਓ ਏ ਨਈਂ ਹਾ ਚਾਹਨਦਾ ਜੇ ਕੁਨਤੋ ਪਰਤਿਧੈ ਅਮਰੂ ਕਚਦੁ
ਦੁਰੀ ਜਾ ।

“ਕੁਕਕਿਧਿਆਂ ਉਸੰਹ ਘਰ ਜਾਂਗਰਾ ਜਿਤਥੈ ਓ ਆਪੂਂ ਰੌਹਗ । ਕਨੇ
ਰਣੂ ਗੀ ਬੀ ਅਮਰੂ ਕਚਦੁ ਗੈ ਰੌਹਨਾ ਪੀਗ ।”

ਅਮਰੂ ਜਿਤਥੁਂ ਤਗਰ ਗਲ ਪੁਜਾਨਾ ਚਾਹਨਦਾ ਹਾ, ਗਲ ਓਵੇ ਕਸ਼ਾ
ਬੀ ਅਸੰਗੋ ਜਨੰਦੀ ਦਿਕਿਖਿਧੈ ਉਸਨੇ ਗਲਾਯਾ, ‘ਰਮਾਲੂ ਚਾਚੂ ਦੀ ਜਿਮੀ
ਸ਼ਹਾਡੀ ਗੈ ਜਿਮੀ ਏ, ਤੇ ਓ ਕੋਠੂ ਬੀ ਸ਼ਹਾਡਾ ਗੈ । ਇਸੰਹ ਕਰੀ ਤੇ ਕੁਨਤੀ
ਗੀ ਉਥੰਹੈ ਰੌਹਨੇ ਦੀ ਢਿਲਲ ਦਿਤੀ ਹੀ, ਜੇ ਕੋਠੂ ਦੀ ਦਿਕਖਭਾਲ ਬੀ ਹੁਨਦੀ
ਰੌਹਗ । ਪਰ ਕੇ ਪਤਾ ਹਾ, ਜੇ ਓ ਇਧਾਂ ਸ਼ਹਾਡਾ ਸੁਹੁ ਕਾਲਾ ਕਰਗ ।
ਨਕਕੇ ਹਿਠ ਬੈਠੀ ਦੀ ਜਨਾਨੀ ਦਾ ਬੀ ਕੇ ਬਸਾ ਏ ? ਮੇਰੇ ਆਸਟੀ ਛਲ੍ਹੋ
ਗੀ ਬਣੈ ਦੇਨੇ ਉਪਰ ਓ ਕਿਥ ਤਸ਼ੀ ਦੀ ਹੀ, ਇਸ ਕਹਿੱਧੈ ਮੇਂ ਉਸੀ ਕਿਥ
ਨਈਂ ਹਾ ਗਲਾਯਾ । ਪਰ ਹੁਨ ਜੇ ਕਿਥ ਤੁਸ ਆਖਗੇ ਓ ਉਥੈ ਕਾਂਗ ।
ਚੜ੍ਹੇ ਦੀ ਸੱਤੋਂ ਗੀ ਬਾਹ ਦੀ ਲਗ ਏ, ਤਵੇ ਪਰੈਨਤ ਕੋਠੂ ਤੇ ਜਿਮੀਂ ਦੀ
ਦਿਕਖਭਾਲ ਬੀ ਮੇਂ ਆਪੂਂ ਕਰੰਗ ਤੇ ਰਣੂ ਬੀ ਮੇਰੇ ਕਚਦੁ ਗੈ ਰੌਹਗ ।”

ਫੈਸਲਾ ਹੋਈ ਗੇਆ ।

ਸਵਨੇ, ਗ੍ਰਾਂ ਆਲੋਂ ਪੈਂਚੇ ਦੇ ਨਿਆਂ ਦੀ ਸਰਾਹਨਾ ਕੀਤੀ ।

ਛੜਾ ਖੈਲ ਗੈ ਹੋਰ ਕਿਥ ਸੋਚੈ ਕਰਦਾ ਹਾ। ਖਬਰੈ ਤਸੀ ਕਿਧਾਂ
ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਹਾ ਜੇ ਕੁਨਤੀ ਬੇਦੋਸ ਏ?

ਦੂਏ ਦਿਨ ਬੁਝੇ ਪਹਰੈ ਦੀ ਗਲਲ ਏ।

ਰਣੂ ਵਾਡਿਆ ਗੇਅਗਾ ਤਾਂ ਤੱਥਨੇ ਦਿਕਲੇਅਗਾ ਜੇ ਆਲਡੇ ਦਾ ਜਨਮ ਬਟਾ ਬਕਕਵ ੨
ਹੋਈ ਗੇਦਾ ਏ। ਓਦੇ ਮਨੈ ਤਪ਼ਰ ਜਿਧਾਂ ਕੁਸੈ ਜੋਂ ਸੁਕਕਾ ਮਾਰੇਅਾ ਹੋਏ।
ਓ ਤਥਿੰਂ ਗੈ ਵੇਈ ਗੇਅਗਾ। ਕਿਨਾ ਚਿਰ ਓ ਤਾਡੀ ਲਾਈ ਦੇ ਖਿਲਲੇ ਦੇ
ਵਟੇ ਗੀ ਦਿਖਦਾ ਰੇਅਾ।

ਇਨ੍ਹੇ ਚਿਰੋਂ ਛਲਲੀ ਬੀ, ਨੀਦਰੈ ਕਨ੍ਹੇ ਭਰੋਚੀ ਦਿਧਾਂ ਅਕਖਿੰ ਮਲਦੀ-ਮਲਦੀ
ਆਈ ਪੁਜੀ ਤੇ ਭਜਜੇ ਦੇ ਕੋਠੂ ਗੀ ਦਿਖਿਖਿੰ ਤਸੀ ਬੀ ਤਵਕਕ ਉਠੀ ਗੇਅਾ।
ਓ ਕਦੋਂ ਰਣੂ ਪਾਸੈ ਦਿਖਦੀ ਤੇ ਕਦੋਂ ਆਲਡੇ ਪਾਸੀ। ਦੋਏ ਭਲਖਿੰਏ ਦੇ
ਇਧਾਂ ਕੀਠੇ ਰੇਹ ਜਿਧਾਂ ਇਕ ਦੂਏ ਕਥਾ ਪੁਞਛੈ ਕਰਦੇ ਹੋਨ, “ਸ਼ਹਾਡੈ ਮਨੈ ਦੇ
ਚਾਹ ਕੁਨੇ ਮੇਸੀ ਓਡੇ ਨ?”

ਕੁਨਤੀ ਬਾ ਦਾ ਗਡੂ ਲੇਈ ਆਈ ਤਾਂ ਦੋਨੋਂ ਗੀ ਇਧਾਂ ਨਿਸ਼ਮੋਚਾਨ
ਦਿਖਿਖਿੰ ਤੁਦੇ ਕਚਕ ਆਈ ਖੜੋਤੀ। ਓਦਿਧਾਂ ਅਪਨਿਧਾਂ ਅਕਖਿੰ ਰਾਤੀਂ ਰੋਈ
ਰੋਈ ਸੁਜੀ ਗੇਦਿਧਾਂ ਹਿਧਾਂ।

ਕੁਨਤੀ ਨੇ ਦੌਨੋਂ ਦੇ ਸਿਰੋਂ ਤਪ਼ਰ ਹੁਤ੍ਥੇ ਫੇਰੇ, ਪਰ ਅਪਨੇ ਅਤਥਸਏਂ ਗੀ
ਰੋਕੀ ਨਈ ਸਕੀ।

ਛਲਲੋ ਨੇ ਪੁਞਛੇਅਾ, ‘ਅਮਮਾਂ ਏ ਕਿਧਾਂ ਢੇਈ ਪੇਅਾ?’

“ਮਿਰਗ “ਢਾਈ ਗੇਅਾ।”

“ਮਿਰਗ?” ਛਲਲੋ ਤੇ ਰਣੂ ਦੋਏ ਡਰੀ ਗੇ।

“ਹਾਂ” ਕੁਨਤੀ ਨੇ ਅਤਥਲੁਂ ਪੁੰਜਦੇ ਹੋਈ ਗਲਾਯਾ, “ਰਾਤੀਂ ਮਿਰਗ ਬੋਡੇ ਗੀ
ਬੀ ਮਾਰੀ ਗੇਅਾ, ਤੇ ਥੁਆਡਾ ਕੋਠੂ ਬੀ ਢਾਈ ਗੇਅਾ।”

ਰਣੂ ਦਰੌਡਿੰਧੈ ਗੋਡੈ ਪਾਸੈ ਗੇਅਾ; ਦਰਵਾਜਾ ਖੋਲਿੰਧੈ ਦਿਕਲੇਅਾ,
ਬੋਡਾ ਤਥਿੰਂ ਨਈ ਹਾ। ਅਕਖਿੰ ਫਾਡੀ-ਫਾਡੀ ਦਿਖਦਾ ਰੇਅਾ, ਪਰ ਬੋਡਾ
ਹੋਨਦਾ ਤਾਂ ਲਕਦਾ।

ਰਣੂ ਪਰਤਿਧੈ ਕੁਨਤੀ ਕਚਕ ਆਧਾ।

“ਮਾਸੀ, ਮਿਰਗ ਬੋਡੇ ਗੀ ਚੁਕਿਕਿੰ ਲੇਈ ਗੇਅਾ ਹਾ?”

“ਨਈ, ਤੱਥਨੇ ਬੋਡੇ ਗੀ ਮਾਰੇਅਾ, ਕਨੈ ਆਪੂਂ ਬੀ ਮਰੀ ਗੇਅਾ।”

“ਮਿਰਗੈ ਗੀ ਕੁਨੇ ਮਾਰੇਅਾ ਅਮਮਾਂ?” ਛਲਲੋ ਨੇ ਪੁਞਛੇਅਾ।

ਕੁਨਤੀ ਦੇ ਸੁਹਾ ਦਾ ਰੰਗ ਜਿਧਾਂ ਬਦਲੀ ਗੇਅਾ। ਇਧੈ ਸੁਆਲ ਤੇ ਅੜਜ
ਸਾਰੇ ਗ੍ਰਾਂ ਆਲੋਂ ਦੀ ਜੀਭਾ ਤਪ਼ਰ ਏ, ਤੇ ਇਧੈ ਸੁਆਲ ਏ ਜੇਦਾ ਜਵਾਬ
ਓਦੇ ਕਚਕ ਨਈ।

ਰਣੂ ਗੀ ਅਪਨੇ ਬੋਡੇ ਤੇ ਅਪਨੇ ਆਲਡੇ ਦਾ ਬਡਾ ਦੁਕਕ ਹੋਅਾ, ਓ
ਲੁਟੀ ਖਾਨ ਬੈਠਾ ਤਾਂ ਇਕ ਗ੍ਰਾ ਬੀ ਨਈ ਖਲੋਅਾ।

ਛਲਲੋ ਨੇ ਗਲਾਯਾ, “ਰਣੂ, ਅਸ ਨਮਾਂ ਆਲਡਾ ਬਨਾਈ ਲੈਗੇ।”

“ਤਾਂ ਕੀ ਕੋਈ ਹੋਰ ਮਿਰਗ ਆਈ ਢਾਈ ਜਾਗ ਤਸੀ।”

“ਅਸ ਓਦੀ ਰਾਖੀ ਬੀ ਕਰਗੇ।”

“ਸ਼ਹਾਡੇ ਕਚਕ ਦਮੂਕ ਗੈ ਨਈ, ਅਸੋਂ ਰਾਖੀ ਕੇ ਕਰਨੀ ?”

“ਤੂ’ ਕੁਹਾਡੀ ਲੇਈ ਲੈਧਾਂ ਤੇ ਆਊਂ ਸਾਂਗੀ ਲੇਈ ਲੈਡ।”

“ਕੁਹਾਡਿੰਧੈ ਸਾਂਗਿਏਂ ਕਨੈ ਬੀ ਕਦੋਂ ਮਿਰਗ ਮਰਦੇ ਨ ?”

ਛਲਲੋ ਗੀ ਇਸ ਗਲੈ ਦਾ ਜਵਾਬ ਨਈ ਸੁਜਾ।

ਲੁਟੀ ਨਈ ਖਲੋਈ ਤਾਂ ਓ ਖੈਲ ਕਚਕ ਹਿਠਲੇ ਪਦਦਰ ਜਾਈ ਪੁਜਾ।

खैरु अंज भते चिरे परेंत अपनी ढोलकी दियां तनियां कस्मै करदा हा । रणू नै जदे गै गलाया, “चाचू, तूं असें गी नमां आलडा पाई दे हाँ ।”

“हन के करना ऐ आलडा तूं बच्चू ?”

‘उथें रौहना ऐ चाचू, छल्लो बी मेरे कन्ने रौहग ।’

‘तूं ते बतोई गेश एं रणू ।’

‘के गल्ल चाचू ?’

“छल्लो दा होर दस्सें दिनें गी व्याह रेई गेआ । ओ तेरे कोठुआ च रौहग जां अपने घर ?”

‘ओदा घर कुत्थे ऐ चाचू ?’

‘थलोडे ।’

“की परतियै नि औग ओ ?”

“ओग, बो तेरे कन्ने आलडे च थोडी रौहग ? अमरु उसी अपने कच्छ रखवग ।”

“ए तुगी कुन्ने दस्सेआ, चाचू ?”

“मिगी पता ऐ तां आखा करनां ।”

रणू कशा होर गल्ल कोई नईं होई । ओ उने पैरे गै परती आया । खैरु ने गैल्ली उसी अक्खीं ओलै हुन्दे दिक्खेआ तां दौं अत्थरुं ओदी अक्खीं दे बने पर आई खड़ोते । ढोलकी दियां रासां कसोई दियां हाँ, हृथ आप मुहारे पुड़े उपर जाई दे । बल्लें बल्लें ए बोल ओदे ओठें चा सुरकी पे :

जे सजनी तूं प्योकै जागी,
परौहना बनी करी औगा ।

कुन्तो सारा दिन जे किश सोचदी रेई ओ ठीक गै हा ।

ओदे शलैपे ने गै ओदे कन्ने बैर कमाया ऐ । कुदरै मुंह दस्सने जोगा नईं रखेआ । घरा गेई, बाहरा गेई । सारा ग्रां फिट-फिट करै करदा ऐ । कुन ओदी गल्लै दा अतबार करै जे जगतू कन्ने ओदा किश बी सरवंध नईं ।

ओदा शलैपा नेआ ऐ जे जगतू ओदे विजन नईं रेई सकदा— ए बी बचार उसी भते बारी आया । लौकी गै ही तां ओदा व्याह होई गेआ हा । अदूं उसी के पता हा जे ओ किन्ती शैल ऐ ? व्याह दे परेंत किश सुर्त सम्हाली तां बापु पलै दा बसाह नईं हा खंदा । उसी अपनी पेदी है । बक्खर देइयै डोला लैना हा उसने । इस्सै करी कुन्तो गी घरै दे बाहर गै नईं हा पुट्टन दिदा । ओ घरै दे कम्मा-काजा च गै इन्नी रुज्जी रौहदी जे शजैपा दिक्खने दी बेल कुत्थे ही ! बबै कच्छ रौहदे गै सुनेआ जे ओ विधवा बी होई गेई ऐ । की अमरु ने शानां गी देइयै उसी इत्थे लैई ओंदा । इत्थे आइयै सस्सू ने कदे शीशा नईं दिक्खन दिता । विधवा जे ही ओ । चुल्ल, चौका, गोडियां, बाडियां, ते गवै-मेही दी टैहल सै बक्ख । बसोने दी बेल नईं कदे लग्गी । बस भुण्ड कहियै लग्गी दी गै रेई सील ही गवै आंगू । अमरु ने हिरख कीता तां ओदा रिन चकान लगी पेई । ए अपारें दियां त्रै किस्तां उस्सी दे नां दियां न । उंदै

कुन्तो ने सुनेग्रा जे बाहर रण् ते छल्लो किंश गल्लां करा करदे त। ओ सुनन लगी :

रण् नै गलाया, “छल्लो में सुनेग्रा तेरा व्याह होआ करदा ऐ।”

“हां, अज्ज चाचू आए दा हा मिगी लैत। कने बे बी मिगी गला करदी ही जे ओ मिगी मते गहने देग।”

‘गहने कनेह ?’

“व्याह होऐ ते पांदे न नईं ? नत्थ, सीरा, पजेबां, चक्क, फुल्ल ?”

“कहूं जाना फी तुं चाचू दे घर ?”

‘में नईं जाना।’

“व्याह नईं गे करना ?”

“करना, करना की नईं। शैल टल्ले लाने, गहने लाने, बुटना मलना। पालकिया पौना, ते फी परती औना।”

“जे कुसै तुगी औन नईं दिता तां ?”

“औन की नईं देंगन, नईं औन देंगन तां तुं मिगी लैई आमेआं।”

कुन्तो ए गल्लां नईं सुनी सकी। ओ रोन लगी पैई।

दूए रोज भ्यागा, कुन्तो कशा उडुन नईं होआ। रोई रोई जियां ओदी देह च सकत नईं ही रेई दी। हुन उट्ठियै बी के करना ऐ ? जमीन हुन खूसी गै लैई ऐ अमरू ने। छल्लो दा व्याह बी होन लगा। रण् दा के बनग ? ओदा अपना के बनग ?

बस पेई दी ही, सस्सू दी बी इयै मरजी ही। उन्दा बबबर जे ही, जियां चांहदे बरतदे। पर जगतू—ए ते भागे दा फेर हा जे ओ धोडे उप्परा ढेई पेई, होश आई तां सिर जगतू दे पट्ट उप्पर हा रखोए दा। ‘हे मेरिए—’

बस इयै नेइयां गल्लां ओ सारा दिन सोचदी रेई। जगतू बी जियां घड़ी-घड़ी ओदे सामनै आई खड़ोदा; शैल, उच्चा लम्मा, ते तगड़ा गबरू। जिस बेबै ओ अपने सामनै जगतू दी ऐ सूरत दिखदी तां घड़ी-पलै आस्तै लोके दे मीरो-तरकां भुली जन्दी। ए के होआ करदा ऐ ? ओ खिनै च गै सिरे गी भुनकियै सोचदी, “ओदी जिन्दू दी बेड़ी कुत्त बच्ची रुड़े करदी ऐ ? लोक की उसी धिण-लानत करै करदे न ? की उसी गाली-मुआली देग्रा करदे न ? इस करियै जे में अपने भूठे साईं गी छोड़ी आडेग्रा ऐ—जे में इक मां-मेटर जागतै गी ममता देग्रा करनी आं; ओदे घरै गी, ओदी जमीनै गी, ओदी जिन्दू गी इनै लोके—इनै भगेग्राडे कशा बचा करनी आं जेडे उसी जींदा गै खाई जाना चांहदे न ? नईं, अऊ इयां नईं होन देंग। अपनी बल देई देंग पर ए कदे नेईं होन देंग।”

अज्ज ओ इस्सै डरा मूजब घरो बाहर नईं निकली जे कोई जनानी ए नईं गलाई ओड़े—‘गस्ती सत्तखसमी, जगतू डाकुए दी दुआल।’

जे कुसै ए आखी ओडेग्रा तां धरत बी ओदे आस्तै नईं फटग; ओ जीदे जी गै मरी जाग। हे परमेसरा ! कोई उपा नईं जे ओ लोके दी नजरी च बेदोस होई सकै ? किन्ना नर्थ ऐ !

इनै सोचें च गै संत्र बी घरोई आई।

ਖੇਤਰੋਂ ਅਜੋਂ ਬੀ ਕਿਥ ਧਰਗਾ ਦੇਨੇ ਨ। ਲੁਆਈ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ ਕਮਮ ਬੀ ਬਾਕੀ ਏ। ਬੋ ਹੁਨ ਕਿਸ ਲੇਖੈ ? ਓਦੇ ਹਤਥੋਂ ਉਸ਼ਸਰੀ ਦਿਧਾਂ ਮਕਕਾਂ ਹੁਨ ਸਿਰ ਸੁਆਕੈ ਕਰਦਿਧਾਂ ਨ, ਮੋਹਈਂ ਵਾਂ ਗੁਆਡ ਹੁਨ ਭੁਕਖ-ਤੇਹ ਚੁਕਾਨੇ ਆਲਾ ਏ, ਬੋ ਕੁਨਤੋਂ ਨੇ ਖਬਰੈ ਭੁਕਖੀ-ਤੇਹ ਆਈ ਗੈ ਮਰਨਾ ਏ। ਅਸ਼ਲੁ ਨੇ ਹੁਨ ਬਾਡਿਆਂ ਕਰਨਿਧਾਂ ਨ ਤੇ ਸਾਰੀ ਪੁਜ਼ਜਤ ਬੀ ਤਥੈ ਲੇਈ ਜਾਗ। ਕੁਨਤੋਂ ਕੀ ਰੋਨ ਲਗੀ।

ਉਸ ਬੇਲੈ ਤਸੀ ਮਾਧਾ ਵਾਂ ਚੇਤਾ ਆਯਾ। ਤਸੀ ਬਜੋਆ ਜੇ ਮਾਧਾ ਗਲਾ ਕਰਦੀ ਏ," ਮੇਰਿਏ ਮੈਨੇ ! ਇਕਕੈ ਮਾਨਤ ਸੌਂਪੀ ਹੀ ਤੁਗੀ, ਤਸੀ ਬੀ ਰੋਲੀ ਆਈਆ ! ਤੁਂ ਆਪੁ ਤੇ ਸੋਈ, ਤਸੀ ਬੀ ਮਾਰੇਆ।"

ਕੁਨਤੋਂ ਗੀ ਤੇਲੀ ਆਈ ਗੇਈ। ਦੰਦਕੀਡੁ ਪੇਈ ਤੇ ਬੇਹੋਸ਼ ਹੋਈ ਗੇਈ।

ਮਿਲ੍ਹੂ ਤੋਸੀ ਤੋਸੀ ਦੁਦਦ ਪਿਧਾ ਕਰਦਾ ਹਾ।
ਗੋਡੁ ਗੌ ਬੀ ਰਮਹਾਈ।



ਖੈਲੁ ਨੇ ਅਜਜ ਸ਼ੁਈਂ ਸਰ ਜਾਨਾ ਏ। ਜਗਤੂ ਨੇ ਪਰਤਿਧੀ ਸਦਿੰਦ ਵਾਂ ਏ। ਓ ਅਪਨੇ ਖੇਤਰੋਂ ਕਚਛ ਬੈਠਾ ਵਾਂ ਕੁਨਤੋਂ ਗੀ ਬਲਗਾ ਕਰਦਾ ਹਾ ਤਾਂ ਜੇ ਅਜਜ ਓਦੇ ਖੇਤਰੋਂ ਵੀ ਦਿਕਖ ਭਾਲ ਬੀ ਤਥੈ ਕਰੈ।

ਬਰਖਾ ਮੌਕੇ ਸਿਰ ਹੋਈ ਦਿਧਾਂ ਹਿਧਾਂ। ਖੈਲੁ ਦੇ ਖੇਤਰੋਂ ਚੋਂ ਬੀ ਕੁਕਕਡਿਧਾਂ ਉਸ਼ਸਰੀ ਆਈ ਦਿਧਾਂ ਹਿਧਾਂ। ਬਾਝ ਦੇ ਫਣਡੂਕੋਂ ਕਨੈਂ ਟਾਂਡੋਂ ਗੀ ਮੁਲਵੇ, ਪਤਰੋਂ ਗੀ ਫਰਰ-ਕਰਰ ਕਰਿਧੀ ਲਰਜਦੇ ਦਿਕਖੀ ਓਦਾ ਸਨ ਬਿਨਦੁ ਹੌਲਾ ਹੋਆ ਕਰਦਾ ਹਾ।

ਦੂਰ ਫਲਦੀ ਚੁਕਾ ਕਾਏਂ ਵਾਂ ਇਕ ਤੁਆਰ ਕੁਨਤੋਂ ਵੀ ਕੁਕਕਡਿਏ ਤੁਪਰ ਆਈ ਬੈਠਾ। ਖੈਲੁ ਨੇ ਹਾਮਿਵਧੀ ਇਕ ਜਨ ਸੁਡੀ, ਪਰ ਓ ਉਥੁਂ ਤਗਰ ਨਈ ਪੁਜੀ। ਓ ਅਗੜਾ ਹੋਆ ਤਾਂ ਉਸਨੇ ਦਿਕਖੇਆ, ਤਵੀ ਆਲੀ ਬਕਖੀ ਵਾਂ ਇਕ ਮਾਨੁ ਆਵੈ ਕਰਦਾ ਏ। ਕੋਈ ਸ਼ੈਹੁ ਲਵਦਾ ਏ, ਸ਼ੈਲ ਚਿਟ੍ਟੇ ਟਲੇ ਹੇ ਲਾਏ ਦੇ ਉਸਨੇ।

ਖੈਲੁ ਖਡੋਤਾ ਰੇਆ, ਓ ਮਾਨੁ ਬੀ ਓਦੀ ਬਕਖੀ ਗੈ ਆਵੈ ਕਰਦਾ ਹਾ। ਕੋਲ ਆਈ ਪੁਜ਼ਾ ਤਾਂ ਬੀ ਖੈਲੁ ਚੁਪ੍ਪ ਗੈ ਰੇਆ।

"ਕੀ ਭਾਈ ਜੀ ਤੁਸ ਇਸ੍ਸੇ ਗ੍ਰਾਂ ਦੇ ਓ ?" ਉਸ ਸ਼ਹਰੀ ਮਾਨੁ ਨੇ ਖਡੋਇਥੀ ਖੈਲੁ ਗੀ ਪੁਚਛੇਆ।

"ਜੀ, ਇਸ੍ਸੇ ਗ੍ਰਾਂ ਵਾਂ। ਤੁਸ ਕੁਤਥੁਆਂ ਆਏ ਓ ?"
"ਮੇਂ ਜਸਮੁ ਵਾਂ ਆਵੈ ਕਰਨਾਂ, ਰਾਤੀਂ ਸ਼ੁਈਂ ਹਾ। ਇਥੋਂ ਸਰਪੈਂਚ ਕੁਥੋਂ ਰੌਹਦਾ ਏ ?"

"ਸਰਪੈਂਚ ? ਓ ਤੁਪਰਲੇ ਪਦਰ ਰੌਹਦੇ ਨ, ਤੇ ਸਾਹਬ ਪੱਚੈਤੀ ਦੇ ਅਫਸਰ ਨ ?"

"ਨਈ ਭਾਈ, ਅਫਸਰ ਤੇ ਕੈਸੈ ਵਾਂ ਨਈ, ਮੈਂ ਤੇ ਗ੍ਰਾਂ ਵੀ ਸੇਵਾ ਕਰਨ ਆਯੋ।"

"ਸੇਵਾ ਕਨੇਈ ?" ਖੈਲੁ ਨੇ ਕਿਥ ਹਰਾਨੀ ਕਨੈ ਪੁਕਛੇਆ।
ਪਰ ਓ ਆਦਮੀ ਕਿਥ ਮਤਾ ਗੈ ਹੁਣੈ ਵਾਂ ਹਾ। ਖੈਲੁ ਵੀ ਗਲੈਂ ਵਾਂ ਜਵਾਬ ਦੇਨੇ ਦੇ ਥਾਰ ਉਸਨੇ ਤਾਈ ਤੁਆਈ ਦਿਕਖੇਆ ਜੇ ਨੇਡੈ-ਤੇਡੈ ਕੋਈ ਸ਼ਾਂ ਲਵੀ ਜਾ। ਚੌਨੋਂ ਪਾਸੋਂ ਤਪੈ ਕਰਦੀ ਚਿਟ੍ਟੀ ਧੁਪ ਬਿਸ਼ੀ ਵੀ ਹੀ। ਖੈਲੁ ਨੇ ਓਦੇ ਮਨੈ ਵੀ ਸਮਝੀ ਲੈਤੀ ਤੇ ਗਲਾਨ ਲਗਾ, "ਓ ਸਾਮੱਨੇ ਖੇਤਰੋਂ ਦੇ ਪਾਰ ਰੁਕਵੇਂ ਹਿਠ ਚਲਿਧੀ ਬਸਾਂ ਕਰੋ। ਆਸੀਂ ਚਲਨਾਂ।"

ओ मानू फी हस्सी पेआ ।

“नई भाई, हुन आपराजी नई, लोकराजी ऐ । लोके
दा राज ।”

‘के मतबल ?’ खैरु ने चबाती कन्ने पुच्छेगा ।

‘मतलब ए जे हुन लोक जिसी आखगन ओ राज करग । सारे
लोक रलियै बोट पांगन ते कमेटे चुनगन ।’

‘नां, जेडे कमेटे हुन न, ए ते बहु—सुच्चे लोके बनाए दे न ।
लोक गुजां तारियै कम्म कड़ी लैदे न ।’

‘इन्ह कमेटे गी बी लोक गै चुनगन । छडे सुच्चे लोक गै
नई सबने जातियें दे । हुन सबने जातियें गी इवकै जनेह हक्क
थोंगन । कोई बहाँ-लौका नई रौहग । कोई सुच्चा नई होग, कोई
छूत-छात नई चलग ।’

“ए कियां होई सकदा ए बाबू जी ?”

“हुन इयै ते होने आला ऐ ।”

इस नमें आदमीं दा नां महेश ऐ । महकमा देहात-मुधार च
सब-इंसपेक्टर ऐ । मनै च बिडियां हुब्बां न, जे देशै दी किश
सेवा करी सकै । एदे जिम्मै इस (अ)लाके दिएं पंचैतें दे नमें
चना कराने दा कम्म ऐ । मनेह-पंचैती दे चना इक महीने बाद न ।
अज्ज ओ छडा इयै दस्सन आया ए जे चना कदूं ते कियां होंगन ।
कमेटें ते ग्रां दे होर मतें लोकें कन्ने उसी मिलना ऐ ते अज्ज गै
इत्युआं जन्दराह परतोना ऐ ।

ए सबै गलां बी उसने खैरु गी दस्सियां । खैरु दे पिड़ पल्लै
घटू गै किश पेआ ।

दोऐ उत्थों आई बैठे ।

“अच्छा तुस इसै ग्रां दे रौहने आले ओ ?” रुखै कन्ने ढोह लांडे
होई उस मानु ने फी पुच्छेगा ।

“जी !” खैरु गी ओ कोई बड़ा भलालोक सेई होगा जिसने ना
जात पुच्छी नां कम्म, ते इज्जतै कन्ने कुआलै करदा हा ।

“किन्ने क घर न इस ग्रां च ?”

‘कोई चालीं घर होंगन ठौकरें दे ते बी-पंजी डूमें-मेवें दे ।’

“नाठै दै मौके, इत्थों बी रीला पेआ हा, जां नई ?”

“नई ! इत्थों मुण्ड कदीमी इयै घर न ।”

“नाठै आले बरे गी किन्ना चिर होई गेआ, सेई ए तुसेंगी ?”

“सेई ए जी, कोई शे बरे होई गे होंगन ।”

“इब्बी पता ऐ जे अहूं स्हाडा मुलख अजाद होगा हा ?”

‘सुनेआ ते ए हा ।’

खैरु दी गल सुनियै ओ आदमी हस्सन लगी पेआ ।

“छडा सुनेआ गै हा ?”

खैरु चुप रेआ ।

“हुन तुस दिक्खी बी लैगे ओ । उआं तुसेंगी सेई ए जे अजादी
आखदे किसी न ?”

“असें ते इयै सुनेआ ए जे रंगेज हिन्दुस्ताना गे उठी न । ते कन्ने
राजें-नवाबें दा राज बी नई रेआ । इत्थुआं ते इयै लबदा ए जे कोई
आपराजी पौने आली ऐ ।”

किश चिरे परैन्त महेश ग्रां आली बक्खी गेप्रा उठी ।



खैरु किन्ना गै चिर उस रुख्वै हिठ बैठा दा महेश दिए
गल्लें उप्पर सोच-बचार करदा रेआ । सूरज सिरे उप्पर आवै
करदा हा । उसने फी रस्ते उप्पर नजर ढाड़ी, जे खुशवा कुन्तो आवै
करदी होऐ । दूर उसी रण् आंदा लब्बा, इक्कला, हत्थै च इक लम्मो
सोटी फगड़ी दी ।

अमरू आपमुहारा मुस्काई पेआ । उसी चेता आया जदूं रण्
माया दी पिट्ठी पर बनोए दा फी मूण्डै चढे दा, ते फी जदूं आंगल
फगड़ियै खेतरे आंदा हा । अज्ज पहले वारी ओ सोटी मूण्डै रकिलयै
खेतरे दी राखी करन आवै करदा हा ।

रण् नै बी दूरा गै खैरु गी दिक्खी लैता ते तौले-तौले गै
पुट्ठन लगा । कोल पुज्जा तां खैरु ने गलाया, “कुन्तो की नईं
आई ?”

“ओ किश बल्ले नईं ।”

“के गल्ल ?”

“बडलै दी उट्ठी गै नईं ।”

‘उआं बिज्जी दी ऐ ?’

“हां ! अमरू चाचू बी आया हा ।”

“अमरू कैसी आया हा ?”

“छल्लो गी लैइ गेआ ऐ ओ ।”

“लैइ गेआ ?”

“हां परसूं उन्ने माइएं बौना ऐ ।”

“ओ रोई नईं जंदे बेरी ?”

“नईं, गला करदी ही, गहने टल्ले लाइयी फी परती आँग । ओ
परती आँग नां, चाचू ?”

“उसने हुन कदें नईं औना रण् ?” ए गलादे गलान्दे खैरु गी आपूं
गै अपना मन किश मता कठोर बजोआ—‘अमरू दुब उसी कदें कुन्तो
कच्छ नइं औन देग ।’

“ब्याह होई जाग तां बी नईं ?”

“नईं ।” खैरु ने दिक्खेआ जे रण् दे मुआं दा रंग काला
फिरी गेआ ऐ ।

किश चिरे आस्ती दोए चुप रेह ।

फी रण् ने रुणाके होइयै गलाया, ‘चाचू, अमरू भिगी बी गला
करदा हा जे आऊं उदे कच्छ दुरी जां ।’

‘फी तूं के गलाया ?’

‘किश नईं, उस बेल्लै म.सी रोए करदी ही । पर चाचू, जे
छल्लो नईं परती आँग तां आमी अमरू कच्छ दुरी जांग ।’

‘कुन्तो गी छोड़ी जागा ?’

रण् नै किश जवाब नईं दिता ।

‘तेरे आस्ती कुन्तो अपना सब किश छोड़ी आई, ते तूं हुन उसी
गै छोड़ी जागा ?’

रण् गी किश नईं सुज्जा जे के जवाब देए ?

ਕਿਸਾ ਖਿਨੇ ਪਰੈਨਤ ਬਲਿੰ ਜਨੇਹੁ ਬੋਲੇਆ,

“ਆਊ ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਜਾਂਗ ਚਾਚੂ ਮਾਸੀ ਗੀ ਛੋਡਿਥੈ, ਕਦੇ ਨਹੀਂ
ਜਾਂਗ। ਹੁਨ ਮੇਂ ਸਾਸੀ ਗੀ ਕਿਸਾ ਕਮਮ ਵੀ ਨਹੀਂ ਕਰਨ ਦੇਗ।”

ਖੈਲੁ ਗੀ ਅਪਨਾ ਮਨ ਹੋਰ ਬੀ ਕਠੋਰ ਬਜੋਆ, ਜੇਲੈ ਉਸਨੇ
ਆਖੇਆ, “ਬਚ੍ਚੂ, ਏਦੇ ਆਸਟੀ ਤੁਗੀ ਹੋਰ ਮਤਾ ਸੁਲਲ ਚਕਾਨਾ ਪੌਗ। ਏ
ਕੁਕਕਡਿਆਂ, ਜਿਨ੍ਦੇ ਦਾਨੇ-ਦਾਨੇ ਚ ਕੁਨਤੀ ਵੀ ਰਤ ਦੁਦਦ ਬਨੀ ਵੀ ਏ, ਏ ਪਤਰ
ਜੇਡੇ ਕੁਨਤੀ ਦਾ ਪਾਰਸੀਨਾ ਪੀ-ਪੀ ਸੈਲੇ ਹੋਏ ਵੇਨ, ਏ ਲਮ੍ਮੇ ਉਚੜੇ ਟਾਂਡੇ,
ਜਿਨੋਂ ਕੁਨਤੀ ਦਾ ਸਾਰਾ ਬਲ ਖੂਸੀ ਲੰਤਾ, ਏ ਸਵ ਕਿਸਾ ਤੁਗੀ ਛੋਡਨਾ ਪੌਗ
ਰਣ੍ਹ। ਤੁਂ ਇਨਦਾ ਮਾਲਕ ਨਹੀਂ ਬਨੀ ਸਕਦਾ।”

ਰਣ੍ਹ ਸੂਰਤ ਜਨ ਬਨੇਦਾ ਖੈਲੁ ਦਿਯਾਂ ਗਲਲਾਂ ਸੁਨੀ ਜਾ
ਕਰਦਾ ਹਾ।

“ਬਚ੍ਚੂ !” ਖੈਲੁ ਦੀ ਬੁਆਜ ਭਰਡਾਈ ਗੇਈ, ‘ਜਿਨੇ ਖੇਤਰੋਂ ਵੀ
ਰਾਖੀ ਅੜਜ ਤੁਂ ਇਨਾ ਸੋਗਾ ਬਨਿਧੀ ਕਰਨ ਆਵਾ ਏ, ਇਨ੍ਦੀ ਰਾਖੀ ਤੂਂ
ਬਚਕ ਕਰ, ਪਰ ਤੇਰੇ ਕੋਲ ਸਕਖਨੇ ਗੈ ਰੌਹਗਨ।’

“ਇਨੋਂ ਖੇਤਰੋਂ ਗੀ ਕੁਨ ਲੇਈ ਜਾਗ ਚਾਚੂ ?” ਰਣ੍ਹ ਦੀ ਬੁਆਜ ਜਿਅਂ
ਡੂਂਗੇ ਖੂਆ ਚਾ ਆਵੈ ਕਰਦੀ ਹੀ।

“ਖੇਤਰ ਕੁਝੀ ਨਹੀਂ ਜਾਂਗਣ ਪੁਤਤਾ, ਪਰ ਏ ਸਾਰੀ ਪੁਜ਼ਤ ਅਮਰੂ
ਲੇਈ ਜਾਗ। ਤੇਰਾ ਬਕਬ ਜਦੂਂ ਤੇਰੇ ਜੇਡਾ ਹਾ ਤਾਂ ਅਮਰੂ ਦੇ ਬਕਬੈ
ਨੁਆਡੇ ਕਥਾ ਏ ਜਿਸੀ ਖੂਸੀ ਲੈਤੀ ਹੀ, ਅੜਜ ਤੇਰੇ ਕਥਾ ਅਮਰੂ ਖੂਸੈ
ਕਰਦਾ ਏ।”

“ਮੇਂ ਤਸੀ ਹਵਥ ਵੀ ਨਹੀਂ ਲਾਨ ਦੇਂਗ ਇਸ ਪੁਜ਼ਤਾ ਗੀ।” ਰਣ੍ਹ ਕਿਸਾ
ਜੋਥੈ ਚ ਆਈ ਗੇਆ।

‘ਤੁਂ ਕਿਸਾ ਨਹੀਂ ਕਰੀ ਸਕਦਾ ਰਣ੍ਹ।’ ਖੈਲੁ ਦੀ ਲਗਾਨੀ ਜਿਆਂ
ਭਰਡਾਈ ਗੇਈ। ਰਣ੍ਹ ਨੇ ਅਗੜੇ ਹੌਇਥੈ ਖੈਲੁ ਦੀ ਬਾਂਹ ਫਗੜੀ ਲੈਤੀ।

‘ਚਾਚੂ ਤੁਸੀ ਅਮਰੂ ਗੀ ਕਿਸਾ ਨਹੀਂ ਆਖਗਾ ?’

“ਮੇਰੀ ਕੇ ਅਕਾਤ ਏ ਪੁਤਰਾ ! ਅਤ ਨੀਚ ਜਾਤ ਆਂ ਰਣ੍ਹ, ਤੇ ਗ੍ਰਾਂ ਵੇ
ਚੌਥਰੀ ਲਮਵਡਾਰ ਤੇ ਅਮਰੂ ਸਵ ਸੁਚੇ। ਅਤ ਸੁਂਹ ਵੀ ਨਹੀਂ ਲਾਈ
ਸਕਦਾ ਉਨ੍ਦੇ ਕਨੈ।”

ਰਣ੍ਹ ਨੈ ਖੈਲੁ ਦੀ ਬਾਂਹ ਫਗੜੀ ਵੀ ਰਕਖੀ।

ਖੈਲੁ ਦਿਯਾਂ ਨਜਰਾਂ ਦੂਰ ਗਾਸਾ, ਖਵਰੈ ਕੇ ਤੁਧੈ ਕਰਦਿਆਂ ਹਿਧਾ।



ਖੈਲੁ ਜੇਲੈ ਸਹੀ ਪੁਜ਼ਾ ਤਾਂ ਬੁਧ ਅੜੇ ਤੇਜ ਹੀ।

ਉਦਰ ਜਗਤੂ ਅਪਨੇ ਕੋਠੁਏ ਦੇ ਅਨਦਰ ਖਣਦੂ ਤੱਥਾ ਲੇਟੇ ਦਾ ਅਪਨੇ ਇਕ
ਧਾਰ-ਬੇਲੀ ਕਨੈ ਗਲਿੰ ਰੁਜ਼ਾ ਦਾ ਹਾ। ਦਰਵਾਜ਼ ਬਿਚ ਇਕ ਹੌਨੈ ਸਕਖਨੀ
ਹੋਈ ਦੀ ਬੋਤਲ ਪੇਦੀ ਹੀ।

ਜਗਤੂ ਗਲਾ ਕਰਦਾ ਹਾ :

‘ਧਸੂ, ਸਰੋ ਹੁਨ ਇਕ ਸਕਖਨੀ ਬੋਤਲੈ ਤੁਲ ਏ ਸਾਰੀ ਸ਼ਰਾਬ ਤੇ
ਮੇਂ ਪੀ ਓਡੀ, ਫੀ ਬੀ ਓ ਸੁਕੈ-ਕੂਕੈ ਕਿਧਾਂ ਕਰਦੀ ਏ ?’

“ਸ਼ਤਾਦ !” ਧਸੂ ਨੇ ਪੁਆ ਬਿਲਦੇ ਹੋਈ ਗਲਾਧਾ, ‘ਤੇਰੇ ਆਸਟੀ
ਸਕਖਨੀ ਹੋਈ ਗੇਦੀ ਹਾਗ ਅਸੋਂ ਗੀ ਤੇ ਓ ਅੜੇ ਬੀ ਭਰੋਚੀ ਵੀ
ਲਕਵਾਈ ਏ। ਮਿਗੀ ਹਰਾਨੀ ਇਸ ਗਲੈ ਦੀ ਏ, ਜਦੂਂ ਤੁਂ ਉਸ
ਬੋਤਲੀ ਚਾ ਪੀਂਦਾ ਹਾ, ਤਡੂਂ ਵੀ ਤੁਗੀ ਇਸ ਸ਼ਰਾਬਾ ਵੀ ਹਰ ਬੋਲੈ ਤਲਬ
ਕੀ ਰੱਹਦੀ ਹੀ ?’

जगतू दना हस्सेआ, “धमूं, तूं दौं बोतलें दी गल्ल करनां, इत्थे चार बोतलां इकैं डीक लाइयै पी जाचै ।”

“जे चार पी सकदा हा स्ताद, तां इकैं पिच्छे, सरो गी किसी नराज करी लैतो ?”

धमूं दी ए गल्ल सुनियै, गासा पुज्जा दा जगतू इकैं डोलकै पुबां श्राई त्रटोआ ।

“ए गल्ल की लाई बैठां एं धमूं ?” जगतू ने ए जल्ल इयां गलाई जियां छिक्र हारी आए दा होऐ—“मडा, मनै देघा नईं फरोल ।”

जगतू ने सूंक सुट्टी तां धमूं बी कुसै सोचै च हुब्बी गेआ । फी बोलेआ, “स्ताद ! किश बी होऐ, सरो गी नराज करियै तूं खरा नईं कीता । ओ तमशी खड़ोती ऐ । पुलस पहलें गै असे गी फगड़ने दा पज्ज तुप्पा करदी ऐ, मतै सरो कोई गहना ठल्ला देई ओड़ै ।”

जगतू, धमूं दी ए गल्ल सुनियै की हस्सेआ, पर हुन ओदे हासे च मनै दी बेदन छप्पी दी ही ।

“धमूं !” जगतू सूंक सुट्टियै बोलेआ: ‘हुन मिगी फगड़ने दा बी भै नईं रेआ । मन स्हिली गेआ ऐ अपना । खबरै उसी होर के लोड़चदा हा ? खसम व्याह कशा पहलें गै मरी गेआ, देरा गी आपूं छोड़ी ऐठी; फी बी अपने थारा हल्लने दा नां नईं लैदी । गहने-टल्ले दे लालचै बी किश नईं कीता, मिगी कुराह पेदा गलांदी ऐ ।’

“तां किश भेत जरूर ऐ स्ताद ! ओ जिदू कशा लचार होई गेदी लबदी ऐ ।”

“इसै करियै में उस डूमै गी सद्दी भेजेआ हा । खरा सयाना ऐ । बो बीड़ेआ गै नईं, खबरै जिदू दा भै नईं उसी—?”

जगतू गल्ल करदे २ रुकी गेआ । बाहर कुसै मित्त ठोरे ।

धमूं लुग्राख खंदा अगडा होआ ।

“ओ खैरु आया ऐ ? भेई तेरी गै गल्ल होआ करदी ही ।”

जगतू उट्टियै बैई गेआ । ओदा मन स्हैवन गै धक् २ करन लगा । खैरु अन्दर आया तां ‘गरीब नवाज’ करियै इक पासै बौत लगा, पर जगतू ने उसी अपनी खट्टै उप्पर बौने लैई गलाया ।

खैरु भाँए जगतू दे सद्दने उप्पर उत्थे आया हा पर ओदे अपने मनै च बी ए जानने दी लालसा ही जे कुन्तो ते जगतू दे सरबंधी दी किश सूह लै । कुन्तो बेदोस गै सेई, पर गल्ल ते किश नां किश जरूर ऐ ।

ए बी बचित्तर गल्ल होई जे दैनों इक दूए कशा किश बी नईं छपेलेआ । शैरु नै कुन्तो दे सरबंधै च सब किश दस्सेआ ते जगतू ने अपने बारे च कोई गल्ल नईं छपेली ।

कुन्तो दी कहानी जेडी खैरु ने सुनाई ओ अत्थसुएं भरोची दी, मनै दी बेदनै कन्ने परसिजजली दी, ते जिन्दू दे दुखें कन्ने लदोई दी ही, पर जगतू दी कत्थै च बासना दे लोरे, ते देह दी अग्ग ही । ए गल्ल दैनों अपने अपने थार समझी नईं ।

ਜਗਤੂ ਨੈ ਅਪਨੇ ਮਨੈ ਚ ਨਸੋਝੀ ਦੀ ਇਕ ਲਹਰ ਸੁਰਕਦੀ
ਸੇਈ ਕੀਤੀ ।

ਦੋਏ ਮਤਾ ਚਿਰ ਚੁਪ ਰੇਇਧੈ ਇਕ ਫ੍ਰਾਏ ਦੇ ਮਨੈ ਗੀ ਪਰਖਦੇ ਰੇਹ ।
ਧਮੂ ਤਤ੍ਥੁਆਂ ਚਰੋਕਨੇ ਦਾ ਟੁਰੀ ਗੇਦਾ ਹਾ ।
ਉਸ ਚੁਪਧੀ ਗੀ, ਖੌਲੁ ਨੇ ਗੈ ਤਰੋਡੇਅਗਾ ।

“ਬਾਈ ਜੀ, ਰੋਹ ਨਈਂ ਬੁਜੇਅਮੋ, ਕੁਨਤੋ ਖ਼ਬਰੈ ਨਈਂ ਗੈ ਥੋਏ
ਤੁਸੇਂ ਗੀ ।”

“ਓਪਰੀ ਗੈ ਧੀ ਏ ਓ ਇਸ ਧਰਤੀ ਦੀ ! ਅਜਜੈ ਤਗਰ ਨਾਂ ਤਧੈ
ਜਨੇਈ ਫ੍ਰਾਈ ਦਿਕਲੀ ਏ ਤੇ ਨਾਂ ਸੁਨੀ ।” ਜਗਤੂ ਦੀ ਬੁਆਜ ਮੂਲ ਗੈ ਬਦਲੋਈ
ਗੇਈ ਦੀ ਹੀ— ਖੌਲੁ ਅਜ ਤੁਂ ਮਿਗੀ ਇਕ ਨਸੀਂ ਭਤਾ ਪਾਈ ਆਡੇਅਗਾ ਏ ।
ਮਿਗੀ ਏ ਊਮਾਂ ਕੁਤੱਥੇ ਛੋਡਗ, ਕਿਥ ਪ੍ਰਾਚਿਰ ਕਰਨਾ ਲੋਡਚਦਾ ਏ ।”

ਖੌਲੁ ਨੇ ਹਰਾਨ ਹੈਏ ਦੇ ਦਿਕਖੇਅਗਾ, ਖਿਨੈ ਵਿਚ ਗੈ ਜਗਤੂ ਦੀ
ਬੁਆਜ ਪਰਤਿਧੀ ਬਦਲੋਈ ਗੇਈ । ਤਦੀ ਦੇਹ ਤਪਨ ਲਗੀ ਹੀ, ਅਕਖੀਂ
ਹੋਰ ਬੀ ਲਾਲ ਸੂਇਆਂ ਹੋਈ ਗੇਇਆਂ, ਤੇ ਬੋਲ ਸੁਆਂ ਚਾ ਨਿਕਲਦੇ ਨਿਕਲਦੇ
ਕਮਵਨ ਲਗੇ ।

“ਪ੍ਰਾਚਿਰ ਕੇ ਭਾਈ ਜੀ ?” ਖੌਲੁ ਨੇ ਬਲਲੇਂ ਨੇਈ ਪੁਛਦੇਅਗਾ ।

“ਅਮਲੁ ਗੀ ਜਾਇਧੈ ਆਖੀ ਦੇ ਜੇ ਰਣ੍ਹ ਦੇ ਇਨੇ ਖੇਤਰੋਂ ਗੀ ਹਤਥ
ਪਾਯਾ, ਜਿਦੇ ਸਿਟ੍ਰੋਂ-ਗਰੋਲੇਂ ਚ ਕੁਨਤੋ ਦੀ ਰਤ ਤੇ ਪਰਸਾ ਅਚੇਰੇ ਵਾ
ਏ, ਤਾਂ ਆਂਦੇ ਹਤਥ ਟੁਕਿਕਧੀ ਰਕਖੀ ਦੇਂਗ । ਹੁਨ ਨਜਰ ਬੀ ਤੁਆਈ
ਚੁਕਕੀ ਤਾਂ ਅਕਖ ਨਿ ਰੌਜ ਲਗੀ । ਮੇਰੇ ਹਤਥ ਗੈ ਨੁਆਡੀ ਸੌਤ
ਲਖੋਈ ਦੀ ਏ ਖ਼ਬਰੇ !”

“ਭਾਈ ਜੀ, ਇਨਾ ਰੋਏਂ ਨਈਂ ਹੋਵੋ ।”

“ਨਈਂ ਖੌਲੁ ਅਮਲੁ ਹੁਨ ਮੇਰੇ ਹਤਥਾ ਨਈਂ ਬਚੀ ਸਕਦਾ । ਮੇਰੇ
ਭਾਗੋਂ ਬੀ ਕੁਮੈ ਕਨੇ ਚੰਗੀ ਕਰਨੀ ਲਿਖੀ ਦੀ ਹੀ । ਮੇਰੇ ਕਰੀ ਕੁਨਤੋ
ਗੀ ਇਨਾ ਫੁਲੁ ਪੁਜਨਾ, ਇਸੈ ਗਲਲੈ ਵਾ ਪ੍ਰਾਚਿਤ ਮੇਂਕਰਨਾ ਏ ।”

ਖੌਲੁ ਕਿਥ ਬੋਲੇਅਗ ਨਈਂ, ਕੁਸੈ ਆਨੇ ਆਲੇ ਨਥੰਗੀ ਸੋਚਿਧੈ ਆਵਾ
ਮਨ ਕਮਵੈ ਕਰਦੇ ਹਾ ।

ਮਨੈ ਦੇ ਨਿਸ਼ਚੇ ਵਿਚ ਜਿਧਾਂ ਕੋਈ ਮੈ ਘੁਲਨ-ਮਿਲਨ ਲਗੈ, ਉਸੈ ਚਾਲੀ
ਤਸ ਬੇਲਲੈ ਦਿਨੇ ਦੀ ਲੋਈ ਚ ਸਭੈ ਦੇ ਫਿਕਕਡੁ ਪਰਛੀਰੈ ਘੁਲੈ ਕਰਦੇ ਹੈ ।

ਕੁਨਤੋ ਕਥਾ ਅਜਜ ਸਾਰਾ ਦਿਨ ਖਾਣੈ ਤਥਾ ਤਢੁਨ ਗੈ ਨਈਂ ਹੋਅ ।
ਤਦੀ ਦੇਹ ਤਤੇ ਤ੍ਰਾਮੇ ਸਾਈਂ ਪਥਾ ਕਰਦੀ ਹੀ । ਰਣ੍ਹ ਬਹੁੈ ਪਹਰ ਦੁਦਦ
ਚੋਈ ਗੇਅਗਾ ਹਾ । ਤਧੈ ਓ ਆਪ੍ਰੂ ਪੀਥੈ ਗੇਅਗਾ ਹਾ ਤੇ ਛਲਲੀ ਗੀ
ਬੀ ਪਲੇਯਾਈ ਗੇਅਗਾ ਹਾ । ਬਰਾਟਾ ਕੁਕਡਿਧਾਂ ਮਾਨਿਆਂ (ਮਕਾਂ) ਹਿਧਾਂ, ਬੀ
ਕੁਨ ਮਧਿਆਂਦਾ ?

“ਅਮਮਾਂ, ਰੁਣੀ ਨਈਂ ਪਕਾਨੀ ਅਜਜ ?” ਛਲਲੀ ਨੇ ਕੁਨਤੋ ਦਿਧਾਂ
ਜਗਾਂ ਚਿਕਕਦੇ ਹੈਂਈ ਗਲਾਧਾ ।

‘ਰਣ੍ਹ ਗੀ ਆਈ ਲੈਨ ਦੇ, ਦੋਏ ਰਲਿਧੈ ਕਿਥ ਬਨਾਈ ਲੈਅਮੋ, ਮੇਰੇ
ਕਥਾ ਤੇ ਤਢੁਨ ਨਈਂ ਹੋਨਦਾ ।’ ਕੁਨਤੋ ਨੇ ਗਲਾਧਾ ਤੇ ਗਿਲਲੁਧੈ ਗੀ
ਦੁਦਦ ਪਲਧਾਨ ਲਗੀ ।

ਇਨੇ ਚਿਰੈ ਚ ਰਣ੍ਹ ਆਈ ਪੁਜਨਾ । ਕੁਨਤੋ ਨੇ ਤਸੀ ਸੋਟਾ ਸ੍ਰੂਧੈ
ਰਕਖੇ ਦੇ, ਅਗਨੈ ਚ ਆਂਦੇ ਦਿਕਖੇਅਗਾ ਤਾਂ ਫਿਕਕਡੁ ਹਾਸੇ ਦਿਧਾਂ ਦੌ ਸ਼ੀਨ
ਜਨ ਲੀਕਰਾਂ ਆਂਦੇ ਸ੍ਰੂਏਂ ਤਥਾ ਪੁਜਨਾ ਵੀਏ ਬ੍ਰੂਡੇ ਚ ਪਲਟੋਏ ਦਾ, ਆਂਦੇ ਸਾਮਨੈ ਆਈ
ਖਡੋਤਾ ਹਾ ।

रणू ने सोटा इफ बक्की टकाया ते कुन्तो दी परेंदी जाइयै बैई गेआ। कुन्तो ने उसी कच्छ औने दा शारा कीता। रणू ओंदी परेंदी जाई बैठा तां कुन्तो ने उसी बोटियै गल लाई लेआ।

‘सारा दिन के करदा रेआ उत्थें भुक्खा भाना ?’

“दुदद पायै गेआ हा मासी, हुन की चोई आनना दुदद ?”

“अज्ज गवै गी बी ते किश नईं पाया। छिल्लुएँ गी चारी आन्दा हा छल्ली नै।”

“अऊं बनाई दिननां गतावा गवै गी।”

“तुगी कुथें जाच ओनी ?”

“ऐ जाच मिगी।” रणू नै उठदे होई गलाया।

पर कुन्तो ने पुच्छेआ :

“सारा दिन के कीता तूं उत्थें ?”

“रणू की बैई गेआ ते गलान लगा, “इत्थुआं जेलै गेआ तां चाचू खैरू मिगी बलगा करदा हा।”

“कैसी ?”

“ओ बलगा करदा हा जे अऊं उत्थें बवां ते ओ सरहैं जा।”

“सरहैं ?” सुनियै कुन्तो दे मनै दी घड़की तेज होई गेई।

“चाचू गला कददा हा जे कोई कम्म ऐ उत्थें। अऊं सारा दिन इक्कला बैठे दे कां डुआरदा रेहा। हुनै आया ऐ चाचू।”

कुन्तो दी देहू पर त्रेली आई गेई।

रणू ए गलाइयै बाहर दुरी गेआ—“चाचू ने गलाया हा जे मासी गी गलाया में नुआडे कन्ने किश गल्ल करनी ऐ।”

“जगतू ?” कुन्तो दे ओठें चा निकलेआ। ओ सोचन लगी जरूर जगतू कच्छ गै गेआ होग खैरू। जगतू ने गै उसी सद्देआ होग। “जगतू—जगतू—जगतू” उदे दमाका च जगतू दा नां फिरन लगा। घड़ी-घड़ी त्रेली पौन लगी। बचरी छल्लो घावरी दी उआं गै बैठी दी रेई। उसी सेई बी नईं होआ जे कुन्तो कुस बेलै बसुर्त होई गेई।

दूए रोज बहुे पहर गै खैरू कुन्तो कच्छ आया ते जगतू कन्ने होई दी इक-इक गल्ल उसी सनाई। ए सुनियै कुन्तो दे छाड छुड़की गे जे अमरू ने जिमीं खूसी तां जगतू उसी मारी देग।

“ए के होई गेआ ?” कुन्तो ने कम्बदी बुआजै च पुच्छेआ।

“अऊं ते सोचै करनां जे उत्थें गेआ गै की ?” खैरू नै पच्छोता दे ढंगे कन्ने गलाया।

“ओ ते होई गेआ। अग्गों के करना ऐ ?”

“चुप गै रीहना लोड़चदा ऐ।”

“नईं, चुप रेइयै किश नईं सौरग। अऊं नां ग्रां आलें अग्गों किश बोली सकनी आं ते नां अमरू गी किश गलाई सकनी आं।”

खैरू के गलांदा ?

“अऊं आपूं जगतू कच्छ जांग।” कुन्तो उट्ठियै बैई गेई। “मेरी गल्ल उसी मन्ननी गै पौग। मेरी गल्ल मन्ननी गै पौग उसी।”

खੈਲ ਕੁਨਤੋ ਦੇ ਸੁਆਂ ਪਾਸੈ ਦਿਖਦਾ ਹੈ ਰੇਈ ਗੇਆ। ਤਸੀ ਉਥੋਂ
ਕੋਈ ਵਿਵਾਜੋਤ ਜਗਦੀ ਸੇਈ ਹੋਆ ਕਰਦੀ ਹੈ।

ਖੈਲ ਓਦੀ ਬਕਖੀ ਦਿਖਦਾ ਰੇਹਾ, ਫੀ ਗਲਾਨ ਲਗਾ, “ਪਰ ਕੋਈ
ਐਸਾ ਉਧਾ ਕੀ ਨਈ ਕੀਤਾ ਜਾ ਜੇ ਅਮਰੁ ਦੇ ਹਥ ਰਾਗੂ ਦੇ ਖੇਤਰੋਂ ਪਰ
ਪੀਨ ਹੈ ਨਈ।”

“ਉਧਾ ?” ਕੁਨਤੋ ਭਰਡਾਈ ਦੀ ਗਲਾਤੀ ਨੇ ਬੋਲੀ, “ਉਧਾ ਕੇ ਹੋਈ
ਸਕਦਾ ਹੈ ? ਪਹਲੇ ਤੇ ਅਮਰੁ ਇਕਕਲਾ ਗੈ ਮਾਨ ਨਈ ਹਾ। ਹੁਨ ਸਾਰਾ
ਗ੍ਰਾਮ ਓਦੇ ਕਨੰ ਹੈ। ਜਗਤੂ ਨੇ ਮੇਰੀ ਜੇਡੀ ਮਣਡੀ ਕਰਾਈ ਹੈ, ਤਨੇ ਮਿਗਿ
ਕੁਸੈ ਥਾਰਾ ਦਾ ਨਿ ਰਖੇਆ। ਮੈਂ ਕੁਸੈ ਗੀ ਸੁਹੰਹ ਦਸ਼ਨੇ ਜੋਗੀ ਨਈ
ਰੇਈ। ਮੇਰੀ ਗਲਲ ਬੀ ਕੁਨ ਸੁਨਗ ਹੁਨ ? ਕੁਨ ਸੁਹੰਹ ਲਾਗ ਮਿਗਿ ?”

“ਤਾਂ ਰਾਗੂ ਦਾ ਕੇ ਬਨਗ ?”

ਖੈਲ ਵੀ ਗਲਲ ਸੁਨਿਯੈ ਪਾਸਾ ਪਰਤਦੇ ਹੋਈ ਕੁਨਤੋ ਨੇ ਇਕ ਨੇਈ ਸੂਂਕ
ਸੁਟ੍ਠੀ ਜੇ ਖੈਲ ਗੀ ਸੇਈ ਹੋਆ ਜੇ ਕੁਨਤੋ ਦੇ ਜੀਵਨੈ ਵੀ ਬਚੀ ਮਤਾ ਚਿਰ
ਬਲਦੀ ਨਈ ਰੇਈ ਸਕਦੀ। ਓਦੀ ਦੇਹ ਕਮਵਨ ਲਗੀ, ਪੇਈ ਹੈ।
ਕਮਵਦੀ ਬੁਆਜੈ ਚ ਤਨੇ ਗਲਾਅਗ, “ਕਿਸ ਬੀ ਹੋਏ, ਅਮਰੁ ਗੀ ਰਾਗੂ ਦੇ
ਖੇਤਰੋਂ ਉਪਰ ਹਥ ਪਾਨੇ ਕਥਾ ਪਹਲੇ, ਮੇਰੀ ਲੋਥਾ ਤੁਧਰਾ ਲੰਗਨਾ ਪੀਗ।
ਮੇਰੀ ਦੇਹ ਚ ਜਿਚਚਰ ਪ੍ਰਾਣ ਨ ਇਨ੍ਹੋਂ ਖੇਤਰੋਂ ਬਕਖੀ ਓ ਨਈ ਦਿਖਖੀ
ਸਕਗ। ਮੇਰੇ ਸਰਨੇ ਪਰੰਤ ਹੈ ਜਗਤੂ ਗੀ ਅਮਰੁ ਕਨੰ ਨਿਭਨੇ ਵੀ
ਲੋਡ ਪੀਗ।”

ਏ ਆਖਦੇ ਆਖਦੇ ਕੁਨਤੋ ਖਟ੍ਟੀ ਪਰ ਤਉਧੀ ਬੇਈ ਗੈਈ।

ਖੈਲ ਗੀ ਕਿਸ ਸੁਜ਼ਾ ਨਈ ਹਾ ਕਰਦਾ ਜੇ ਓ ਕੇ ਗਲਾ ? ਕਿਸ
ਚਿਰੈ ਪਰੰਤ ਜੇਲੈ ਕੁਨਤੋ ਤਾਪੈ ਕਨੰ ਕਮਵਦੀ ਪਰਤਿਯੈ ਲੇਟੀ ਗੈਈ ਤਾਂ ਓ

ਡੋਲ ਗੈ ਬਾਹਰ ਤਠੀ ਆਯਾ।

ਕੁਨਤੋ ਵੀ ਮਰਜੀ ਹੈ ਜੇ ਬਡਲੈ, ਕਿਸੇ ਬੀ ਹਾਲੋਂ ਓ ਖੇਤਰੋਂ ਵੀ ਰਾਂਖੀ
ਕਰਨ ਜਾਗ ਪਰ ਬਡਲੈ ਤਗਰ ਤਾਪ ਇਨਾ ਤੇਜ ਹੋਈ ਗੇਆ ਹਾ ਜੇ ਤਸੀ
ਅਪਨੀ ਸੁਰਤ ਬੀ ਨਈ ਰੇਈ।

ਤਸ ਬੇਲੈ ਤਸੀ ਇਕ ਸੁਖਨਾ ਆਵੈ ਕਰਦਾ ਹਾ।

ਕੁਸੈ ਤਚਿਚਾ ਘ ਰਾ ਗੈ ਚਾਰਦੇ-ਚਾਰਦੇ ਓ ਸ਼ੈਵਨ ਗੈ ਥੂਡੇ ਕਨੰ
ਘਿਰੀ ਗੈਈ ਹੈ। ਤਸੀ ਬਤਾ ਦਾ ਥੌਹ ਨਈ ਰੇਹਾ। ਜਾ ਤਾਂ ਕੇਡੀ ਬਕਖੀ
ਜਾ ? ਕਰੈ ਤਾਂ ਕੇ ? ਵਿਜਲੀ ਸਲਕਾਰੇ ਮਾਰਨ ਲਗੀ ਹੈ ਤੇ ਬਰਖਾ
ਬੀ ਪੀਨ ਲਗੀ ਪੇਈ ਹੈ।

ਗੈ ਤੁਪਦੇ - ਤੁਪਦੇ ਤਸੀ ਸੇਈ ਹੋਆ ਜੇ ਓ ਆਪੁਂ ਹੈ ਗੈ ਹੈ।
ਕਾਹਲੀ ਪੇਈ ਓ ਲਗੀ ਰਮਹਾਨ ਤੇ ਅਪਨੇ ਬਚੜ੍ਹ ਗੀ ਤੁਪਣ। ਤਸੀ
ਇਧਾਂ ਸੇਈ ਹੋਏ ਕਰਦਾ ਹਾ ਜਿਧਾਂ ਹਰ ਪਾਸੈ ਕਈ ਮਿਰਗ ਤਸੀ ਘੂਰੈ
ਕਰਦੇ ਨ।

ਬਰਖਾ ਤੇਜ ਹੋਈ ਗੈਈ। ਨਹੀਂ ਮੱਖਡ ਚਲਨ ਲਗੀ ਪੇ। ਬਿਜਲੀ
ਕਦੇ ਨੁਆਡੇ ਖਵੈ ਤੇ ਕਦੇ ਸਜ਼ੈ ਸਲਕਾਰਾ ਮਾਰੈ; ਓ ਕਦੇ ਤਾਈ
ਦ੍ਰੌਡੈ ਕਦੇ ਤੁਆਇੰ, ਪਰ ਨੁਆਡਾ ਬਚੜ੍ਹ ਤਸੀ ਕੁਦਰੈ ਬੀ ਨਜਰੀ ਨਈ ਹਾ
ਪਵੈ ਕਰਦਾ।

ਬਰਖਾ ਹੋਰ ਬੀ ਤੇਜ ਹੋਈ ਗੈਈ; ਬਿਜਲੀ ਹੋਰ ਬੀ ਮਤੀ ਮਿਲਕਨ
ਲਗੀ ਪੇਈ।

ਚਾਨਚਕ ਬਿਜਲੀ ਇਨ੍ਹੋਂ ਜੋਰੋਂ ਚਮਕੀ ਜੇ ਓਦੀ ਆਤਮਾ ਬੀ
ਕਮਵੀ ਪੇਈ, ਤੇ ਨੁਆਡਿਆਂ ਅਕਖੀਂ ਬੀ ਮਟੋਈ ਗੇਇਆਂ। ਫੀ ਬਲਲੋਂ
ਬਲਲੋਂ ਅਕਖੀਂ ਪਟੋਇਆਂ ਤਾਂ ਤਸ ਨੇ ਦਿਖਖੇਆ, ਇਕ ਮਿਰਗ ਨੁਆਡੇ

बच्छुए दी रत्न कन्ने मुँह लाल करियै ओदे सामनेआ अगडा बै
करदा ऐ ।

“मेरा बच्छू !” ओ करलाई, “मेरा बच्छू !”
फी मिरगे जेल्लै ओदे उपर छाल मारी तां ओदी अरड निकली
गेई ।

‘रणू !’

ओदियां अकबीं उगडियां तां उसने दिक्खेआ जे रणू ओदे सरैहने
खडोता दा ऐ । उसने उसी खिच्चियै छाती कन्ने लाई लैता ।
किन्ना गै चिर उसने उसी छाती कन्ने लाए दे रखेआ, ते फी स्हैवन गै
दुसकन लगी गेई ।

रणू ने ओदी छाती पर मुँह रखेदे गै बल्लें जनेई गलाया
“मासी छल्लो गी सद्दी आनां ?”

“नईं पुत्तरा, मेरे बच्छू, मिगी किश बी होने आला नईं,
तूं धावर नईं !” ए आखदे आखदे ओ उटी खडोती ।

रणू अकबीं टड़ियै ओदे पासै दिक्खन लगा । कुन्तो ने
नां रणू पासै दिक्खेआ, नां गिलुआ बकबी । उसी ए बी
नईं हा सेई जे उसी ताप किन्ना ऐ, ओदे बाल भूतनिएं आला
लेखा खिल्लरे दे न, ओदियां लत्तां त्रम्बडी साईं कम्बा करदियां न ।
उसी किश बी नईं हा सेई ; इने हालै ओ दरवाजै आली बकबी
जान लगी ।

रणू ने पुच्छेआ ;
“मासी कुत्थै चली ?”
“खेतरें गा,” कुन्तो ने दरवाजे दै बाहर पैर टकांदे होई

गलाया —“उत्थें इक मिरग आए दा ऐ, जिस ने मेरे बच्छुआ दी
रत्त पीती ऐ । मैं उसी अपने खेतरें च नईं बड़न देना । मैं उसी
अपने खेतरें च नईं बड़न देना ।”
आखदे - आखदे ओ गैली च आई पुज्जी ।

मेलो अपनी बाड़ी दा झल्ल ठीक करा करदी ही । कुन्तो गी
दिक्खियै जियां उसी कण्डा चुब्बा, “हाए माए, इस हालती च
कुत्थैं जा करनी ?” पर कुन्तो ने ओदी बकबी दिक्खेआ बी नईं;
अगडी बदी गेई । मेलो गी किश रोह आया, “नखरे दिक्खो ते
चाले दिक्खो, जगतू दी दुआल !”

जगतू दी दुआल ! —कुन्तो गी इयां सेई होआ जियां हून ओ
खडोई नईं सकग, ढेई पौग । लतां होर बी मतियां कम्बन
लगियां पर उसने मेलो बकबी दिक्खेआ नईं ।

अम्बै दे रुक्खै कच्छ पुज्जी तां बूबां ढाका पर घड़ा चुक्के दे
ओदी लब्बी ।

“अडिये, ए तुगी के होआ ?”
पर कुन्तो गी जवाब देने दी बेहल नईं ही ।
उससै बेल्लै हिरखू दी बी आई पुज्जी उत्थें ।
“इस हालती च कुत्थैं जा करनी ?”
पर कुन्तो उन्दी बकबी दिक्खे बिना, अगडी बदी गेई ।
“पेरनी—!”
“अपनी पत्त ते गुआई, ग्रां दी बी तुआरन लगी ऐ !”
“सत्त खसमी !”

“जगतू दी दुआल !”

कुन्तो दे कन्ने च ए सीसा घुलदा गेआ पर ओ अर्में बददी गेई । रणू उदे पिच्छें-पिच्छें आवा करदा हा । खेतरे दे बन्ने पर पुजियै ओ खड़ोई गेई । बाऊ कन्ने कुकड़िएं (मब्को) दे उच्चे उच्चे टांडे भूमदे दिकियै ते पत्तरे दी सर - सर सुनियै ओदा लूं - लूं हीला होई गेआ । गैली च सुनी दियां उसी गालियां भुली गेइआं । ओ अर्में बदी ते खेतरे च बड़ियै इक-इक टांडे गी अपने प्यार-भरोचे हत्थे कन्ने ढून लगी ।

रणू दूर खड़ोते दा सब दिखदा जा करदा हा । स्हैबन गै उसी दूरा अमरु आँदा लब्बा । ओ रुखै दी दुई बक्खी होई गेआ, जे अमरु गी नईं लब्बै ।

कुन्तो बतोई दी हिरणी जन, खेतरे च किरा करदी ही । उसी सेई नईं हा होआ करदा जे ओदियां जंगां कम्बा की करदियां न ? इक-इक कुकड़ी (मब्का) च उसी अपनी छाती दा दुदद रचे दा सेई होआ करदा हा । खेतर उसी अपना गै दूआ रूप लब्बा करदे हे ।

अमरु उस्से खेतरे दे कण्डे आइयै खड़ोई गेआ ।

उसने कुन्तो गी आला दित्ता ।

“भगेयाड़ आई गेआ ?” कुन्तो दे मूँथां अमरु दी बुग्राज सुनियै निकली गेआ । ओ बाहर आई ते अमरु पासै इयां दिकवन लगी, जियां उसी पशानदी गै नईं । फी बल्ले जनेई बोली, ‘के गलै ऐ ?’

“तूं ए कनेई नुहार बनाई दी ऐ ?” अमरु ने ग्रीदियां बिच्च

बड़ी दियां अक्खीं, खिल्लरी दियां लिम्बां, ते काला पेदा मुंह दिकियै गलाया । कुन्तो गी किश कूदे नईं दिकियै उसने परतियै पुच्छेआ, ‘तेरी हालत ठीक नईं लबदी, तूं इत्थे के करन आई ?’

“मैं ? मैं इने खेतरे दी राखी करन आई आं । मैं तुगी इने कुकड़िए गी हत्थ नईं लान देना ।”

“पंचैती ने जे किश फैसला कीता ऐ ओ तू कियां नईं मननगी ?”

“पंचैती ने मेरे कशा किश बी नईं पुच्छेआ, मैं इस पंचैती गी नईं मननदी ।”

“तां तुगी ओ ग्रां दा बाहर कहु लांगरा ।”

“कुन्ने नेआ माऊ दा दुदद पीता दा ऐ, जे मिगी ग्रां चा बाहर कहु लाग ?” ए गलांदे होई कुन्तो दियां लत्तां जोरें जोरें कम्बियां; स्हैबन गै उसी दंदकीड़ पेई ते ओ जित्थे खड़ोती दी ही, उत्थे गै बसुर्त होइयै ढेई पेई ।

रणू बूटे पिच्छूं निकली आया । अमरु ने कुन्तो गी अगड़े होइयै चुक्की लैता, ते घरे आली बक्खी दुरी पेआ । रणू ओदे पिच्छे पिच्छे चली पेआ ।

तबी बक्खी जाने आली घास आई तां अमरु उत्थे खड़ोई गेआ । उसी नईं हा सेई जे रणू ओदे पिच्छूं २ आवै करदा ऐ । रणू दे कालजै, जियां धड़कना छोड़ी श्रोड़ेआ; ओदा साह बद होन लगा ।

अमरु पल भर गै उत्थे खड़ोता ते फी ग्रां आली बक्खी जाने आली घासै पर दुरी पेआ । घर गिल्लुऐ रोई-रोई रडद पाए दा हा ।

अमरु ने कुन्तो गी ओदी खट्टा पर लटाया ते वे गी सददन दुरी पेआ ।
गां दे कईं लोक हरानी कन्ते पुच्छा करदे हे, “के होआ, होआ के ?”

उससे रोज संब्रा बेलै कुन्तो गी इक होर सुखना आया :
माया नुआडे कच्छ आई खड़ोती ऐ । ते गला करदी ऐ :

“हन आई बी जा कुन्तो—मेरिबे भैने, छोड़ हन इस स्थापे गी ।
कुत्थूं तगर जरगी ? तू रणू दी इन्नी चिता नईं कर, में नि किश
करी सकी नुआडे गितै, तूं के करगी ? आपूं परमेसर नुआडी रखेआ
करग । तूं इत्थे आ ते दिक्ख तेरा सच्चा साईं बी इत्थे गै, जिसी
तूं कदे दिक्खेआ बी नईं । तुगी बलगा करदा ऐ ओ । हन चिर
नईं ला—आ—आ मेरिए भैने ! आ चिरै पिच्छूं किट्ठे बेहयै अपने
दुख-सुख फरोलचै !”

ए माया दी बुआज कुत्थुआं आवै करदी ऐ ? कुत बक्खी दा आवै
करदी ऐ ? जीवनै दे पारले कडे गेई दी माया अजज उसी की कुआलै
करदी ऐ ? ‘हां—हां अऊं आवै करनी आं बोबो ! मिगी बलगेआं ।
दिक्खे मिगी इक्कली छोड़ी जंदी, हत्थ फगड़ेआं मेरा—मता न्हेरा ऐ
इत्थे, पानी डूंगा ऐ, गल-गल आई पुज्जा ऐ बोबो, मिगी लेई
जायां पार, मिगी लेई जायां पार !”

रणू ते छल्लो ते छल्ली वैवै जने कुन्तो दी खट्टै कोल खड़ोइयै
रोई जा करदे हे । गिलू माऊं दी छाती तोसा करदा हा ।

छल्लो आवै करदी ही :

“अम्मां, में ब्याह नेईं झरनां, अम्मां, तूं असेईं छोड़ियै नईं
जा । में वे कच्छ नईं रौहना अम्मां, में वे कच्छ नईं जाना ।”

पर रणु गी खबरै कियां मनोमन जकीन हा जे मासी हुन
जरूर ओदी अम्मां कच्छ दुरी जाग । इस्सै करियै ओ खेंह गी
सनाई आया हा ते आखी आया हा जे ओ खड़तेआ डाकदारै गी
सददी आनै ।

अमरु दे आखने पर नां वे आई, नां उसने अमरु गी गै
फी औन दित्ता ।

कुन्तो नां छल्लो दियां अरजां सुना करदी ही, नां छल्लो दा
दुस्कना ते नां रणु दे अत्थरूं दिक्ख बं करदी ही । ओ न्हेरे च
माया दा हत्थ फगडियै जीवनै दी गाहनी लंगै करदी ही । माया
दी बलेल नुआडे कन्ते च पवै करदी ही ।

“आ—आ, अडिए इक्कले बेहयै दुख-सुख फरोलचै !”

ए ओ आवै करदी ही ?

‘अऊं आवै करनी आं, अऊं आवै करनी आं बोबो, मिगी
बलगेओ—मिगी बलगेओ !’

ते जेलै खेंह डाकदारै गी लेहयै आया तां कुन्तो गानी लंगी
गेदी ही, ते जीवनै दे पारले बेलै कुसै रुखै हेठ बेहयै अपनी
बोबो गी ओदे रणू दा सुखसांद देआ करदी ही ।

रणू ने दिक्खेप्रा जे माया आंगर गै कुन्तो दी मुण्डी बी लुआर
खाई गेदी ऐ, ते डेल्ले गी परत लग्गी गेदा ऐ । इक खिनै आस्तै
गै ओदे कशा कुन्तो बक्खी दिक्खन होआ, दुए खिन ओ उत्थूं
बाहर उठी आया, ओदा कालजा जियां कुसै बाहर कही लैता
हा । साह लेना बी उसी कठन सेई होआ करदा हा । ओ मता

चिर अंगने च नईं खड़ोई सकेआ, ते स्हैबन गै खेतरें आली बक्खी द्रौड़ी गेआ। ओ कुत्थें जा करदा ऐ? ओ कैसी द्रौड़ी करदा ऐ? उसी आपूं बी पता नईं हा, बस द्रौड़दा गै जा करदा हा। खेतरें कच्छ, रुक्खी हेठ पुजियौ धाड़ करदा पुंछां ढेई पेआ, ते हुसकी २ रोन लगा।

छल्लो ते छल्ली दोऐ माऊ दी छाती पर सिर मारी २ रोयै करदियां हियां।

ते खैरु इआं खड़ोई रेहदा हा, जियां ओदे प्राण निकली गेदे न ते इसलै ओ छाड़ा मित्ती दी मूरत जन ऐ। ओदी अक्खीं दे डेल्ले बी इकै थार खड़ोई गेदे हे। धरत-समान ओदे आस्तै सम्बी गेई हे।

उसी सुरत ओल्लै फिरी जेल्ले गिल्लु ने बी चीकां मारी २ रोना शुरू करी ओड़ेआ। उसी ते अपने दुइदे दी पेई दी ही। खंख ने अगड़े होइयै उसी चुक्की लैता। कुन्तो दी कमीच जेल्ले उसने गिल्लुयै दे हत्था छड़काई तां ओदे दों अथरूं निकली आए। गिल्लुयै गी अपने हत्थें च लेदे ओ ताड़ी लाए दे किन्ना गै चिर कुन्तो गी दिखदा रेआ। की उसने इक बांह उप्पर टकाइयै उसी मूण्डै लाया ते दुए हत्था कन्ने छल्लो गी कुन्तो कशा ठुआलेआ।

छल्लो जोरें जोरें रोआ करदी ही।

खैरु ने गलाया:

“गिल्लु गी बे लेई जा, ते कन्ने सनाई आ जे अम्मां—”
अग्गें खैरु कशा किश खोआ नईं, गला मरडोई गेआ। अक्खियैं चा परित्यैं अत्यंख रुक्खी आए।

छल्लो ने गिल्लु गी घोटियै गलै कन्ने लाई लैता। छल्ली वी ओदे कोल आई खड़ोती।

खैरु बल्ले बल्ले गै पुटदा बगहर उठी आया। ओदे मनै च भयातक बचार उट्ठं करदे हे।

चिखा फकोई ते कुन्तो धूं बनियै माया दे मलें जाई लगी।

रणू बतोए दा गोडे पर सिर रकिखयै अपने बाल पुटदा रेआ।

छल्लो ते छल्ली गी अपरू ने ते नुआड़ी बे ने थम्मी रक्खेआ, ओ अम्मां २ करदियां चिखा पासै हास्मैं करदियां हियां।

मते लोक इस बेल्लै कुन्तो गी वेदोस चतेआ करदे हे।

खैरु बक्खरा गै खड़ोता दा चिखा पासै इयां दिक्खैं करदा हा, जियां अक्खियैं राएं चिखा दी अग्ग ओदी नाड़ी नाड़ी गी जाली देआ करदी ही। ओदी रत्तू च बी जियां उने अग्गी दे लोरें भाँवड़ बाली ओड़े हे। ओदी देहू च इकै बारी केईं भट्टियां तपी पेइयां हियां। उसी सामनै कुन्तो दी चिखा नईं, अपनै जीवनै दी, जीवनै दे गीतें-मावें दी चिखा बलदी सेई होआ करदी ही। उस चिखा दी अग्गी च जीवनै दी सारी आस्था-मानता फकोआ करदी ही। दूए लोक अजे उत्थें बंडे दे हे, ओ बल्ले बल्ले पिछड़ा परतोआ। ओदी टोरा कशा सेई होंदा हा जे कोई मुड़दा ठुरै करदा होए!

ओ धर पुज्जा। उसी नईं हा सेई जे ओ कैसी उत्थै आया ऐ। कोठुआ च पेई दी इक २ चीजै पासै उसने इयां दिक्खेआ

ਜਿਗ੍ਰਾਂ ਓਦਿਧਾਂ ਨਜਰਾਂ ਨਹੀਂ, ਲੋਹੇ ਦਿਧਾਂ ਪਖੀ ਦਿਧਾਂ ਸੀਖਾਂ ਨ, ਤੇ ਓ ਸੀਖਾਂ ਜਿਸ ਚੀਜਾ ਕਨੇ ਛੋਇਧਾਂ ਉਸੀ ਗੈ ਅਗ ਲਮੀ ਜਾਗ। ਇਕ ਪਾਸੇ ਪੇਵੇ ਢੋਲਕੁਆ ਪਰ ਜੇਲੈ ਓਦੀ ਨਜਰ ਪੇਈ ਤਾਂ ਇਧਾਂ ਬਜੋਆ ਜਿਧਾਂ ਸ਼ੈਵਨ ਗੈ ਕੁਸੇ ਓਦਾ ਕਾਲਜਾ ਚੀਰੀ ਟਕਾਯਾ ਏ। ਫੀ ਬੀ ਓ ਤਾਂ ਗੈ ਖੜੋਤਾ ਰੇਗਾ। ਮਨ ਕੀਤਾ ਜੇ ਅਗਡਾ ਹੋਇਧੈ ਢੋਲਕੁਆ ਗੀ ਫਾਝੀ ਟਕਾ, ਪਰ ਕਿਸ਼ ਚਿਰੋਂ ਪਰੈਨਤ ਓ ਬਾਹਰ ਉਠੀ ਆਯਾ।

ਗੈਲੀ ਚਾ ਨਿਕਲਿਧੈ ਜੇਲੈ ਓ ਖੇਤਰੋਂ ਆਲੀ ਬਕਖੀ ਆਯਾ ਤਾਂ ਉਸਨੇ ਗ੍ਰਾਂ ਆਲੇ ਪਾਸੇ ਦਿਕਖੇਆ। ਤ੍ਰੀਨੈਂ ਪਛ੍ਰੋਂ ਪਰ ਨਜਰਾਂ ਕਿਨਾ ਚਿਰ ਫਿਰਦਿਧਾਂ ਰੇਹਿਧਾਂ, ਸੁਕਕਮ ਸੁਕਿਧਾਂ ਨਜਰਾਂ, ਜਿਨ੍ਦੇ ਚ ਕੋਈ ਬਚਾਰ ਨਹੀਂ, ਕਾਈ ਭਾਵ ਨਹੀਂ ਹਾ, ਜੇਡਿਧਾਂ ਅਜਜ ਜੀਵਨੇ ਦੇ ਰਸਤੇ ਚ ਭੁਲੀ ਗੇਦਿਧਾਂ ਹਿਧਾਂ, ਇਹਦਾ ਤੁਹਾਰ ਤੇ ਤੁਹਾਦਾ ਇਹਦ ਕਿਰੀ-ਵਿਰੀ ਓਂ ਨਜਰਾਂ ਪਰਤੀਹਿਧਾਂ ਤਾਂ ਓ ਅਪਨੇ ਖੇਤਰੋਂ ਆਲੀ ਬਕਖੀ ਦੁਰੀ ਪੇਗਾ।

ਓਦੇ ਖੇਤਰੋਂ ਦਿਧਾਂ ਕੁਕਕਡਿਧਾਂ ਲਕਕ ਲਕਕ ਆਈ ਪੁਜੀ ਦਿਧਾਂ ਹਿਧਾਂ। ਓ ਜੇਲੈ ਉਨ੍ਦੇ ਕੋਲ ਪੁਜਾ ਤਾਂ ਬਾਊ ਦੇ ਇਕ ਤੇਜ ਫਣੂਕ ਕਨੇ ਕੁਕਕਡਿਧੇ ਦੇ ਪਤਰ 'ਸਰ, ਸਰ' ਕਰੀ ਪੇ, ਪਰ ਤੱਦੀ ਬੁਆਜੈ ਦਾ ਕਿਸ਼ ਬੀ ਅਸਰ ਖੈਲੁ ਤੁਪਰ ਨਹੀਂ ਹੋਆ। ਓ ਭੁਲੀ ਗੇਦਾ ਹਾ ਜੇ ਕੁਕਕਡਿਧਾਂ ਸਸਤ ਹੋਈ ੨ ਓਦੇ ਹਥੋਂ ਦੇ ਗੁਣਾ ਗਾ ਕਰਦਿਧਾਂ ਨ। ਉਨੇ ਓਦੀ ਰਤ, ਓਦਾ ਪਰਸਾ ਪੀਤਾ ਦਾ ਏ। ਖੈਲੁ ਗੀ ਇਸ ਬੇਲੈ ਕਿਸ਼ ਬੀ ਚੇਤਾ ਨਹੀਂ ਹਾ ਰੇਹਦਾ। ਉਸਨੇ ਅਪਨੀ ਕੁਕਕਡਿਧੇ ਗੀ ਪਨਛਾਨੇਆ ਬੀ ਨਹੀਂ, ਅਗੜੇ ਗੈ ਪੁਟੀ, ਕੁਕਕਡਿਧੇ ਫੀ, "ਸਰ ਸਰ" ਕੀਤਾ, ਜਿਧਾਂ ਉਸੀ ਕੁਆਲੈ ਕਰਦਿਧਾਂ ਹੋਨ, ਪਰ ਖੈਲੁ ਦੇ ਕਨੇਂ ਕਿਸ਼ ਬੀ ਨਹੀਂ ਸੁਨੇਗਾ।

ਓ ਸ਼ੁਈ ਪਾਸੈ ਦੁਰੀ ਪੇਦਾ ਹਾ। ਜਗਤੁ ਦਾ ਸਾਥੀ ਬਨਨ। ਤੁਨਿਧਾਂ ਕਥਾ ਬਦਲਾ ਲੈਨੇ ਦਾ ਹੋਰ ਕੋਈ ਤਰੀਕਾ ਨਹੀਂ ਹਾ।

ਜਗਤੁ ਨੇ ਗ੍ਰਾਂ ਗੈ ਚ ਪੇਵੇ ਇਕ ਬਣੈ ਸਾਰੇ ਬਣੈ ਗੀ ਲੱਤੈ ਦੀ ਮਾਰੀ ਤੇ ਉਸੀ ਸਰੈ ਆਲੀ ਪੇਠਾ ਸੁਟੀ ਅੰਡੇਆ। ਬਣਾ ਰੁਲਕਦਾ ੨ ਤੇ ਅਪਨੇ ਕਨੇ ਤੁਹੈ ਜਨੇਹ ਕੇਇਧੇ ਬਣੈ ਗੀ ਰਲਕਾਂਦਾ-ਰਲਕਾਂਦਾ, ਗੱਡਗੱਦ ਪਾਂਦਾ ਜੇਲੈ ਸਰੈ ਚ ਪੇਗਾ ਤਾਂ "ਛਾਂ" ਦੀ ਜੋਰਦਾਰ ਬੁਆਜ ਸਾਰੈ ਲੈਹੜੀ ਚ ਗੂੰਜੀ ਗੇਈ। ਸਾਰੇ ਸਰੈ ਦਾ ਪਾਨੀ ਹਲਲੀ ਖੜੋਤਾ। ਨਿਕਿਧਾਂ ਨਿਕਿਧਾਂ ਲੈਹੜਾਂ ਸਰੈ ਤੁਪਰ ਇਧਾਂ ਤਰਨ ਲਗਿਧਾਂ ਜਿਧਾਂ ਸਰੈ ਦੇ ਹੇਠ ਕੋਈ ਸ਼ੇਸ਼ਨਾਗ ਬਿਮ੍ਬਲੀ ਖੜੋਤਾ ਹੋਏ।

ਜਗਤੁ ਦੇ ਮਨੈ ਚ ਸਚ੍ਚੇ ਗੈ ਇਕ ਸ਼ੇਸ਼ਨਾਗ ਬਿਮ੍ਬਲੀ ਖੜੋਤਾ ਹਾ। ਖੈਲੁ ਨੇ ਪਲ ਭਰ ਪਹਲੇ ਗੈ ਉਸੀ ਸੁਨਾਯਾ ਹਾ ਜੇ ਕੁਨਤੀ ਦਾ ਕਾਲ ਹੋਈ ਗੇਆ ਏ। ਤੇ ਕਾਲ ਇਸ ਕਰੀ ਹੋਆ ਜੇ ਉਸਨੇ ਗੈ ਓਦੀ ਬੇਡੀ ਚ ਬਣੈ ਪਾਏ ਨ। ਏ ਸੁਨਦੇ ਗੈ ਜਗਤੁ ਗੀ ਸੇਈ ਹੋਗਾ ਜੇ ਉਸੀ ਕੁਸੈ ਸਘੈ ਸਿਧੀ ਲੈਤਾ ਏ। ਕਿਨਾ ਚਿਰ ਓ ਸਿਲ-ਬਣੈ ਸਾਈ ਤਾਂ ਗੈ ਬੈਠੇ ਦਾ ਰੇਗਾ। ਚਿਰੈ ਪਰੈਨਤ ਖੈਲੁ ਨੇ ਸੂਣੇ ਦਾ ਲਹਾਯਾ ਤਾਂ ਸੁਰਤ ਫਿਰੀ; ਫੀ ਬੀ ਉਸੀ ਥੀਹ ਨਹੀਂ ਹਾ ਰੇਹਦਾ ਜੇ ਕੇ ਕਰੈ, ਖੁਲੁ ਕਨੇਂ ਕੇ ਗਲਾ? ਤੁਡਿਧੈ ਕੋਠੁਧੈ ਦੇ ਬਾਹਰ ਆਈ ਗੇਗਾ ਤੇ ਬਿਨਾ ਕਿਸ਼ ਸੋਚੇ ਗੈ ਬਣੈ ਗੀ ਪੈਰਾ ਕਨੇਂ ਸਰੈ ਚ ਸੁਟੀ ਬੈਠਾ।

ਸਰੈ ਦੇ ਛੁਆਲੇ ਕਥਾ ਓਦੇ ਮਨੈਚ ਮਤੀ ਛੁਆਲੀ ਆਈ ਦੀ ਹੀ। ਪਰਤਿਧੈ ਕੋਠੁਧੈ ਚ ਜਾਇਧੈ ਓ ਅਪਨੀ ਭਰੀ ਦੀ ਬਦੂਕ ਲੇਇਧੈ ਬਾਹਰ ਉਠੀ ਆਯਾ, ਤੇ ਸਰੈ ਤੁਪਰ ਤੁਡੈ ਕਰਦੀ ਇਕ ਮਰਗਾਈ ਗੀ ਨਿਧਾਨਾ ਬਨਾਈ

बैठा। दिखदे २ बाऊ च तरै करदी मरगाई शरें कन्ने घायल होई दी, फड़ करदी सरै च आई पेई। किश चिर पानिया उप्पर फगें गी फड़-फड़ाइयै, खीर मरगाई हुट्टी गेई, ते ठंडी होइयै पानिया उप्पर तरन लगी।

खैरू दूर खड़ोइयै सबै किश दिक्खै करदा हा। खीर अगडे होइयै उसने जगतू दे मूण्डे उप्पर हत्थ रक्खियै गलाया, “भाई जी, मरगाइयां कैसी मारदे ओ? मिगी देओ बंदूक, अऊं अमरू गी मरगाई आंगू तड़फदा दिक्खना चाहन्ना।”

जगतू ने उस्से गम्भीरता कन्ने खैरू पासै दिक्खेआ। खैरू बी हून ओ खैरू नईं हा रेहदा, ओदिएं अक्खियैं चा बी जिअां ढारे निकला करदे हे। जगतू ने खैरू दा हत्थ अपने हत्थै च लेई लैता ते बोलेआ :

“तूं मेरे कन्ने रौह ते सारी दूनिया गी मरगाइयें आला लेखा तड़फा, पर अमरू दी होनी ते मेरे हत्था बरतोग, उसी घायल होए दा, तड़फदा अऊं दिक्खना चाहन्ना। ओदे स्वासें दो तंद ते मेरे हत्था त्रुट्टग।”

खैरू दिए अक्खियैं च खबरै की अत्थरूं किरन लगे? जगतू ने उसी थापी दिती, “तूं नह क रोआ करनां, बतोई ते नि गेआ! मिगी दिक्ख, उस्से कुप्पड़ा साईं खड़ोई रेहदां।”

सहैबन गै खैरू जगतू दे पैरें ढेई पेआ, अत्थरूं बगांदा ते चुसकदा गलान लगा :

“भाई, जी, मिगी हुन अपने कच्छ गै रक्खो, मैं परतियै

मनेह नईं जाना, खबरै ए छुआली कुत्थुआ आई ऐ मेरे मनै च? मनेह जाइयै मिगी सेई हुन्दा ऐ जे अऊं मनुक्ख गै नईं। मिगी अपनी सरनी लेई लौ। थुप्राडे कन्ने रेहयै गै अऊं दुनियां कशा बदला लेई सकना, जिसने मिगी म्हेशां, मनुक्ख नईं, डूम गै समझेआ। हून अऊं डूम नईं रौहना चाहन्दा।”

जगतू ने खैरू गी पैरें चा ठुप्रालियै गलै कन्ने लाई लैता।

“खैरू तूं मेरा भ्रा ए। मेरे कन्ने रीह, ए दुनिया जेडी अज्ज तुगी डूम आखदी ऐ, कल्ल तेरे पैरें ढौग। मिगी खुशी ऐ जे तूं मेरा साथी बनी जाएं। अजें कल्ल गै कटडे दा इक शाह मेरे हत्था सुगंपूरी पुज्जी गेआ। तूं बी कदें कन्ने हुन्दा——! पर खैर अगरैं सेई। मेरे हत्था हून अमरू बची नईं सकदा। खरा ऐ, जे तूं हून ग्रां दुरी जाएं।”

“नईं, नईं भाई जी मैं हुन ग्रां नईं जाना।”

“नईं खैरू, तूं हून दुरी जा। जे तूं इथूं नईं गेआ तां सबै तेरे उप्पर शक्क करगन जे तूएं अमरू गी मारेआ ऐ, जां तूं जगतूं कन्ने रले दा ए। सबै ए समझी जांगन।”

खैरू हून परतियै मनेह नईं हा जाना चाहदा पर जगतू जे किश गला करदा हा। ओ बी सच हा।

किन्ने गै चिर दोऐं चुपचाप खड़ोते रेह। ते जेल्लै खैरू उत्थुआं दुरैआ तां इन्ने चिरें च जगतू ने इक होर मरगाई सरै च सुट्टी लेदी ही।



खैरू अजें सरूईं कोला मता दूर नईं हा पुज्जा। चुचडिएं दे चिच्चें

बिच्चे बिछो दी धासे पर टुरे करदा हा। आसै-पासै चीड़े दे बिरलै २ खेल अम्बरै गी द्याए करदे हे। चानचक्क उसी अजीव जन बुआजां सुनचन लगियां। इक थार खडोइयै उसने कनटह लाई। उसी सेई होआ जे मते सारे बूटे अले सपाई, टुरदे २ कच्छ गे आई पुजजे दे म। खैरु ने दिक्खेग्रा धास थोड़ी गे ढूर अग्मे जाइयै मुड़ी जन्दी ऐ ते ओने आले, मोड़े दे मती ढूर नईं हे। खैरु गी किसै बी गलै दा डर नईं हा पर खबरै की बी कैदा भै लगा करदा हा उसी? बूचड़ियै च इक नकेबला जनेहा थार दिक्खियै, झट गे ओदे च जाई दडेग्या ते ओने आले गी बलगन लगा, “भला कुन न ए?”

बूटे दियां बुआजां मतियां कोल आँदियां गेइयां। स्हैवन गे उनें बूचड़ियै दे सामने गे जित्थे खैरु छपियै बैठा दा हा, ओ लोक आइयै खडोई गे। खैरु दे मनै दी धड़की जियां बदन लगी पेई, कालजा गिट्ठे गी ओन लगा। सपाइयै दे बूट ते गिट्ठे दे उपर पलेटी दियां खाकी पट्टियां साफ लब्बा करदियां हियां। ए दिक्खियै खैरु मता हरान होआ जे सपाइयै कन्ने इक जनानी बी ऐ ही।

सबने कशा पहलै जनानी दी गै बुआज सुनची :

“अग्मे हुन तुस आपूं दुरी जाओ। इस्से धासा पर टुरदे २ तुस सरै दे कडै, जगतू दे घर पुजजी जागेओ। जगतू इस बेलने घर गै होना ऐ। अऊं तुसें गी इत्थे गै बलगनी आं।”

बुआज सरो दी ही, पर खैरु गी के पता हा जे सरो कुन ऐ। उसी सेई होई गेआ जे इस जनानी ने जगतू दी मुखबरी कीती ऐ, ते जगतू हुन बची नईं सकदा। सपाई मते न ते ओ इकला। खैरु ने

इदर उदर दिक्खेआ जे किसै चाली ओ बूचड़ियै चा बाहर निकली सकै पर पिच्छे कोई रस्ता नईं हा, ते अग्मे धासै उपर जनानी लब्बै करदी ही। सपाई अग्मे दुरी गेदे हे।

हून ओ के करै? दुनियां कशा बदला लैने आस्ती उसने जे किश सोचेआ हा ओ बी नईं होई सकग। जगतू जरूर पगडोई जाग। ए कैसी माया ए? अज्जे तगर उसने जे किश बी करना चाहेआ, ओ नईं करी सकेआ। ओदे भाग गै नेह न। ओदा जरम दुनिया च इस्सी करियै होआ ए जे ओ किश नईं करी सकै। पर नईं, ओ इन्ना ते करी सकदा ऐ, जे हून बूचड़ियै चा बाहर निकलियै इस जनानी दी चूड़ी घोटी ओड़ै, जिसने जगतू गी फगड़ानै लाया ऐ।

सरो हून उस्सी थार धासै उपर बेई गेदी ही, खैरु दे सामनै, पर ओ खैरु गी नईं ही दिक्खी सकदी, खैरु उसी भलेआं दिक्खा करदा हा।

सरो गी दिक्खियै खैरु दियां अक्खीं टडोई गेदियां हियां; उसी इयां सेई होआ करदा हा जियां ओदे सामनै माया आइयै बेई गेई दी होए! उऐ अक्खीं, उऐ नक्क—सारी तुआर गै उऐ नेई! खैरु गी विश्वास नईं हा आवा करदा जे ओ जागा करदा ऐ। केइं चारी उसने अक्खीं मलियां पर ओ मुत्ते दा होए तां विज्जै बी। ओ ते सच्चे-मुच्चे बूचड़ियै च छपियै बैठा दा हा, ते सामनै बूचड़ियै दे बाहर सरो ही, माया दा दूआ रूप!

भाएं खैरु ने माया गी सारी जिदगी च इकै बारी दिक्खेग्रा हा, पर ओ दिक्खना पत्थरै दी मूरत घड़ने दे बरोबर हा। कुन केड़ी घड़ी

ही, केड़ा पल हा, जिस बेल्वे उसने माया गी दिक्खेआ हा ! सामनै बैठी दी सरो उसी माया से ई होआ करदी ही । इकके फर्क हा माया गी जदूं उसने दिक्खेआ हा तां ओदियें अक्खीं च उसने प्यारा दी लो दिक्खी ही, ते सरो दिए अक्खीं च ओ घुणा दे डोरे दिक्खे करदा हा ।

ए केड़ी माया ऐ ?

ओ मता चिर इने सोचें च गै नेदा रेआ ते सरो रस्ते च, धासे पर, गोड़े उप्पर सिर टकाइयै बैठी रेई । स्हैवन गै ओदे मुआं दा रंग बदलोआ ते ओ धावरियै उट्टी खड़ोती । खैरु समझी नेआ जे सपाई परती आए न । ओदा मन कीता जे ओ बूचडियै दे बाहर निकली आवै ते किसे चाली जगतू गी छड़काई लै; फिरी सोच आई जे जिने सपाइयै दा जगतू किश नई बगड़ी सकेआ, उन्दा ओ के करी सकग ?

हून सरो वी उसी नई हो लब्बा करदी, अगड़ी पिछड़ी होई रेई दी ही ओ । पर सपाइयै दे भारे बूटें दिया बुआजां उसी सुनचन लगी पेइया हियां । बुआजां कच्च पुजियां तां हत्थकड़िए दे खनकने दी बुआज वी कन्नें च पौन लगी । खैरु गी कलजा थम्मना पेई गेआ । उत्थै बौना कठन होई गेआ ओदे आस्तै । “परमेश्वरा ! ए के करने लाया ऐ तू ! ” खैरु गी तरेली जन आई गेई । सपाई हून बिलकुल कोल आई पुजजे दे हे, पर खैरु दा मन इन्ना काहला पेई गेदा हा जे इक खिना आस्तै वी ओ हून उत्थै नई हा वेई सकदा । ओ उट्टन लगा, पर उसै बेलै उद्दरा सरो दी बुआज कन्नें च पेई,

“जगतू, दिक्खी लैता मिगी तड़फाइयै ? के मिलेआ तुगी !”

सरो दी बुआज बड़ी उच्ची ही । पर ओदी बुआजै च बेदना, रोह, खिज ते किश नमोशी बी से ई होदी ही ।

उद्दरा जगतू दे हस्सने दी बुआज आई, उसने नेशा गड़ाका मारेआ जे बूचडियां वी कम्बी पेइयां । गड़ाका मारियै उसने गलाया, “तू खरा गै कीता सरो, मिगी फगड़ाई ओडेआ । जिन्ने तुगी मेरे कशा दूर कीता हा, ओ आपूं गै इन्नी दूर दुरी गेई ऐ जे मेरे आस्तै उत्थै पुजजनै लैई इक सूली आला रस्ता गै रेई गेदा ऐ । तूं खरा गै कीता ।”

जगतू दी बुआज भारी, ठहरी दी ते ढेई पौने आने रुखै दी बुआजै आंगर सख्त ते उच्ची ही ।

खिनै परैन्त सपाइयै दे बूटें ते हत्थकडियै दे खनकने दियां बुआजां बल्लें-बल्लें दूर होन लगियां, दूर — मती दूर ते फी भलेआ जाड़े दे कलापे च ढुब्बी गेइयां ।



खैरु बल्लें-बल्लें बूचडियै दे बाहर आया । ओदी जान अदी रेई गेदी ही जियां पूरे जीवने दा पैण्डा करियै कुतुआं आवै करदा होए । गै पुटुनी कठन होई गेदी ही । उसने सामनै दिक्खेआ जे मोड़े दे कच्च गै धासै उप्पर जित्थै पैरें दे नशान बने दे हे, सरो पुट्टे मूँह लेटी दी ऐ; ओ अगड़ा होआ सरो बल्लें बल्लें हुसकै करदी ही ।

ਖੌਲ੍ਹ ਗਲ੍ਹੀ ਦਾ ਕਿਸ਼ ਕਿਸ਼ ਅਂਦਾਜਾ ਲਾਨ ਲਗੀ ਪੇਵਾ ਹਾ। ਮਤਾ ਚਿਰ, ਸਰੋ ਦੇ ਪੈਰੋਂ ਕੋਲ ਆਇਥੈ ਓਂ ਖੜੋਤਾ ਰੇਆ, ਤੇ ਸਰੋ ਤਾਂ ਸੈ ਰਸਤੇ ਚ ਪੁਛੇ ਸੁਹੁਂ ਲੇਟੀ ਵੀ ਛੁਕਦੀ ਰੇਈ। ਜੇਲੈਂ ਸਰੋ ਨੇ ਲੌਹ ਗੀ ਦਿਕਖੇਆ ਤਾਂ ਤੌਲੇ ਤੌਲੇ ਤੁਟਿਥੈ ਖੜੋਈ ਗੇਈ।

ਲੌਹ ਨੇ ਗਲਾਧਾ :

“ਮਾੜਾ ਕੀਤਾ ਤੁਸੋਂ, ਜਗਤੂ ਗੀ ਫਗਡਾਇਥੈ।”

ਸਰੋ ਨੇ ਸੁਣ੍ਡੀ ਚੁਕਿਕਥੈ ਓਦੀ ਬਕਥੀ ਦਿਕਖੇਆ। ਲੌਹ ਗੀ ਹੁਨ ਓਂ ਭਲੇਅਂ ਗੈ ਸਾਇੰ ਲਭੀ। ਸਰੋ ਤਸੀ ਪਛਾਨਾ ਨਈਂ ਹੀ ਕਰਦੀ, ਓਂ ਨਾਂ ਤਸ ਗ੍ਰਾਂ ਦਾ ਹਾ, ਨਾਂ ਜਗਤੂ ਦਾ ਸਾਥੀ, ਫੀ ਏ ਕੁਨ ਏ?

“ਤੂਂ ਕੁਨ ਏ?”

“ਮੇਂ ਅਜ਼ਜ ਗੈ ਜਗਤੂ ਦਾ ਸਾਥੀ ਬਨਨ ਆਯਾ ਹਾ।”

‘ਫੀ?’

“ਪਰਤੀ ਜਾ ਕਰਨਾਂ?”

“ਕੁਤੱਥੇ?”

“ਸਨੇਹ—”

“ਓਂ ਤੁਤੱਥੇ ਗੈ ਰੌਹਦੀ ਹੀ ?

“ਹਾਂ।”

“ਕੁਨ ਹੀ ਓਂ ?”

ਲੌਹ ਨੇ ਤਸੀ ਸੁਣ੍ਡਾ ਦਾ ਸਾਰੀ ਗਲਲ ਸੁਨਾਈ। ਸਾਧਾ ਵੇ ਪੂਰੇ ਹੋਨੇ ਯਮਾਂ ਲੇਇਥੈ ਕੁਨਤੋਂ ਦਾ ਕਾਲ ਹੋਨੇ ਤਗਰ। ਦੋਏ ਜਾਡੇ ਵੇ ਅਨਵੰਦ ਜਾਈ ਵੇਈ ਗੇ। ਕਹਾਨੀ ਬੂਟੋਂ ਤੇ ਹਤਥਕਡਿਏ ਵੀ ਵੁਆਜੋਂ ਪਰ ਆਈ ਸੁਕਕੀ। ਤਸ ਬੇਲੈਂ ਸੰਜ ਘਰੋਆ ਕਰਦੀ ਹੀ ਜੇਲੈਂ ਕਹਾਨੀ ਸੁਕਕੀ।

ਕਹਾਨੀ ਸੁਕਕੀ ਤਾਂ ਦੌਨੋਂ ਦਿਕਖੇਆ ਜੇ ਦੌਨੋਂ ਦਿਵਾਂ ਅਕਥੀ ਗ੍ਰਥਹਾਏਂ ਕਨੰ ਭਰੋਚੀ ਦਿਵਾਂ ਹਿਧਾਂ।

“ਹਾਧ ਸਾਧੇ” ਸਰੋ ਨੇ ਇਕ ਲਸਮਾ ਸਾਹ ਭਰੇਆ—“ਮੇਂ ਕੇ ਕਰੀ ਆਡੇਆ ਏ !”

ਫੀ ਕਿਸ਼ ਚਿਰੈ ਪਰੈਨਤ ਲੌਹ ਤੁਟੇਆ, “ਅੱਠ ਚਲਨਾਂ।” ਗੈ ਪੁਟਿਥੈ ਓਂ ਆਗਡਾ ਹੋਆ। ਪਰ ਉਸਨੇ ਦਿਕਖੇਆ ਜੇ ਸਰੋ ਅੱਜੋਂ ਤੁਥੈਂ ਗੈ ਬੈਠੀ ਵੀ ਏ। ਸਰੋ ਨੇ ਲੌਹ ਗੀ ਰਕਦੇ ਦਿਕਖੇਆ ਤਾਂ ਤਸੀ ਓਂ ਗਲਲ ਪੁਚਛਣੇ ਵੀ ਆਹ ਪੇਈ ਗੈ ਗੇਈ

“ਮਿਗੀ ਤੂਂ ਅਪਨੇ ਸਰਵਥੈ ਚ ਕਿਸ਼ ਨਈਂ ਦਸ਼ੇਆ।”

“ਤਾਂ ਇਕ ਹੋਰ ਕਾਹਨੀ ਸੁਨਾਨੀ ਪੈਂਗ।”

‘ਤਾਂ ਕੇ ਏ—’

“ਤੂਂ ਘਰ ਨਈਂ ਜਾਨਾ ?”

“ਘਰ—” ਸਰੋ ਨੇ ਜੋਰੋਂ ਗਡਾਕਾ ਸਾਰੇਆ। ਲੌਹ ਦਾ ਮਨ ਕਸ਼ਬੀ ਗੇਆ ਓਂ ਗਡਾਕਾ ਸੁਨਿਥੈ। ਸਰੋ ਬੋਲੀ “ਮੇਰਾ ਘਰ ਕੁਤੱਥੈ ਏ? ਮੇਰਾ ਸਾਂਈ ਗੈ ਅਜ਼ਜ ਗੇਆ ਤਠੀ। ਓਂ ਜੇਡੀ ਬਤਾ ਗੇਆ, ਤਦੇ ਸ਼ਾ ਪਹਲੇ ਮਿਗੀ ਤਸ ਬਤਾ ਜਾਨਾ ਲੋਡਚਦਾ ਹਾ। ਤੂਂ ਸਾਰੀ ਗਲਲ ਸੁਨਾਇਥੈ ਸੀਕਨੀ ਦਾ ਡਾਹ ਸੁਕਾਈ ਤੁਡੇਆ ਮੇਰੇ ਮਨਾ ਚਾ। ਤੂਂ ਕੋਈ ਭਲਾ ਮਨੁਕ ਲਗਨਾਂ, ਅਪਨੇ ਸਰਵਥੈ ਚ ਕਿਸ਼ ਦਸ਼ੀ ਜਾਨਾ ਹਾ।”

ਲੌਹ ਹੁਨ ਗੈ ਆਗਡੀ ਨਈਂ ਪੁਟ੍ਠੀ ਸਕੇਆ। ਪਲ ਭਰ ਕਿਸ਼ ਸੋਚਿਥੈ ਓਂ ਪਰਤਿਥੈ ਸਰੋ ਵੇ ਕਚਛ ਆਇਥੈ ਵੇਈ ਗੇਆ।

ਨਹੋਰੇ ਵੇ ਪਰਦੇ ਗਾਡੇ ਹੋਨ ਲਗੇ ਹੈ।

ਲੌਹ ਨੇ ਆਖੇਆ :

‘माया दी नुआर बिल्कुल तेरे आंगर ही । इयै नेआ नक्क,
मत्था, अक्खीं, ओठ । में उसी इकै बारी दिक्केआ हा जदू—’

अग्ने उसने सारी गल्ल सुनाई । सुनांदे-सुनांदे ओंदे अत्थरुं
बगन लगी पे । उस न्हेरे च दीनें गी इक दूए दी नुआर नईं ही
लब्बै करदी, पर सरो गी सेई होई गेआ जे हँरु रोआ करदा ऐ ।
ओंदी बुआज अत्थरुं कन्ने परसिजली गेदी ही ।

सौल चुप होआ तां स्हैबन गी सरो ने हथ बदाई, ओदा मुंह
तोसदे होई, ओंदे बगा करदे अत्थरुं अपनी आंगली दे मलैम
पोटे कन्ने पूंजी उडे । सौल गी पहले बारी कुसै जनानी नै
इस चाली हथ लाया हा । उसी बजेआ जियां माया गे
ओंदे अत्थरुं पूंजा करदी ऐ । चानचक्क ओ सरो दे लैरे च ढेईं
पेआ । सरो दी देह किश संगोई । ओंदे पैर सौल दे अत्थरुं
कन्ने धनोन लगी पे ।

दीनें चा कोई बी किश बुआसरेआ नईं ।
किश चिरै परंतु सौल उटुआ, ते बल्ले २ न्हेरे च तलोफां
मारदा, स्क्खें चा बाहर आई पुज्जा ते मनेह आले पासै दुरी
पेआ ।

सरो उस्सै चाली सिल पथर बनी दी उत्थें बैठी रेई । न्हरें
उसी चौम्ने पासेआ घेरे दा हा ।

●
“रण् में व्याह नईं करना ।”
“की ?”

“मेरा मन नईं करदा हून व्याह करने गी । अम्मां बिना
मिगी किश भै जन लगदा रौहदा ऐ हर बेल्लै ।”

“अऊं तेरे कच्छ बैठा रौहनां हर बेल्लै, की भै कोदे कशा
ओंदा ऐ तुगी ?” ए आखदे २ रण् रोए करदी छल्लो दी पिंडी
उप्पर हत्थ फेरन लगा । छल्लो होर बी डुसकन लगी । उसी इया
रोंदे दिक्खी छल्लो बी रोन लगी ।

छल्लो ने अक्खीं मलदे होई परतियै गलाया;

“अम्मां असें ओनें गी इकला छोड़ी गेई । जदूं आऊं
अमरु चाचूं कन्ने एस घर आई ही अदूं अम्मां खट्टै पर पेई
गेई ही । ओ नईं ही चांहदी जे मेरा व्याह होऐ । इस्सै करी हून
में व्याह नइं करना ।

“जे मेरी अम्मां नईं मरदी तां कुन्तो मासी ते अमरु चाचूं दा
झगड़ा बी नईं हा होना —पर हून मिगी बी किश समझ नईं औंदी
जे आऊं के करां ?”

इदर अमरु दे घर, कोठुआ दे अन्दर बैठे दे ऐ त्रैवै ज्यारो
अपने भागें गी रोआ करदे हे, उदर बाड़िया अमरु ते नुप्राड़ी बै
अपने भागें गी सुआरने च लगो दे हे ।

अमरु गला करदा हा,

“स्हाड़े पहरा दे लोक किश बी नईं गलाडन । नानकू ते लुड़ी
दीनें मिगी गलाया ऐ जे कुन्तो ते एस घरा । नकली गी गेदी ही;
ओ मरी गेई तां के होआ? स्हाड़े भा दी ओ बहले गै मरी गेदी ही ।
व्याह जुड़ाए दा हून होई गे जाना लोड़चदा ।”

“जनानियां बी इयी गला करदिया हियां। पर नत्थु ते भागू दा
के होग ? ओ बी बहु कमेटे न !” अमरू दी बे, अमरू कशा मती
सोगी ही।

“मिगी बी उन्दी गै चिता ऐ !”

“सुनेआ जे कोई नमी पंचैत बना करदी ऐ ?”

“हाँ, हुन सरकार पंचैता दे चना करा करदी ऐ। बहु शहरा
दा कोई बाबू आए दा ऐ उऐ सब्बै किश करा करदा ऐ। नथं ए
होआ जे नत्थु ते भागू गी लम्बडार बना करदे न !”

“खबरै कुत्थुआं आर्ह गेई ऐ ए नमी लूत ! नास पुट्ठा करदा
ऐ सारे ग्रां दा !”

“सुनेआ बड़ा सयाना ऐ !”

“सयाना ऐ स्वाह। लोके गी चाइदा ऐ जे सारे रलियै, उसी
कहु लान इत्युआं !”

‘तूं कहु लाने दी गजा करनीं, परसों उसने पंचैती दे नमें
चना बी कराई ओड़ने न !’

“पर होआ करदा व्याह थोड़ा रकाई ओड़ग ओ ? पंचैते व्याह
कन्ने के लैना-देना ?”

“पहले ते कदें नेई गल नई ही होई, पर अज्ज होर गै समां
ऐ। किश पता नेई किस मौके पर के नथं होई जा ?”

“तूं तलेडू गै। अग्गे इक बक्खर हत्था मुश्राया, हुत ए बी
गल्ल तोड़ नई पुजाई तां अस कुतों दे नई रौहगे। थलोड़ परोहता
गी भेजी ओड़ जे ओ जानी लेइयै आई जान !”

गल्ल करदे करदे वे ने दिक्खेआ जे रण् छल्लो ते छल्ली त्रैवै

जने गैली चा जा करदे न।

“ए छल्लो कुत्थे दुरी पेई ऐ माइयें पेदी ? जा सद उसी !”

वे दी रौली सुनियै अमरू गैली गी नस्सेआ।

छल्लो, रण् ते छल्ली त्रैवै वे दा रौला सुनियै रुकी गे हे, पर
अमरू गी इस चाली नस्सियै आैदे दिक्खी, छल्लो दे मनै च खबरै
के आई जे ओ खेतरें आली बक्खी, ए गलांदी २ नस्सी जे “में व्याह
नई करना, में व्याह नई करना !”

अमरू नै उसी नसदे दिक्खेआ तां ओ होर बी तेज द्रौड़न लगा।
रण् ते छल्ली हरान होइयै दीनें गी दिखदे रेह।

छल्लो शडापियां मारदी खेतरें दे बन्ने उप्पर आई पुज्जी; अमरू
बी मनासे गो थम्मे दे ओदे कोल जाई पुज्जा हा।

तुआई तबी आली पेठा दा उस्सै बेलै खैरू बी उत्थें आई पुज्जा।
छल्लो ने उसी दिक्खियै जोरें अरड़ मारियै उसी आला दित्ता।
खैरू गी गल्ल समझदे चिर नई लग्मा। ओ हाम्बियै अगड़ा आया
ते छल्लो गी उसने यम्मी लैता। छल्लो रणाकी होई दी गला दी
ही, “में व्याह नई करना, में व्याह नई करना !”

अमरू नै छल्लो गी बांह दा फगड़ियै, जोरें अपने बल्ल खिच्चना
लाया। खैरू अपने आपै च नई रेई सकेआ। उसने अमरू दी
बांह खिच्चियै अपना हत्थ मारेआ ते ओदे हत्था चा छल्लो दी
बांह छड़काई लेई।

“खैरू !” अमरू जोरें करलाया, पर दूए खिन खैरू दिए अक्खीं
पासै दिक्खियै ओ सैहमी जन गेआ। खैरू दियां अक्खीं इयां लाल

होई दिया हियां जियां हून रत बारा गी बगन लगी पौग।

“इस चिड़ी जिन्दी जिन्दा गी इयो नईं तड़का अमरु !” खैरु ने जोरें आखेआ। पर अमरु सोचन लगी पेदा हा जे इस डूमै गी ओदे अपगें बोलने दी आह किया पेई ? उसने कच्छ गै पेदा इक बट्ठा हारा बट्ठा चुक्की लैता। खैरु छलो गी फडे दे गै दना गेडा होआ, पर इन्हें चिरै च बट्ठा ओदे सिरै गी आई बज्जा। छलो “चाचू” अखियै करलाई ते इक पासै होई गेई। खैरु ने जोरें “आह” कीता ते उत्थें गै ढेई पेआ। अमरु ने हास्मियै छलोळ गी चोटी दा फडेआ, ते त्रीडिदा उसी घर आली बखली लेई चुलेगा।

खैरु उत्थें गै बसुर्त होए दा पेदा रेआ। ओदा सिर फटी गेदा हा। खेतरै दी मित्ती किन्ना गै चिर ओदी रत्त पीदी रेई।

जेल्ले खैरु होशी च आया तां उसने दिक्खेआ जे महेश ओदे कच्छ बैठा दा ऐ।

“के गल्ल होई ही भाई ?”

“किश बी नईं !” खैरु कशा बोलन बी नईं हा होआ दा।

“ए सिर कियां फटेआ ?”

खैरु चुप रेआ। महेश समझी गेआ, जे ओदे कशा बोलन नईं होआ करदा। उसने खैरु गी ठुआलदे होई गलाया, “चलो घर छोड़ी आमां।”

घर आइयै खैरु मता चिर लेटेआ रेआ, ते महेश ओदे कच्छ बैठा रेआ। ओडे चिरें खैरु बोलेआ :

“भाई जी, तुस, पढे लिखे दे ओ, मिगी बी किसै रस्तै लाई जाओ !”

‘नईं के गल्ल होई ऐ ?’

खैरु चुप रेआ। महेश ने परतियै गलाया :

“थुआडा सिर कियां फटेआ ?”

“अमरु ने बट्टे दी मारी ही !”

“अमरु कुन ?”

“छलो दा बब्ब।”

“छलो— — ?”

“हां भाई जी छलो, कुन्तो दी धी—पर तुसें गी किश बी सेई नईं। कुन्तो माया दी मित्तरनी ही—।” खैरु बल्ले ए सारी कत्थ सनान लगा, जियां उसने सरो गी मुनाई ही, पर हून ओदे अत्थवै नईं बगे।

कुन्तो दे सरबंधै च सुनदे २ केर्द वारी महेश गी सरकंडे उब्बरी जन्दे। उसी इयां सेई होआ जियां पराना सब किश बदली देने आस्तै खीरली बल कुन्तो ने दित्ती ऐ।

खैरु ने जगतु ते सरो दी कहानी बी मुनाई, रण ते छलो दे आलडै दी गल्ल बी कीती। महेश ने जेल्लै सुनेग्गा जे अमरु अपने बट्टे छलो दा व्याह इक बुँदू कन्ने करे करदा ऐ, ते इस्सी गल्लै परा अमरु ने खैरु गी बट्टे दी मारियै ओदा सिर फाड़ी ओडेआ ऐ, ओ रोए कूनी कम्बी पेआ।

खौर खैरु ने गलाया :

“ਮਾਈ ਜੀ, ਮੇਂ ਤੁਸੇਂ ਗੀ ਗਲਾਧਾ ਹਾ ਜੇ ਆਪਰਾਜੀ ਪੇਈ ਜਾਗ; ਤੁਸ ਮਨੇ ਨਈ। ਤੁਸ ਛੜਾ ਮਿਗੀ ਏ ਦਸ਼ੋ ਜੇ ਅੜਾਂ ਕੁਤ ਬਕਖੀ ਜਾ ਹੂਨ ?”

ਮਹੇਸ਼ ਕਸ਼ਾ ਹੂਨ ਬੌਨ ਨਈ ਹੋਆ, ਉਸਨੇ ਆਖੇਗਾ :

“ਖੈਲ੍ਹ ਤੁਂ ਘਾਬਰ ਨਈ। ਤੁਂ ਆਪੂਂ ਗੇ ਰਾਹ ਪੇਈ ਜਾਨਾ ਏ। ਪਹਲੀ ਗਲ ਮੇਂ ਏ ਕਰਨੀ ਏ ਜੇ ਛਲਲੋ ਵਾ ਬਧਾਹ ਨਈ ਹੋਨ ਦੇਨਾ। ਰਣ੍ਹ ਵੀ ਜਮੀਨ ਨੈਈ ਖਸੋਨਾ ਦੇਂਗ, ਜਿਦੀ ਪੁਜ਼ਤ ਲੇਈ ਕੁਨਤੀ ਵੀ ਬਲ ਲਗੀ ਏ। ਤਸੀਂ ਪਚੈਤਾ ਦੇ ਚਨਾਵ ਪਰਸ਼ਾਂ ਹੋਨੇ ਹੋ, ਓਹ ਹੂਨ ਕਲ ਹੋਂਗਨ, ਤੇ ਕਲ ਗੇ, ਸਥਾਨ ਥਮਾਂ ਪਹਲੇ ਰਣ੍ਹ ਵੀ ਜਮੀਨ ਤੇ ਅਮਰੂ ਦੇ ਬਧਾਹ ਵਾ ਫੈਸਲਾ ਹੋਗ।”

ਮਹੇਸ਼ ਏ ਆਖਦੇ ੨ ਵਾਹਰ ਤਠੀ ਗੇਗਾ,

“ਖੈਲ੍ਹ, ਹੂਨ ਏ ਨਰਥ ਤੇ ਬੇਨਾਇਆਂ ਨਈ ਹੋਈ ਸਕਦਿਆਂ।”

ਮਹੇਸ਼ ਤੁਰੀ ਗੇਗਾ ਤੇ ਖੈਲ੍ਹ ਵਰਵਾਜੈ ਆਲੇ ਪਾਸੇ ਦਿਲਵਾ ਰੇਈ ਗੇਗਾ। ਮਿਲ ਹਿਲਲਾ ਕਰਦੇ ਹੋ, ਤੇ ਇਕ ਲੋ ਜਨ ਓਦੇ ਅਨੰਦਰ ਨਹੁੰ ਚ ਫੈਲਨੇ ਵਾ ਜਤਨ ਕਰੈ ਕਰਦੀ ਹੀ।

ਮਹੇਸ਼ ਨੇ ਜੇ ਕਿਸ਼ ਗਲਾਧਾ ਹਾ ਓ ਪੂਰਾ ਬੀ ਕਹੀ ਦਸ਼ੇਗਾ।

ਸਾਰੇ ਗ੍ਰਾਂ ਚ ਵੀਂ ਬਕਿਖੇਂ ਲੋਕ ਵੱਡੀਂ ਹੋ ਹੈ। ਮਹੇਸ਼ ਆਲੀ ਬਕਖੀ ਹੈ ਨਤ੍ਥੂ, ਭਾਗੂ ਠੀਕਰ, ਸਾਰੇ ਆਰਿਧੇ ਭਗਤ, ਮੇਘ ਢੂਮ, ਤੇ ਚਮਧਾਰ। ਢ੍ਹੀਂ ਬਕਖੀ ਹੈ ਲੁਣੀ, ਲੂਡੀ, ਅਮਰੂ ਤੇ ਕਿਸ਼ ਠਕਕਰ। ਏ ਸਥ, ਮਹੇਸ਼ ਦਿਏ ਗਲਿੰ ਵਾ ਰੋਹ ਬੁਜਦੇ ਹੋ। ਏ ਨਈ ਹੈ ਚਾਂਹਦੇ ਜੇ ਪਰਾਨਾ ਰਾਜ ਬਦਲੋਏ, ਤੇ ਨਸੀਂ ਸਰਕਾਰ ਬਨੈ। ਏ ਸਥ ਇਸ ਗਲੈਂ ਦੇ ਹਕਕਾ ਚ ਬੀ ਨਈ ਹੈ ਜੇ ਗ੍ਰਾਂ ਦੇ ਨੀਚ ਲੋਕ ਸੁਚੱਚੋਂ ਵਾ ਮਕਾਬਲਾ ਕਰਨ। ਅੰਜਾਦੀ ਵਾ ਨਾਂ ਸੁਨਿਧੈ ਏ ਚਿਢੇ ਹੋ, ਪਰ ਏ ਸਥ ਗਿਨਤਰੀ ਚ ਬੜੇ ਘਟ੍ਹੇ ਹੋ। ਇਸ ਕਹਿਯੈ ਤੁਨੀਂ ਪੇਸ਼

ਨਈ ਹੋਈ। ਕਮੇਟੇ ਚਨੋਏ, ਤਾਂ ਖੈਲ੍ਹ ਵਾ ਨਾਂ ਬੀ ਉਨ੍ਦੇ ਚ ਆਈ ਗੇਆ।

ਚਨਾਂ ਹੋਨਦੇ ਗੇ ਮਹੇਸ਼ ਨੇ ਰਣ੍ਹ ਵੀ ਜਮੀਨ ਵੀ ਗਲਲ ਚੁਕੀ। ਖੈਲ੍ਹ ਗੁਗ੍ਰਾਈ ਬਨੇਗਾ, ਉਸਨੇ ਸਹਿ ਖਾਇਧੈ ਕੁਨਤੀ ਤੇ ਜਗਤ੍ਰ ਵੀ ਸਾਰੀ ਗਲਲ ਸੁਨਾਈ ਤੇ ਦਸ਼ੇਗਾ ਜੇ ਓਹ ਕਿਨ੍ਨੀ ਬੇਦੋਸ ਹੈ। ਲੋਕ ਗਲਲ ਸੁਨਿਧੈ ਹਰਾਨ ਰੇਈ ਹੈ। ਖੀਰ ਫੈਸਲਾ ਹੋਗਾ ਜੇ ਰਣ੍ਹ ਵੀ ਜਮੀਨ ਵਾ ਰਾਖਾ ਖੈਲ੍ਹ ਬਨੈ, ਤੇ ਵਾ ਤੇ ਬਹੁੰ ਤੇ ਕੁਨਤੀ ਗੀ ਜਿਸਨੇ ਤਡਕਾਈ ੨ ਮਾਰੇਗਾ ਏ ਓਦਾ ਬਧਾਹ ਛਲਲੋ ਬਢ੍ਹੇ ਨਈ ਹੋਈ ਸਕਦਾ।

ਸਾਰੇ ਗ੍ਰਾਂ ਚ ਇਸ ਨਿਆਂ ਵੀ ਰੌਲੀ ਪੇਈ ਗੇਈ।

ਅਮਰੂ ਵੀ ਕੇ ਦਿਧਾਂ ਗਲੀਂ ਕੋਈ ਨਈ ਹਾ ਸੁਨਾ ਕਰਦਾ।

ਮਹੇਸ਼ ਬੀ ਰਣ੍ਹ ਗੀ ਕਨੇ ਲੇਈ ਅਜ਼ਜ ਬਢ੍ਹੇ ਸ਼ਹਰ ਜਾ ਕਰਦਾ ਹਾ। ਉਸਨੇ ਰਣ੍ਹ ਗੀ ਮਤਾ ਸੋਗਾ-ਸਥਾਨਾ ਦਿਕਿਖੈ ਉਸੀ ਪਡਾਨਾ ਲਾਧਾ ਹਾ। ਉਸਨੇ ਸੋਚੇਗਾ ਜੇ ਰਣ੍ਹ ਪਛੀ ਗੇਗਾ ਤਾਂ ਬਡਾ ਹੋਈ ਇਸ ਗ੍ਰਾਂ ਗੀ ਸੁਧਾਰੀ ਦੇਗ। ਖੈਲ੍ਹ ਨੇ ਬੀ ਮਹੇਸ਼ ਵੀ ਇਸ ਗਲੈਂ ਵੀ ਸਰਾਹਨਾ ਕੀਤੀ ਹੀ ਤੇ ਨਿਸ਼ਚਾ ਕੀਤਾ ਹਾ ਜੇ ਰਣ੍ਹ ਵੀ ਜਮੀਨੇ ਚਾ ਜਿਨ੍ਨੀ ਬੀ ਪੁਜ਼ਤ ਉਸੀ ਥੋਗ ਓਦੇ ਪੈਸੇ ਬਹੁੰ ਓ ਰਣ੍ਹ ਵੀ ਪਡਾਈ ਆਸਟੀ ਮੇਜੀ ਦੇਗਾ ਕਰਗ।

ਤਵੀ ਦੇ ਰਾਹਾਂ ਖੈਲ੍ਹ, ਛਲਲੋ ਤੇ ਛਲਲੀ ਰਣ੍ਹ ਗੀ ਬਰਦਾਨ ਆਏ ਦੇ ਹੋ। ਬੇਡੀ ਪਾਰਾ ਪਰਤੋਨੇ ਗੇ ਆਲੀ ਹੀ।

ਛਲਲੀ ਗਲਾ ਕਰਦੀ ਹੀ,

“ਰਣ੍ਹ ਤੁਂ ਪਿਛੀ ਓਗਾ ਤਾਂ ਦੋਏ ਪਰਤਿਧੈ ਇਕ ਸ਼ੀਲ ਨੇਗਾ ਆਲੜਾ ਬਨਾਗੇ।

ਮਹੇਸ਼ ਖੈਲ੍ਹ ਗੀ ਆਖਾ ਕਰਦਾ ਹਾ,

“ਖੈਲ੍ਹ, ਗੁਲਾਮੀ ਵਾ ਹਾਇ ਤੇ ਬਸ਼ਕ ਹੂਨ ਨਈ ਰੇਹਦਾ, ਪਰ ਸ਼ਹਾਡੇ ਭਾਗੋ

दी बेड़ी अजें बी पत्तना कशा मती दूर ऐ । इस पत्तना पर पुजने
ग्रास्तै अजें बी असें की मता किश करता ऐ ।”

खेलू महेश दी गल्ल सुनदा-समझदा होई बी रणू प्रासौ दिखदा
जा करदा हा । रणू दे नवश-पतरे च अजि उसी परतक्ष माया दी
मूरत लब्बा करदी ही, ते कन्मे च इक बलेल जन पवै करदी ही,
“रणू मेरी मानत ही, ते अपनी मानत तुगी छोड़िये होर
कुसगी सौंपदी ?”

बेड़ी कण्ठ लगी गेई । लीह ने हामिंधो रणू गी गलौ कन्ने लाई
लैता । ओदिया अक्खी उकोड़क भरोई गेइयां । महेश ते रणू बेड़ी च
जाई दीठे । छल्लो ते छल्ली दोऐ रणकियां होई गेइयां । रण दा
मन करन लगी वेदा हा जे ओ शाल मासियाँ उत्तरी जा ते परतियौ
ग्रां दुरी जा पर बेड़ी ने पक्कन छोड़ि ओड़े दा हा ।

हून ढवके उप्पर इक बक्खी बेठा दी अमरु, गिलु गी! मूण्डे
लाए दे ए सब किश दिखही करदा हा, पर ओदी अक्खीं च, ओदे मूए
पर कोई भाव नई हा । सेह होंदा हा जे ओ बट्टे विच बैठे दे बट्टा
गे बनी गेदा ऐ ।

०००

वेद राही



वेद राही डोगरी साहित्यकारों की नई पौध के कथाकारों और नाटककारों की पहली पांत में एक विशिष्ट व अन्यतम स्थान रखता है। आरम्भ में उद्दृ तथा हिन्दी को अभिव्यक्ति का साधन बनाया। तत्पश्तात् डोगरी साहित्य के आकाश पर एक आलोचक के रूप में प्रकट हुआ, और “जगदिया जोतां” लिखकर समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा किया। फिर “धारें दे अथरूं” नाटक और “काले हृथ” कहानी-संग्रह प्रस्तुत करके डोगरी कहानीकार तथा नाटककार के रूप में सामने आकर अपनो साहित्यिक तथा महानता का लोहा मनवा लिया और डोगरी उपन्यासकारिता के परती खण्ड में उसका पहला उपन्यास “हाड़, बेड़ी ते पत्तन” देख कर मुझे विस्मय भी हुआ, और हर्षानुभव भी।

—ठाकुर पुंछी

हाड़, बेड़ी ते पत्तन

(डोगरी उपन्यास)

वेद राही

डोगरी संस्था जम्मू